2024-25

अर्जिक्या

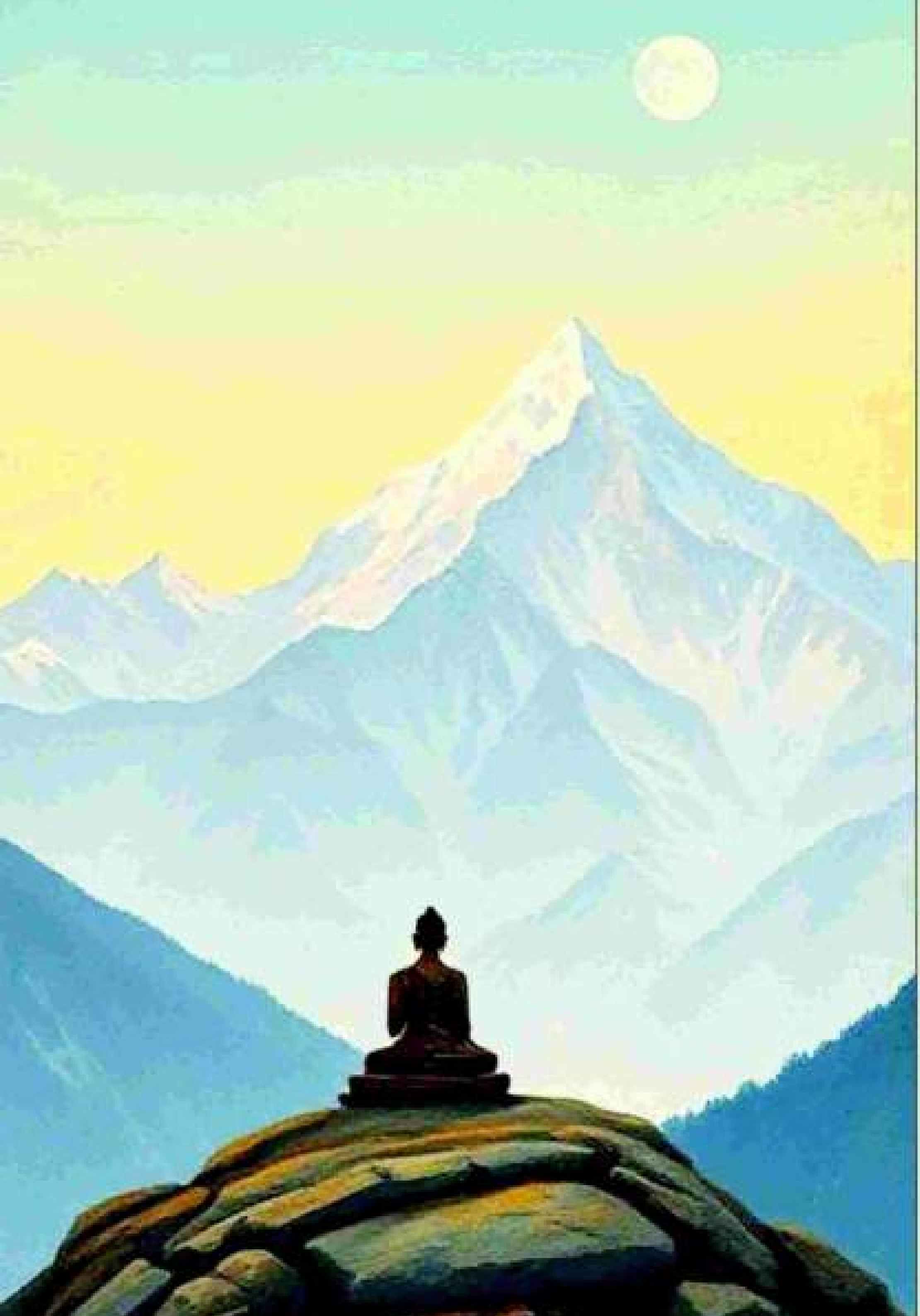

Estd. 2015

राजकीय महाविद्यालय पनारसा

"Peace comes from within.
Do not seek it without."
— The Buddha

Editorial Board (Teachers)

Left to right :

Prof. Krishan Lal (Pahari), Dr. Dimple Jamta (Commerce), Dr. Ursem Lata (Principal), Dr. Charu Ahluwalia (Chief Editor), Prof. Anita (Hindi)

Editorial Board (Students)

Yashpal
Hindi Section

Monika Thakur
English Section

Laxmi
Comm. Section

Madhu
Pahari Section

Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)

Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla - 171001
Tel. : 0177-2656621 Fax : 0177-2811347
E-mail : dhe-sml-hp@gov.in

MESSAGE

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine .

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.

(Dr. Amarjeet K. Sharma)

संदेश

प्रिय विद्यार्थियो,

किसी भी शिक्षण संस्थान की पत्रिका विद्यार्थियों के लिए एक अवसर लेकर आती है, जिससे वे अपने विचारों, अनुभवों और रचनात्मकता को व्यक्त कर सकते हैं। इसी तरह हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'अर्जिक्या' न केवल विद्यार्थियों को लेखन के क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका देती है, बल्कि उन्हें अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच भी प्रदान करती है। इस बार की पत्रिका में विद्यार्थियों ने न केवल लेखन में अपनी प्रतिभा दिखाई है, बल्कि चित्रकला, फोटोग्राफी और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में भी अपना योगदान दिया है। पत्रिका में शामिल तस्वीरें और कलाकृतियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को प्रदर्शित करती हैं।

आज हम इतिहास के एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं जब दुनिया कई प्रकार के बदलावों से गुज़र रही हैऔर जिसकी गति पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई है ! तकनीकी बदलावों ने जहाँ समाज और संस्कृति को प्रभावित किया है वहीं दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में चल रहे आंतरिक संघर्षों, आतंकवाद और बड़े देशों के बीच युद्ध के खतरे ने शांति के रास्ते में रुकावटें खड़ी कर दी हैं और साथ ही इस पृथ्वी के भविष्य के सामने भी कई सवाल खड़े हो गए हैं। ऐसे उथल–पुथल भरे समय में युवाओं की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण हो सकती है, यह कहने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन यदि युवा किन्हीं अन्य कारणों से इस ओर से विमुख हो जाएं, तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए जीवन के कई संकट खड़े हो जाएंगे।

ऐसे में सजग नागरिकों के रूप में शिक्षण संस्थाओं में पढ़ और पढ़ा रहे नागरिकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। इसी संकट को ध्यान में रखते हुए इस बार महाविद्यालय के संपादक मंडल ने दो–तीन तरह के खतरों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका के लिए आलेखों की थीम तैयार की है। इसके लिए मैं मुख्य संपादक डॉ. चारु अहलूवालिया, हिंदी, पहाड़ी, वाणिज्य विभाग के प्राध्यापक संपादक क्रमशः प्रो. अनिता, प्रो. कृष्ण लाल, डॉ. डिम्पल जामटा को हार्दिक बधाई देती हूँ कि इन्होंने जहाँ एक ओर युद्धों के चलते होने वाले विनाश , लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं पर मँडरा रहे खतरों के लिए विद्यार्थियों को लेखन हेतु प्रोत्साहित किया वहीं विद्यार्थियों के स्वरचित लेखों को इस पत्रिका का हिस्सा बनाने की पहल की और पत्रिका को एक अलग रूप दिलाने का प्रयत्न किया।

पत्रिका में शामिल सभी विद्यार्थियों को बधाई दूँगी कि उन्होंने प्राध्यापकों की देख रेख में कई डाक्यूमेंट्री फिल्म्स जो युद्ध की पृष्ठभूमि पर थीं, देखीं और कुछ ऐसी ही पुस्तकें पढ़ीं और उनपर समीक्षाएं लिखीं! इसी के साथ मैं उन विद्यार्थियों को भी बधाई दूँगी, जिन्होंने लोकसाहित्य की विभिन विधाओं को एकत्र किया और उन्हें संकलित करके पत्रिका का हिस्सा बनाया! उन विद्यार्थियों को भी बधाई, जिन्होंने रचनात्मक लेखन द्वारा पत्रिका को समृद्ध किया है!

उन कलाकार विद्यार्थियों को भी बधाई जिन्होंने फोटोग्राफी और पेंटिंग कार्यशालाओं में तैयार की गई अपनी कला.तियों से पत्रिका को और समृद्ध किया है !

आप सभी की प्रतिबद्धता और समर्पण से पत्रिका इसी तरह नए–नए आयाम स्थापित करे! इसी उम्मीद सहित आप सभी को इस नए अंक के लिए हार्दिक बधाई!

शुभकामनाएँ।

डॉ उरसैम लता
प्राचार्या

Editorial

Dear Students,

It gives me immense pleasure to present to you the latest edition of our college magazine "Arjikya" - a platform that celebrates the creative spirit, intellectual energy, and expressive brilliance of our student community. This year, we have chosen a theme that is as powerful as it is poignant: War.

War- a word that conjures images of conflict, courage, sacrifice, and sorrow. It is a theme that has shaped civilizations, rewritten histories, and inspired some of the most enduring works of literature and art. Yet, beyond the battlefield, war also rages within - in minds, in hearts, in societies struggling for peace, justice, and identity. In dedicating this edition to the theme of war, we invite you to explore not only the historical and political dimensions, but also the psychological, emotional, and metaphorical wars that define the human experience.

As the future thinkers, writers, and leaders of tomorrow, your voice matters. Let your pen be your weapon-not to destroy, but to awaken, question, and heal. Through poetry, stories, essays, articles, art, and reflections, we urge you to express what this theme means to you. Whether it is the retelling of untold stories of war heroes, the agony of displacement, the resilience of hope, or the inner battles we fight each day - your contribution can become a beacon of awareness and empathy.

Remember, creativity is not bound by format or language; it thrives on honesty, originality, and courage. So write boldly, think deeply, and create passionately. Let this edition be a testament to your voice and vision.
We look forward to your powerful expressions and thought-provoking contributions.

Warm regards

Dr. Charu Ahluwalia
Editor-in Chief

Statement about ownership and other particulars of 'Arjikiya' Required under rule-8 of press and registration of Books Act.
Form -(IV)
(see Rule-8)

Place of publication	:	Panarsa
Periodicity of its publication	:	Annual
Owner's Name	:	Dr. Ursem Lata
Address	:	Principal Govt. College, Panarsa Distt. Mandi (H.P.)
Name of Printing press.	:	Himtaru Prakashan Samiti, Kullu, H.P.
Nationality	:	Indian
Address	:	Near Main Post-Office, Dhalpur, Kullu.
Chief Editor's Name	:	Dr. Charu Ahluwalia (Asst. Prof. English)
Nationality.	:	Indian
Address	:	Govt. College, Panarsa Distt. Mandi, H.P.

I, Ursem Lata hereby declare that particulars given above are true and correct to best of my knowledge and belief.

Sd/-
Ursem Lata
Principal Govt.College Panarsa,
Distt Mandi, Himachal Pradesh.

The views expressed by the writers are their own and the Editorial board does not necessarily agree to them.
Editor-in-Chief

Contents :

Sl. No.	Content	Page No.
01.	Annual Report	08-15
02.	Hindi Section	19-49
03.	English Section	52-66
04.	Commerce Section	69-75
05.	Pahari Section	79-88

CSCA Message

राजकीय महाविद्यालय पनारसा की मैं निशा, सी ए सी ए सचिव, अर्जीकिया की सफल संपादन के लिए आप सबको बधाई देती हूं। अब मैं आपके साथ अपने महाविद्यालय का अनुभव साझा करने जा रही हूं ।कॉलेज जीवन हर किसी के जीवन का एक खास पड़ाव होता है और मेरे लिए यह अनुभव राजकीय महाविद्यालय पनारसा में पढ़ते हुए बेहद प्रेरणादायक और सीखों से भरा रहा । यह सिर्फ शिक्षा का एक केंद्र नहीं बल्कि मेरे व्यक्तित्व को निखारने की प्रयोगशाला भी है ।जब मैंने राजकीय महाविद्यालय पनारसा में प्रवेश लिया तो मन में नई जगह और नए लोगों को लेकर घबराहट थी लेकिन जैसे–जैसे समय बीता यह जगह मेरे दिल में बहुत करीब आ गई। यहां के शिक्षकों ने न केवल विषय की गहराई से समझ दिलाई बल्कि जीवन के मूल्य से भी परिचित कराया ।कॉलेज में मैंने सीखा की मेहनत,अनुशासन और लगन से कोई भी लक्ष्य दूर नहीं । यहां की लाइब्रेरी में बिताए गए शांत समय और दोस्तों के साथ बिताए गए मस्ती भरे पल मेरे जीवन भर साथ रहेंगे ।राजकीय महाविद्यालय पनारसा में पढ़ाई के साथ–साथ मैंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया जिससे आत्मविश्वास बढ़ा। यहां के शिक्षकों का मार्गदर्शन और सहयोग हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहा। एक बात यह रही कि यहां की पढ़ाई केवल किताबों तक सीमित नहीं है। यह हमें सोचने, समझने और अपने विचारों को व्यक्त करने की आजादी भी देती है। मैं आज यह बात पूरे विश्वास से कह सकती हूं कि कॉलेज ने मुझे एक नई सोच दी एक दृष्टिकोण दिया और जीवन मे आगे बढ़ने का आत्मबल भी प्रदान किया। मैं सभी छात्रों से कहना चाहूंगी कि कॉलेज के हर पल को गंभीरता और खुशी के साथ जीना चाहिए। यह समय कभी फिर वापस नहीं आता है। मेहनत करें, सीखते रहे और अपने सपनों को साकार करने की दिशा में लगातार बढ़ते रहे।

निशा
सचिव, सीएससीए

As joint secretary of CSCA Government College Panarsa, I Puja Thakur, first year student, congratulate Arjikya on its successful completion. Our college is a small family headed by Dr. Ursem Lata. The college has successfully carried out many activities under the leadership of our Principal. I want along with the study of the curriculum, other activities should continue as well so that the students can also improve their studies. This is a unique initiative of our college. Also, I want that the college should be shifted to the new building, because in this small college campus other activities along with studies, cannot be carried out properly. Therefore, we should be shifted to new building as soon as possible for smooth conduct of activities. Along with classes other subjects should also be introduced in the college so that the students can have more options.

Pooja Thakur
Joint Secretary, CSCA

वार्षिक प्रतिवेदन : 2024—25

परिचय : राजकीय महाविद्यालय पनारसा हिमाचल प्रदेश के जिला मण्डी की सनोर घाटी के एक छोटे से गाँव पनारसा में स्थित है। व्यास नदी के दाहिने छोर पर स्थित, प्राकृतिक सौन्दर्य से घिरे इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2015 में की गयी थी। तब से यह महाविद्यालय छात्रों को निरंतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है। यह महाविद्यालय सरदार पटेल विश्वविद्यालय, मंडी से संबद्ध है जो छात्रों को कला स्नातक एवं वाणिज्य स्नातक में पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

किसी भी संगठन की सफलता उसके कर्मचारियों पर निर्भर करती है। महाविद्यालय में ईमानदार और मेहनती कर्मचारियों का गौरवशाली इतिहास रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय में प्राचार्य के अतिरिक्त 7 शिक्षक और 7 गैर-शिक्षक कर्मचारी शामिल हैं जिसमे वाणिज्य संकाय में 1 व कला संकाय के 6 प्राध्यापकों समेत कुल 7 प्राध्यापक हैं जबकि गैर-शिक्षक कर्मचारयों में 1 अधीक्षक ग्रेड-2, 1 पुस्तकालय सहायक, 1 वरिष्ठ सहायक, 4 सेवादार व 1 सफाई कर्मचारी सेवारत हैं । वाणिज्य संकाय में शिक्षक का 1 पद जबकि गैर-शिक्षक कर्मचारियों में 2 लिपिक एवं 1 सेवादार का पद रिक्त है।

स्थानान्तरण, सेवानिवृत्ति एवं पदोन्नति : स्थानान्तरण कर्मचारियों की सहज प्रक्रिया मानी जाती है। इसके साथ सेवानिवृति कर्मचारी के जीवन का कठोर यथार्थ है। इस महाविद्यालय में सत्र 2024-25 में स्थानांतरित हुए कर्मचारियों का ब्यौरा निम्न है :-

स्थानान्तरण : श्रीमती पदमा देवी (कनिष्ठ सहायक), श्रीमती नैना देवी (सेवादार)

आगमन : कोई नहीं

सेवानिवृत्ति : कोई नहीं

पदोन्नति : कोई नहीं

नामांकन : शैक्षणिक सत्र 2024-25 में विद्यार्थियों की कुल संख्या 342 रही जिसमें लड़कों के मुकाबले लड़कियों की संख्या अधिक है । लड़कियों की कुल संख्या 218 है, जबकि लड़कों की कुल संख्या 124 है। महाविद्यालय में विभिन्न सकायों के अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या क्रमवद्ध रूप से निम्नलिखित प्रकार से वर्णित है :-

Enrolment of Students BA/ B.Com for the session 2024-25

Class		SC			ST			OBC			IRDP			General			Total		
		Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total	Boys	Girls	Total
B.A.	1st Year	11	20	31	0	01	01	01	03	04	0	08	08	30	41	71	42	73	115
	2nd Year	06	17	23	0	01	01	0	01	01	0	02	02	31	56	87	37	77	114
	3rd Year	06	14	20	0	0	0	0	01	01	0	01	01	22	38	60	28	54	82
	Total	23	51	74	0	02	02	01	05	06	0	11	11	83	135	218	113	204	319
B. Com.	1st Year	01	04	05	0	0	0	0	0	0	0	0	0	02	03	05	03	07	10
	2nd Year	0	0	0	0	0	0	01	0	0	0	0	0	02	03	05	03	03	06
	3rd Year	0	01	01	01	0	01	0	0	0	0	0	0	0	02	02	01	04	05
	Total	01	05	06	01	0	01	01	0	0	0	0	0	04	09	13	07	14	21
	Grand Total	24	56	80	01	02	03	02	05	06	0	11	11	87	144	241	124	218	342

वार्षिक परीक्षा परिणाम: परीक्षा परिणाम की प्रतिशतता किसी भी संस्थान की विशिष्टता की द्योतक होती है जिसमे महाविद्यालय के प्रतिबद्ध एवं प्रबुद्ध शिक्षकों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। यह हमारे लिए बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि हमारे महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम उत्साहवर्द्धक रहा है। विद्यार्थियों ने अपने परिश्रम, विवेक और अध्ययन में अपनी पूरी एकाग्रता का परिचय दिया है।

संकायवार तालिका

संकाय	कक्षा	कुल संख्या	उत्तीर्ण छात्र	महाविद्यालय प्रतिशत
कला स्नातक	प्रथम बर्ष	135	105	78%
	द्वितीप बर्ष	113	97	86%
	तृतीय बर्ष	71	71	100%
वाणिज्य स्नातक	प्रथम बर्ष	06	03	50%
	द्वितीय बर्ष	06	06	100%
	तृतीय बर्ष	17	17	100%

प्राध्यापकों की उपलब्धियां:

- मार्च, 2024 को कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास) ने हिमतरु प्रकाशन समिति एवं भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, हि.प्र. द्वारा आयोजित कुल्लू साहित्य उत्सव में भाग लिया ।

- 11 से 21 नवम्बर, 2024 तक कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास) ने राजकीय महाविद्यालय पनारसा, जिला मंडी एवं भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश जिला मंडी के संयुक्त तत्वाधान में समझौता ज्ञापन के अंतर्गत 10 दिवसीय टांकरी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला में बतौर संयोजक भाग लिया ।
- 22 से 24 सितम्बर, 2024 को कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास) ने रूपी सिराज कला मंच, साधना स्थली कुल्लू हि.प्र. द्वारा आयोजित बहु-विषयक अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी 'साहित्य के विविध आयाम: एक विचार विमर्श में भाग लिया।
- 3 से 11 जुलाई, 2024 तक डॉ. डिंपल जामटा, सहायक आचार्य (वाणिज्य) ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला द्वारा आयोजित NEP2020 ओरिएंटेशन प्रोग्राम में भाग लिया।
- 24 से 30 सितंबर, 2024 तक डॉ. डिंपल जामटा, सहायक आचार्य (वाणिज्य) ने राजकीय महाविद्यालय राजपुरा द्वारा आयोजित सात दिवसीय एफडीपी प्रोग्राम में भाग लिया।
- 16 से 22 सितंबर, 2024 तक डॉ. डिंपल जामटा, सहायक आचार्य (वाणिज्य) ने राजकीय महाविद्यालय आनी (हरिपुर कुल्लू) द्वारा आयोजित सात दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
- 22 से 24 सितंबर, 2024 को डॉ. डिंपल जामटा, सहायक आचार्य (वाणिज्य) ने रूपी सिराज कला मंच साधना स्थली जिला कुल्लू द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- 16 से 22 सितंबर, 2024 को डॉ. निशा शर्मा, सहायक आचार्य (संगीत) ने राजकीय महाविद्यालय आनी द्वारा आयोजित सात दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
- 17 से 19 जनवरी, 2025 को डॉ. निशा शर्मा, सहायक आचार्य (संगीत) ने रिसर्च राइटिंग एंड पब्लिकेशन विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
- 22 से 24 सितंबर, 2024 को डॉ. निशा शर्मा, सहायक आचार्य (संगीत) ने रूपी सिराज कला मंच साधना स्थली जिला कुल्लू द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. चारू अहलुवालिया, सहायक आचार्य (अंग्रेजी) ने शूलिनी विश्वविद्यालय से मई 2024 में अपनी पीएचडी की डिग्री पूर्ण की।
- 1 से 3 जुलाई, 2024 तक डॉ. चारू अहलुवालिया, सहायक आचार्य (अंग्रेजी) ने हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 14 दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स पूर्ण किया
- 5 से 12 मई, 2025 तक डॉ. चारू अहलुवालिया, सहायक आचार्य (अंग्रेजी) ने गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एफडीपी कार्यक्रम में भाग लिया।
- 15 से 21 अप्रैल, 2024 को डॉ. चारू अहलुवालिया, सहायक आचार्य (अंग्रेजी) ने गुरु तेग बहादुर खालसा महाविद्यालय द्वारा आयोजित एक साप्ताहिक एफडीपी प्रोग्राम में भाग लिया।
- मार्च, 2024 को श्री रत्तन देव, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) ने हिमतरु प्रकाशन समिति एवं भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, हि.प्र. द्वारा आयोजित कुल्लू साहित्य उत्सव में भाग लिया।
- 21 सितम्बर, 2024 को श्री रत्तन देव, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) ने राजकीय महाविद्यालय ज्वाली, कांगड़ा द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
- 19 अक्टूबर, 2024 को श्री रत्तन देव, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) ने राजकीय महाविद्यालय लम्बाथाच (सिराज) जिला मंडी में आयोजित अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में '**हिमाचल प्रदेश के किनौरा समाज में जनजातीय पहचान और राजनीतिक संस्कृति की खोज**' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- 18 जनवरी, 2025 को सहायक आचार्य हीरा सिंह और रत्तन देव ने चितकारा विश्वविद्यालय, राजपुरा, पंजाब में अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- 22 से 24 सितंबर, 2024 को सहायक आचार्य (हिंदी) श्रीमती अनीता ने रूपी सिराज कला मंच साधना स्थली जिला कुल्लू द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- 10 जनवरी, 2025 को सहायक आचार्य (हिंदी) श्रीमती अनीता ने **गाँधी मेमोरियल कॉलेज, अम्बाला छावनी, हिंदी विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र** द्वारा आयोजित **विश्व हिंदी दिवस** पर अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

पुस्तकालय अध्यक्ष की व्यक्तिगत उपलब्धियां:

- सितंबर, 2024 को पुस्तकालय अध्यक्षा श्रीमती बिंदु ने **दिल्ली नेटवर्किंग डेलनेट** द्वारा आयोजित एकदिवसीय ऑनलाइन वेबीनार में भाग लिया।
- जनवरी, 2025 को पुस्तकालय अध्यक्षा श्रीमती बिंदु ने **INFLIBNET** द्वारा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडी, शिमला में आयोजित **पांच दिवसीय कार्यशाला** भाग लिया।

अभिभावक-शिक्षक संघ : अध्यापकों-छात्रों-अभिभावकों के बीच संवाद कायम करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में पीटीए का गठन प्रतिवर्ष किया जाता है। संघ न केवल महाविद्यालय प्रशासन के साथ विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों में सहयोग करता है, बल्कि अपने सुझावों द्वारा एक सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण भी करता है। सत्र 2024-25 के लिए गठित संघ का विवरण इस प्रकार है:-

प्रधान : श्रीमती अनीता — **उप-प्रधान :** हरि शर्मा

सचिव : सहायक आचार्य श्री हीरा सिंह — **सह-सचिव:** श्री टोनी

कोषाध्यक्ष : श्रीमती खीरामणी — **सदस्य:** सभी अभिभावक एवं अध्यापकगण

सत्र 2024-25 में पीटीए में कुल 196532 रुपए की धनराशि आय के रूप में प्राप्त हुई, इसमें से 2024-25 में 169575 रुपए की धनराशि विभिन्न विकासात्मक / सांस्कृतिक गतिविधियों व छात्रों के हितों से जुड़े अन्य कार्यों हेतु व्यय की गई। अब पीटीए में कुल बचत धनराशि 450889 रुपए है ।

केंद्रीय छात्र संगठन (एससीए): महाविद्यालय के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए तथा विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं को प्राचार्य तक पहुंचाने के लिए महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष केंद्रीय छात्र परिषद का गठन किया जाता है। सत्र 2024-25 के लिए गठित **केंद्रीय छात्र संगठन (एससीए)** का विवरण इस प्रकार है:-

अध्यक्ष : लक्ष्मी (वाणिज्य स्नातक तृतीय वर्ष)

उपाध्यक्ष : यशपाल (कला स्नातक तृतीय वर्ष)

सचिव : निशा (कला स्नातक द्वितीय वर्ष)

सह-सचिव : पूजा ठाकुर (कला स्नातक प्रथम वर्ष)

छात्रवृतियां :

वित्त वर्ष 2023-24 के अंतर्गत अलग-अलग योजनाओं के तहत विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों को छात्रवृतियां प्रदान की गई।

- अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए केंद्र प्रायोजित पोस्ट मेट्रिक छात्रवृति योजना के तहत 05 विद्यार्थियों को छात्रवृति प्रदान की गई।
- हिमाचल प्रदेश सरकार के अंतर्गत कल्पना चावला छात्रवृति 02 छात्राओं को प्रदान की गई।
- महाविद्यालय और विश्वविद्यालय छात्रवृति की केंद्रीय क्षेत्रीय योजना के अंतर्गत 1 विद्यार्थी को छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

वार्षिक पत्रिका: महाविद्यालय के वार्षिक पत्रिका '**अर्जिक्या**' विद्यार्थियों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने का सौभाग्य प्रदान करती है। इसमें विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। यह पत्रिका मुख्य सम्पादक डॉ. चारू अहलुवालिया के संरक्षण में तैयार हुई है। इस सत्र के विभिन्न विषयों के प्राध्यापक एवं छात्र/छात्रा सम्पादकों का विवरण इस प्रकार है:

क्रम संख्या	अनुभाग	प्राध्यापक सम्पादक	छात्र सम्पादक
1	अंग्रेजी	डॉ. चारू अहलुवालिया (सहायक आचार्य अंग्रेजी)	मोनिका (कला स्नातक तृतीय वर्ष)
2	हिंदी	श्रीमती अनीता (सहायक आचार्य हिंदी)	यशपाल (कला स्नातक तृतीय वर्ष)
3	पहाड़ी	श्री कृष्ण लाल (सहायक आचार्य इतिहास)	मधु (कला स्नातक तृतीय वर्ष)
4	वाणिज्य	डॉ. डिंपल जामटा (सहायक आचार्य वाणिज्य)	लक्ष्मी (वाणिज्य स्नातक तृतीय वर्ष)

समझौता ज्ञापन (MoUs)

सत्र 2024-25 में राजकीय महाविद्यालय पनारसा ने तीन समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

- प्रथम समझौता ज्ञापन हिमतरु प्रकाशन समिति कुल्लू के साथ हुआ जिसमें विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से समझौता किया गया।
- दूसरा समझौता ज्ञापन भाषा संस्कृति विभाग मंडी के साथ किया गया।
- तीसरा समझौता ज्ञापन वन विभाग पनारसा के साथ किया गया।

महाविद्यालय की गतिविधियां:

- 15 मार्च, 2024 को महाविद्यालय के **महिला प्रकोष्ठ** द्वारा **अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस** का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ. धनेश्वरी शर्मा जी थी और साथ में अधिवक्ता श्रीमती चंद्रा उपस्थिति रहीं। उन्होंने इस कार्यक्रम में 100 विद्यार्थियों को यौन उत्पीड़न कानून से अवगत करवाया।

- 30 मार्च से 5 अप्रैल 2024 तक महाविद्यालय की **सौंदर्यीकरण समिति** द्वारा **6 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय जीरो वेस्ट डे** पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस दौरान विद्यार्थियों ने पुरानी एवं वेस्ट सामग्रियों को एकत्र किया और उन्हें शानदार गमलों के रूप में परिवर्तित किया।
- 12 से 14 अगस्त 2024 तक महाविद्यालय की **एंटी रैगिंग कमेटी** द्वारा **एंटी रैगिंग सप्ताह** मनाया गया जिसमें विद्यार्थियों को रैगिंग संबंधी नियमों की जानकारी दी गई।
- 18 सितंबर, 2024 को **सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ** द्वारा **पाइन नीडल कार्यशाला** का आयोजन किया गया जिसमें महिला मंडल नाऊ और पटोगी की महिलाओं श्रीमती पूजा देवी, हीरा देवी और कृष्णा देवी ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों को पाईन नीडल से घरेलू प्रयोग में आने वाली वस्तुएं बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

- 30 सितंबर, 2024 को महाविद्यालय की **साहित्यिक परिषद** द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं, जैसे कविता पाठ, फोटोग्राफी एवं अंताक्षरी प्रतियोगिताएं इत्यादि करवाई गई।

- 27 से 30 सितंबर, 2024 तक अटल सदन कुल्लू में **चंडीगढ़, संगीत नाटक अकादमी द्वारा सूफी कव्वाली, पंजाबी नृत्य तथा संगीत** पर आधारित कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे **महाविद्यालय की नाट्य समिति** की ओर से 30 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

- 4 अक्टूबर 2024 को महाविद्यालय के **महिला प्रकोष्ठ** द्वारा **यौन उत्पीड़न से संबंधित** कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पुलिस थाना औट से एएसआई श्री जयसिंह और हेड कांस्टेबल मिस लीला द्वारा यौन उत्पीड़न से संबंधित कानूनी सूचनाएं विद्यार्थियों से साँझा की गई। इस कार्यक्रम में 80 विद्यार्थी उपस्थित रहे।
- 10 अक्टूबर, 2024 को महाविद्यालय के **करियर काउंसलिंग सेल** द्वारा **करियर काउंसलिंग से संबंधित** कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे इंस्टिट्यूट ऑफ़ होटल मैनेजमेंट एजुकेशन सोसाइटी रामपुर से आये विषय विशेषज्ञों द्वारा महाविद्यालय के 100 विद्यार्थियों को रोजगार, कौशल तथा उद्यमिता से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया ।
- 21 अक्टूबर से 9 नवंबर, 2024 तक महाविद्यालय की **नाट्य समिति द्वारा एक कार्यशाला** का आयोजन किया गया। 20 दिन की कार्यशाला में 20 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमे प्रशिक्षक के रूप में थिएटर आर्टिस्ट श्री नरेन्द्र वर्मा द्वारा विद्यार्थियों को थिएटर से संबंधित कौशल सिखाए गए।
- 16 नवंबर 2024 को **महाविद्यालय के सत्र 2024-25 के आंतरिक मूल्यांकन** हेतु राजकीय महाविद्यालय कुल्लू से **क्लस्टर लेवल कमेटी** ने महाविद्यालय का मुआइना किया गया।
- 20 नवंबर, 2024 को महाविद्यालय के विद्यार्थिओं ने **हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय (ग्रुप 4) युथ फेस्टिवल** में भाग लिया। इसमें महाविद्यालय की **छात्रा रितिका ने हिमाचल प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ नायिका का खिताब** हासिल किया।
- 10 दिसंबर, 2024 को महाविद्यालय की **करियर काउंसलिंग सेल** द्वारा **करियर काउंसलिंग से संबंधित** कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें महाविद्यालय के 85 विद्यार्थियों को **लाइफ सीकर इंस्टिट्यूट ऑफ़ होटल मैनेजमेंट, कुल्लू** द्वारा रोजगार, योग्यता, कौशल तथा उद्यमिता कौशल का प्रशिक्षण दिया गया।
- 13 दिसम्बर, 2024 को वन विभाग कुल्लू द्वारा **ग्रेट हिमालय नेशनल पार्क, सैंज रोपा** में एक **दिवसीय ओरिएनटेशन कार्यक्रम** किया गया, जिसमें हमारे महाविद्यालय के **Biodiversity Club के 20 विद्यार्थियों** ने भाग लिया।

खेल-कूद गतिविधियाँ:

- 17 अक्टूबर, 2024 को महाविद्यालय के 11 विद्यार्थियों ने **वन विभाग कुल्लू द्वारा आयोजित वॉकथान मैराथन दौड़** में भाग लिया। यह मैराथन दौड़ 11 किलोमीटर की थी जो लोट से कायसधार तक थी।
- 25 से 27 नवम्बर, 2024 को महाविद्यालय की **खो-खो टीम** ने राजकीय संस्कृत महाविद्यालय नाहन में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।
- 28 से 29 नवंबर, 2024 को महाविद्यालय की **जूडो टीम** ने राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।
- 19 से 20 दिसंबर, 2024 तक महाविद्यालय में **वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने आउटडोर गेम्स में वॉलीबॉल, कबड्डी, बेडमिंटन, डिस्कस थ्रो, शॉटपुट थ्रो, जेवलिन थ्रो, 100, 200, 400 एवं 1600 मीटर दौड़ जबकि इनडोर गेम्स में शतरंज एवं कैरम बोर्ड इत्यादि प्रतियोगिताए करवाई गयी जिसमे विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

पूर्व छात्र संघ:

- महाविद्यालय में **पूर्व छात्र संघ** का गठन **सत्र 2023-24** में कर लिया गया था।
- **29 नवम्बर, 2024 को महाविद्यालय में पूर्व छात्र संघ के गठन की प्रक्रिया को पूर्ण** होने के पश्चात् पंजीकृत किया गया। तत्पश्चात औपचारिक समिति का गठन दो वर्षों के लिए किया गया।

- 6 से 12 फरवरी, 2025 तक महाविद्यालय में **पूर्व छात्र संघ, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई** एवं **भाषा एवं संस्कृति विभाग मंडी** के संयुक्त तत्वाधान में **समझौता ज्ञापन** के अंतर्गत **सात दिवसीय पहाड़ी वास्तुकला आधारित चित्रकला कार्यशाला** का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 25 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ:

6 अगस्त, 2024 को महाविद्यालय में **सामुदायिक विकास प्रकोष्ठ (Community Development Cell)** का गठन किया गया। इसके अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां करवाई गई जो निम्नलिखित हैं:

- दशहरा विशेषांक के लिए हिमतरू प्रकाशन समिति कुल्लू एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में दशहरे से संबंधित जानकारी के लिए रघुनाथ जी के छड़ीबदार श्री महेश्वर सिंह जी, सेवानिवृत वरिष्ठ नागरिकों तथा अन्य बुजुर्गों के साक्षात्कार लिए गए जिन्हें हिमतरू पत्रिका के दशहरा विशेषांक में प्रकाशित किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना की वार्षिक गतिविधियाँ:

- 23 मार्च, 2024 को महाविद्यालय की एनएसएस इकाई द्वारा **युवा संवाद कार्यक्रम** का आयोजन किया गया जिसमें उच्च शिक्षा संयुक्त निदेशक डॉ नंदलाल शर्मा जी बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे।
- 5 जून, 2024 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **विश्व पर्यावरण दिवस** मनाया गया।
- 27 जुलाई, 2024 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **केंद्रीय बजट पर चर्चा** आधारित कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग से डॉ. डिंपल जामटा बतौर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थिति रहीं। इन्होंने केंद्रीय बजट में युवाओं से संबंधित सरकार की विभिन्न योजनाओं से विद्यार्थियों को अवगत करवाया।
- 15 अगस्त, 2024 महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **स्वतंत्रता दिवस** मनाया गया, जिसमे विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गये। इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी कृष्ण लाल एवं डॉ. डिंपल जामटा द्वारा महाविद्यालय के गार्डन में एक पेड़ लगा कर **'एक पेड़ माँ के नाम'** अभियान कार्यक्रम का श्रीगणेश किया।
- 31 अगस्त, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रोवर-रंजेर इकाई द्वारा वन विभाग के साथ मिलकर **'एक पेड़ माँ के नाम'** अभियान के अंतर्गत बनाला जंगल में पौधारोपण किया। जिसमे स्वयंसेवियो ने देवदार, खरशु एवं वान के **150 पेड़ रोपे** गये।
- 13 सितम्बर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, रोवर-रेंजर एवं रेड रिबन क्लब एवं गैर-सरकारी संस्था युवा के संयुक्त तत्वाधान में महाविद्यालय परिसर में **हेल्थ चेकअप कैंप** लगाया गया जिसमे महाविद्यालय एवं कोटाधार पंचयात के लोगों ने स्वास्थ्य की जाँच करवाई। इस कैंप के लिए विषय विशेषज्ञ डॉक्टर, जिसमे नेत्र रोग विशेषज्ञ भानु हॉस्पिटल कुल्लू, कुल्लू वैली हॉस्पिटल से दन्त चिकित्सा विशेषज्ञ एवं एस.बी.आई फाउंडेशन की तरफ से सामान्य चिकित्सा विशेषज्ञ बुलाये गए थे।
- 24 सितम्बर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस** मनाया गया।
- 24 सितम्बर 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के चार स्वयंसेवियों तुषार कुमार, जतिन, पिंकी ठाकुर एवं रोहानी ठाकुर ने राजकीय महाविद्यालय कुल्लू में आयोजित **जिला स्तरीय पूर्व गणतन्त्र परेड शिविर** में भाग लिया जिसमे हमारे तीन स्वयंसेवियों तुषार कुमार, पिंकी ठाकुर एवं रोहानी ठाकुर का चयन राज्य स्तरीय, पूर्व गणतन्त्र परेड शिविर के लिए किया गया।
- 1 अक्तूबर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तीन स्वयंसेवियों तुषार कुमार, पिंकी ठाकुर एवं रोहानी ठाकुर ने महाराजा लक्ष्मण सेन मेमोरियल कॉलेज सुंदर नगर में आयोजित **राज्य स्तरीय पूर्व गणतन्त्र परेड शिविर** में भाग लिया जिसमे वालंटियर रोहानी ठाकुर का चयन उत्तरी क्षेत्र पूर्व गणतन्त्र परेड शिविर के लिए किया गया।
- 11 अक्टूबर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस** मनाया गया जिसमे स्वयंसेवियों ने परिवार एवं समुदाय के वरिष्ठ नागरिको के प्रति सम्मान का भाव रखने, सहानुभूति रखने, करुणा के साथ व्यवहार करने, उनकी आवाज बनने, उनको शारीरिक और भावनात्मक समर्थन करने, उनके अधिकारों, हितों के बारे में जागरूकता पैदा करने, बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के खिलाफ लड़ने, और उनकी देखभाल करने की प्रतिज्ञा ली।
- 14 से 23 अक्टूबर, 2024 तक विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान मे **उत्तरी क्षेत्र पूर्व गणतन्त्र परेड शिविर** आयोजित किया गया जिसमे हमारे महाविद्यालय की ओर से वालंटियर रोहानी ठाकुर ने भाग लिया।
- 22 नवम्बर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के 15 स्वयंसेवियों ने आश्रय फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यशाला **Training on Pine Crafts & Making Soft Toys from Waste Cloth** में भाग लिया जिसमे उन्होंने पुराने एवं व्यर्थ कपड़ों से कुशन एवं खिलौने बनाना सीखा।
- 2 दिसम्बर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं रेड रिबन क्लब द्वारा **विश्व एड्स दिवस** मनाया गया।
- 1 जनवरी, 2025 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **कुल्लू के झुग्गी क्षेत्र में दान स्वरूप वस्त्र दान** दिए गए।
- 10 जनवरी, 2025 महाविद्यालय के स्टाफ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवियों ने **बंजार के तांदी गावं में हुए भीषण अग्निकांड में प्रभावित लोगों की सहायता** के लिए फण्ड एकत्रित किया एवं अग्नि प्रभावितों के लिए ज़रूरी वस्तुएं प्रदान की।

- 20 से 24 जनवरी, 2025 तक **उद्यान विभाग हिमाचल प्रदेश, फल विकास परियोजना बजौरा, जिला कुल्लू** द्वारा आयोजित **पांच दिवसीय खुम्ब उत्पादन प्रशिक्षण शिविर** में महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के दो स्वयंसेवियों अनुज और दलीप ने भाग लिया।
- 5 से 11 फरवरी 2025 तक महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **सात दिवसीय विशेष शिविर** का आयोजन किया गया जिसमे महाविद्यालय के 50 स्वयंसेवियों ने भाग लिया। शिविर में विभिन्न क्षेत्रों से विषय विशेषज्ञ बुलाये गए जिसमें दूसरे दिन हमारे महाविद्यालय से **डॉ. डिम्पल जामटा ने उपभोक्ता अधिकारों एवं कानूनों** के बारे में स्वयंसेवियों को जागरूक किया। शिविर के तीसरे दिन **कुल्लू महाविद्यालय से राजनीति विज्ञानं विभाग के सहायक आचार्य खेम चंद ठाकुर एवं कुल्लू महाविद्यालय की स्वयंसेवी बेबी शर्मा ने स्वयंसेवयों** के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गणतन्त्र परेड के अनुभवों को सॉँझा किया। शिविर के चौथे दिन **कुल्लू महाविद्यालय से इतिहास विभाग के सहायक आचार्य ज्योति चरण ने स्वयंसेवयों को भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System)** के बारे में जानकारी प्रदान की। शिविर के पांचवे दिन **राजकीय महाविद्यालय थाची**, **मंडी** से सहायक आचर्य इतिहास श्री राज कुमार ने **'भारतीय आदिवासी आन्दोलन एवं भगवान बिरसा मुंडा का योगदान'** विषय पर अपना वक्तव्य दिया। शिविर के छठे दिन पुलिस थाना औट से ट्रैफिक इंचार्ज ने रोड सड़क सुरक्षा नियमों एवं युवाओं में बढ़ती नशाखोरी विषय पर अपना वक्तव्य दिया।
- 5 से 11 फरवरी, 2025 तक चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, घडूआं, मोहाली, पंजाब में आयोजित **राष्ट्रीय एकता शिविर** में हमारे एक स्वयंसेवी गोपाल सिंह ने भाग लिया।

रेड रिबन क्लब:

- 25 जुलाई, 2024 को महाविद्यालय के रेड रिबन क्लब के छात्रों ने जोनल अस्पताल मंडी में जाकर **एक दिवसीय रेड रिबन कार्यशाला** में भाग लिया जिसमें उन्हें एचआईवी एड्स, ब्लड डोनेशन एवं विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओ के बारे में बताया गया।
- 29 अगस्त, 2024 को महाविद्यालय में **अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस** के अवसर पर रेड रिबन क्लब के द्वारा **एचआईवी और एड्स के प्रति जागरूकता पर नुक्कड़ नाटक** का प्रदर्शन किया गया।
- 23 सितंबर, 2024 को महाविद्यालय में जोनल अस्पताल से **रेड रिबन क्लब की सलाहकार श्याम लता जी** ने छात्रों को **एचआईवी एड्स पर एक व्याख्यान** दिया।
- 5 अक्टूबर, 2024 को रेड रिबन क्लब द्वारा महाविद्यालय में **एचआईवी एड्स जागरूकता पर विद्यार्थियों को शपथ दिलवाई गई** इसमें महाविद्यालय के सभी कर्मचारी वर्ग ने भी भाग लिया।
- 2 दिसम्बर, 2024 को रेड रिबन क्लब एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा **विश्व एड्स दिवस** मनाया गया।

रोवर-रेंजर:

- 31 अगस्त, 2024 को रोवर-रंजेर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा वन विभाग के साथ मिलकर **'एक पेड़ माँ के नाम'** अभियान के अंतर्गत बनाला जंगल में वृक्षारोपण किया। जिसमे स्वयंसेवियों ने देवदार, खरशू एवं वान के **150 पौधे रोपे।**
- 13 सितम्बर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, रोवर-रेंजर एवं रेड रिबन क्लब एवं गैर-सरकारी संस्था युवा के संयुक्त तत्वाधान में महाविद्यालय परिसर में **हेल्थ चेकअप कैंप** लगाया गया।
- 22 अक्टूबर, से 27 अक्टूबर तक रोवर-रेंजर इकाई के तीन रेंजर्स ने रिवालसर में निपुण टेस्टिंग कैंप में भाग लिया।

विभागीय गतिविधियाँ:

इतिहास विभाग:

- 14 अगस्त, 2025 को महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा **भारत-पाकिस्तान विभाजन** के भयावह स्मरण पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमे विभाजन के समय घटित घटनाओं को प्रदर्शित किया गया।
- 11 से 21 नवम्बर, 2024 तक राजकीय महाविद्यालय पनारसा, जिला मंडी में **भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश जिला मंडी एवं इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय पनारसा** के संयुक्त तत्वाधान में **समझौता ज्ञापन** के अंतर्गत **10 दिवसीय टांकरी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।** कार्यशाला के पहले दिन जहाँ विद्यार्थियों ने टांकरी लिपि के इतिहास एवं इसके एतिहासिक महत्त्व के बारे में जाना वहीँ टांकरी लिपि के स्वरों एवं व्यंजनो का भी अभ्यास किया। कार्यशाला के दूसरे दिन विद्यार्थियों ने टांकरी लिपि के व्यंजनो, सयुंक्त व्यंजनो, अंको एवं बारहखड़ी का अभ्यास किया। कार्यशाला के तीसरे, चौथे, पांचवें एवं छठवें दिन शब्द एवं वाक्य रचना का अभ्यास किया गया। कार्यशाला के आठवें एवं नौवें दिन टांकरी लिपि में लिखित प्राचीन पांडुलिपियों को पढ़ने का अभ्यास किया गया। कार्यशाला के अंतिम दिन लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया।
- 1 से 2 फरवरी 2025 तक **राजकीय महाविद्यालय पनारसा एवं महाविद्यालय के इतिहास विभाग** के 18 विद्यार्थिओं ने **प्रगति मैदान दिल्ली** में आयोजित **विश्व पुस्तक मेले** का भ्रमण किया। **यह एक शैक्षणिक एवं ऐतिहासिक भ्रमण था** जिसमे पहले दिन विद्यार्थियों ने विश्व पुस्तक मेले एवं अक्षर धाम मंदिर का भ्रमण किया जबकि दूसरे दिन विश्व पुस्तक मेले, कुतुब मीनार, इंडिया गेट, राजघाट एवं लाल किले का भ्रमण किया गया।

राजनीति विज्ञान विभाग:

- 2 अक्टूबर, 2024 को महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा **गांधी जयंती** के अवसर पर एक **विशेष ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला** शुरू की गई, जिसका विषय था **"21वीं सदी में गांधी जी की प्रासंगिकता"**। इसके मुख्य वक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) के प्रोफेसर स्वर्ण सिंह थे। इस व्याख्यान में हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कॉलेजों के आचार्य, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (नई दिल्ली), हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (धर्मशाला) और हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय (शिमला) के शोधार्थी भी शामिल थे। इसके अतिरिक्त गांधी जी के विचारों पर आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।
- 26 नवंबर, 2024 को राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा **संविधान दिवस** का आयोजन किया गया।
- 15 दिसंबर, 2024 को राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा **ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला** की दूसरी कड़ी में एक **विशेष ऑनलाइन व्याख्यान** का आयोजन किया गया, जिसका विषय था **"स्वाधीनता आंदोलन और आदिवासी समाज"**। इसके मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर स्नेह लता नेगी थीं।
- 13 फरवरी, 2024 राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा एक **विशेष ऑनलाइन व्याख्यान** का आयोजन किया गया जिसका विषय था **'जल, महिलाएं, कल्याण एवं जलवायु: एक स्थायी भविष्य का निर्माण'** । इसके मुख्य वक्ता डॉ राजेन्द्र सिंह, जलपुरुष (रमन मैग्सेसे प्राप्तकर्ता) थे। इस व्याख्यान में हिमाचल प्रदेश के विभिन्न कॉलेजों के प्रोफेसर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय (शिमला) के शोधार्थी भी शामिल थे।

संगीत विभाग:

- 17 सितम्बर 2024 को संगीत विभाग द्वारा **एक दिवसीय ऑनलाइन व्याख्यान** का आयोजन किया गया जिसमे **राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला, काँगड़ा से** सहायक आचार्या **डॉ. पलवी शर्मा** ने **The Role of Music in Stress Management** विषय पर अपना वक्तव्य दिया।
- 30 सितंबर 2024 को कुल्लू के **अटल सदन में संगीत नाटक अकादमी पंजाब द्वारा आयोजित कार्यक्रम** में संगीत विभाग के 10 छात्रों ने डॉ. निशा शर्मा और डॉ. डिंपल जामटा के साथ कार्यक्रम में भाग लिया।
- 1 अक्टूबर 2024 को संगीत विभाग द्वारा **अंतराष्ट्रीय संगीत दिवस** मनाया गया।
- 23 से 26 अक्टूबर 2024 तक **राजकीय महाविद्यालय करसोग, जिला मंडी** में आयोजित **यूथ फेस्टिवल ग्रुप-2** में **संगीत विभाग के 11** छात्रों ने भाग लिया।
- 21 दिसंबर 2024 को महाविद्यालय के संगीत विभाग द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम **स्वरांजलि** का आयोजन किया गया जिसमें गजल, पहाड़ी गीत, फिल्मी गीत, एकल नृत्य, समूह नृत्य एवं पहाड़ी नाटी इत्यादि प्रतियोगिताएं करवाई गई।

अंग्रेजी विभाग

- 22 अगस्त 2024 को अंग्रेजी विभाग के छात्रों द्वारा **दशहरा विशेषांक के संदर्भ में श्री महेश्वर सिंह जी का साक्षात्कार** लिया गया यह साक्षात्कार हिमतरु प्रशासन समिति और महाविद्यालय के **समझौता ज्ञापन के अंतर्गत** लिया गया। तथा इस साक्षात्कार को दशहरा विशेषांक में प्रकाशित किया गया।
- 12 सितंबर 2024 को अंग्रेजी विभाग तथा हिंदी विभाग ने मिलकर महाविद्यालय की **नाट्य समिति (Dramatics Society) का गठन** किया जिसमें प्रथम द्वितीय तथा तृतीय वर्ष के अंग्रेजी तथा हिंदी विभाग के सभी छात्रों को शामिल किया गया।
- 17 सितंबर 2024 को अंग्रेजी विभाग के छात्र अटल सदन कुल्लू में **केदार ठाकुर द्वारा निर्देशित नाटक 'द डॉल'** को देखने के लिए गए। यह अंग्रेजी विभाग के छात्रों के लिए पहला अवसर था जब उन्होंने थिएटर की बारीकियां को समझा।
- 30 सितंबर 2024 को अंग्रेजी विभाग द्वारा **साहित्यिक परिषद समारोह** का आयोजन किया गया जिसमे फोटोग्राफी, कविता पाठ तथा पुस्तक के बाहरी आवरण बनाने संबंधी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिंदी विभाग

- 1 से 30 सितंबर, 2024 तक हिंदी विभाग द्वारा **हिंदी माह** का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं और कार्यशालाएं करवाई गई। प्रतियोगिताओं के अंतर्गत **कविता पाठ वाचन** प्रतियोगिता एवं **सुलेख प्रतियोगिता** करवाई गई जबकि **कार्यशाला** के अंतर्गत प्रथम कार्यशाला **नवलेखन कार्यशाला** थी जिसमे विद्यार्थियों को जीवन के किसी महत्वपूर्ण घटना को लिखने के लिए कहा गया उसके पश्चात विद्यार्थियों द्वारा 5 दिनों के अंतराल पर लिखित ड्राफ्ट को देखने के बाद पुनः सुधार करके लाया गया। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों ने सीखा कि किसी विशेष घटना को संस्मरण या कहानी में किस प्रकार बदला जा सकता है।
- कार्यशाला के अंतर्गत दूसरी कार्यशाला **व्यर्थ की चीजों से वस्तु बनाने संबंधी कार्यशाला** (Best out of Waste) थी जिसमें विद्यार्थियों द्वारा घर में व्यर्थ एवं बेकार पड़ी वस्तुएं लाई गई जैसे बाल्टी, जग, ड्रम, बोतल इत्यादी। इस कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट्स के छात्र सुरेश द्वारा विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया तथा उन वस्तुओं को गमलों एवं फूलदानों के रूप में बदला गया जबकि पत्थर के स्लेट में हिंदी साहित्य संबंधी विभिन्न उपन्यास व कहानी की किताबों के बाहरी आवरण को चित्रित किया गया।
- 30 सितंबर 2024 को **हिंदी दिवस** का आयोजन किया गया और विभिन्न कार्यशालाओं में किए गए कार्य का प्रदर्शन किया गया।

- 30 सितंबर 2024 को हिंदी विभाग तथा अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में **साहित्य परिषद समारोह** का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत कविता पाठ और फोटोग्राफी प्रतियोगिता करवाई गई।
- 27 और 28 सितंबर, 2024 को महाविद्यालय के हिंदी और अंग्रेजी विभाग के विद्यार्थी **चंडीगढ़ नाट्य संगीत अकादमी** द्वारा आयोजित सूफी संगीत एवं कव्वाली सुनने गए। विद्यार्थियों को सूफी साहित्य की महत्वपूर्ण जानकारी मिली।

वाणिज्य विभाग:

- 15 दिसम्बर, 2024 को महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग द्वारा एक **ऑनलाइन व्याख्यान** का आयोजन किया गया। जिसका विषय **इंडस्ट्रियल एनवायरनमेंट इन हिमाचल प्रदेश** था जिसमें मैनेजर डिस्टिक इंडस्ट्री सेंटर कुल्लू से श्री सोमेश शर्मा द्वारा व्याख्यान दिया गया।

पुस्तकालय:

राजकीय महाविद्यालय पनारसा के पुस्तकालय का संचालन वर्ष 2015 से निरंतर पाठकों की सेवा में क्रियाशील है। वर्तमान में पुस्तकालय में लगभग **1500 पुस्तके, पांच पत्रिकाएं, दो समाचार पत्र एवं दो जर्नल्स** पाठकों का ज्ञानवर्धन कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त हमारे विद्यार्थी भारत सरकार द्वारा स्थापित **NDL नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी** की ऑनलाइन सेवा का भी लाभ उठा रहे हैं। अभी हाल ही में महाविद्यालय के पुस्तकालय **में INFLIBINET की ONOS की योजना से भी जोड़ा** गया जिसके तहत ONE NATION ONE SUBSCRIPTION की सेवा में हमारे पाठक अपनी रुचि की सामग्री एक क्लिक में भी ऑनलाइन पा सकेंगे।

पुस्तकालय द्वारा संचालित गतिविधियां:

- 29 जुलाई, 2024 को **पुस्तकालय सोसायटी** का गठन का गठन किया गया।
- 12 अगस्त, 2024 को **पुस्तकालय सोसायटी** द्वारा **पुस्तकालय दिवस** मनाया गया।
- अगस्त, 2024 को **लाइब्रेरी सोसायटी का व्हाट्सएप ग्रुप** बनाया गया जिसमें 20 से 25 तरह के ई न्यूज़पेपर रोजाना विद्यार्थिओं को उपलब्ध करवाए जाते हैं।
- 5 अक्टूबर, 2024 को पुस्तकालय सोसायटी के द्वारा हिमतरु प्रकाशन समिति कुल्लू विद्यार्थियों के सौजन्य से **'दशहरा विशेषांक'** पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के 50 छात्रों ने भाग लिया। जिसमे पुस्तकालय हॉल में हिमतरु प्रकाशन समिति कुल्लू के संस्थापक श्री कृष्ण श्रीमान जी द्वारा विद्यार्थियों को साक्षात्कार के टिप्स दिए।
- 9 अक्टूबर, 2024 को सरदार पटेल यूनिवर्सिटी की प्रो. उप कुलपति डॉ. अनुपमा सिंह के द्वारा दशहरा विशेषांक शीर्षक से प्रकाशित पत्रिका का विमोचन किया गया जिसमें महाविद्यालय की लाइब्रेरी सोसायटी के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

सारांश:

महाविद्यालय की स्थापना से लेकर आज तक महाविद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। महाविद्यालय से अनेक विद्यार्थी स्नातक कर चुके हैं और वर्तमान में सरकारी एवं निजी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं जिसमें हमारे शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महाविद्यालय में वर्तमान में विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को बढ़ाने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित करवाई जा रही हैं। महाविद्यालय ने तीन समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए हैं जो कि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सेवा योजना, रोवर-रेंजर, रेड रिबन क्लब एवं महिला प्रकोष्ठ इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में आपनी सेवाएं दे रहे हैं, जिसका प्रभाव हमें विद्यार्थियों में दिख रहा है। महाविद्यालय को अभी और नए कीर्तिमान भी स्थापित करने हैं। अंत में, मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देना चाहती हूँ जिन्हें आज पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आप सभी का पुनः हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करती हूं।

****

Lets honour our bright stars

ANNUAL PRIZE DAY

DIST.

Annual Sports Meet

Anti Ragging Campaign

हिंदी अनुभाग

हिंदी माह

सम्पादकीय

प्रिय पाठको,

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि वर्ष 2024–2025 का अर्जिक्या का अंक आपके सामने प्रस्तुत है। इस पत्रिका में प्रकाशित करने के लिए बहुत–से छात्र–छात्राओं की स्वरचित रचनाएं, ज्ञानवर्धक जानकारियां व मनोरंजक सामग्री हमें प्राप्त हुई हैं। समसामयिक घटनाओं का आंखों देखा चित्रण कविता, संस्मरण और निबंध के माध्यम से किया है। आपदा से आम जनजीवन किस तरह प्रभावित हुआ है, इसलिए भविष्य के लिए भी हमें सदैव सजग एवं जागरूक रहने की आवश्यकता है ताकि हम परिस्थितियों का सामना कर सकें। आपदा में गांव, परिवार और प्रदेश का चित्रण विद्यार्थियों ने किया है, मुझे आशा है कि आप पत्रिका को पढ़कर उन लोगों की पीड़ा को समझ सकेंगे। जो गलतियां हम से हुई हैं, भविष्य में हमें उनसे सबक लेना चाहिए।

मैं उन सभी विद्यार्थियों का धन्यवाद करना चाहती हूं, जिन्होंने अपनी रचनाएं दीं। मैं आशा करती हूं कि विद्यार्थी हमेशा विभिन्न विषयों एवं समसामयिक घटनाओं को कलमबद्ध करते रहे ताकि पठन–पाठन में आप सबकी रूची बनी रहे।

अनीता
प्राध्यापक संपादक

मैं धन्यवाद करना चाहता हूं हमारे सभी अध्यापकों का, जिन्होंने मुझे छात्र सम्पादक के रूप में चुना। मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मुझे 'अर्जिक्या' पत्रिका में छात्र–सम्पादक के रूप में कार्य करने का अवसर मिला है।

विद्यार्थी जीवन में पत्रिका का विशेष महत्त्व होता है। पत्रिका महाविद्यालय के छात्रों के अंदर छिपी भावनाओं का प्रतिरूप भी होती है। विद्यार्थी कल का नागरिक है, इसलिए वह अपने समय का चित्रण पत्रिका के माध्यम से उजागर करते हैं। पत्रिका में विद्यार्थी अपने विचारों और भावों को व्यक्त करते हैं।

प्रत्रिका का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पत्रिका विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भमिका निभाती है। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं और शुभकामनाएं भी देता हूं।

यशपाल
छात्र–सम्पादक

युद्ध

जिस प्रकार पूरे विश्व में युद्ध की स्थितियां बनी हुई है। इजराइल, फिलिस्तीन ,यूक्रेन ,रूस, सीरिया, ईरान आदि देशों में आम जनता युद्ध की विभीषिका से त्रस्त है ऐसे में इस बार पत्रिका के लिए हमने ऐसी दो कहानी चुनी है जिनको पढ़ना इस दुनिया में शांति व्यवस्था लाने के लिए आवश्यक लगता है शानी की युद्ध और अमृतलाल नागर की एटम बम कहानियां विद्यार्थियों द्वारा पढ़ी गई और उन पर पाठकीय प्रतिक्रिया को हमने हिंदी अनुभाग का हिस्सा बनाया है।

एक– शानी

पाकिस्तान से युद्ध के दिन थे। हवा भारी थी। लोग डरे हुए और सचमुच नीमसंजीदा। आकाश झुककर छोटा सा हो गया था। – रंगहीन मटमैला तथा डरावना। क्षणों की लंबाई कई गुना बढ़ गई थी। आतंक, असुरक्षा और बेचैनी से लदा दिन वक्त से पहले निकलता और शाम के बहुत पहले यकबयक डूब जाता था। फिर शाम होते ही रात गहरी हो जाती थी और लोग अपने घरों में पास–पास बैठकर भी घंटों चुप लगाए रहते थए।

'सुना! वसीम रिजवी से चार्ज ले लिया गया है।' दफ्तर पहुँचते ही शंकर दत्त को एक दिन इसी तरह हतप्रभ रह जाना पड़ा था।

'यानी? क्या वह नौकरी से...'

'नहीं, नौकरी पर तो है। रिजवी से वह काम छीन लिया गया है, जो बरसों से करता आ रहा था। डाइरेक्टर ने कहा है कि हालात को देखते हुए ऐसा बड़ा काम रिजवी पर छोड़ना ठीक नहीं। सारे देश का मामला है...'

'क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा!' शंकरदत्त को हँसी आ गई थी। एक तो निहायत बेमानी और सड़ा महकमा और उस पर वह दो कौड़ी का काम, जो रिजवी करता आ रहा था। अगर विभाग के प्रमुख होने के नाते डाइरेक्टर भी चाहता, तो कुछ नहीं कर सकता था, फिर रिजवी तो एक मामूली कर्मचारी था।

दफ्तर में मुसलमानों की संख्या कुल मिलाकर चार थी और उस पर भी नोटिस लिए जाने वाले तीन थे। युद्ध छिड़ते ही शहर के मुसलमानों में जो आतंक और भय था, उसका आभास दफ्तरों में पा लेना सबसे आसान था। दो–एक दिन हर क्षण यह लगता रहता था कि अब कोई दंगा छिड़ा, अब कोई फसाद हुआ। दरअसल, आम मुसलमान झाड़ियों में दुबके खरगोश की तरह अजीब सकते के आलम में डरा हुआ और चौकस हो गया था। लोग दरवाजे–खिड़कियाँ बंद करके धीमी आवाज में रेडियो पाकिस्तान की न्यूज सुनते और जब भी दो या चार आपस में मिलते, खरगोश के अंदाज में बातें करते।

इसी बीच एक घटना हुई। सकते के दौरान ही एक रात शहर के संभ्रांत मुसलमानों की एक आम सभा हुई और दूसरे दिन शहर के बीचोंबीच एक इमारत पर हिंदी का एक बहुत बड़ा बोर्ड लटका हुआ था– राष्ट्रीय मुस्लिम संघ।

शहर के नामी–गिरामी आदमी हामिदअली, जो दो बार हज करके लौटे थे, इसके प्रेसीडेंट चुने गए थे। हामिदअली के हस्ताक्षरों से मुसलमानों के नाम राष्ट्रीयता की शपथ दिलाने वाली कई बड़ी–बड़ी अपीलें निकाली गई थीं और इन अपीलों को प्रेस तथा अखबारों तक पहुँचाने का काम कुरैशी ने ही किया था।

'क्यों दोस्तो, लाहौर और कितना रह गया?'

युद्ध के बीच के दिनों में लगातार दो दिनों तक जैसे इसी प्रश्न से दफ्तर खुलने लगा था। टैंकों का नाश हो या आदमियों का, बड़ी अजीब–अजीब और उत्साहवर्धक अफवाहें फैली हुई थीं। इनमें सबसे बड़ी अफवाह यह थी कि पाकिस्तानी फौज को गाजर–मूली की तरह काटती अपनी फौज लगातार आगे बढ़ती जा रही है और लाहौर पर अब बस कब्जा हुआ ही चाहता है।

'क्यों साहब, बहादुरों की किसी फौज को दस–बारह मील का फासला तय करने में कितना वक्त लगता है?'

उस दिन यह सवाल सबसे पहले कुरैशी ने ही किया था। दफ्तर अभी–अभी खुला था। रिजवी भी आ चुका था और रोज की तरह चुपचाप बैठा वह कोई अखबार पलट रहा था। कुरैशी ने यह सवाल हालाँकि पूरे दफ्तर से किया था, लेकिन पहले उसने रिजवी की ओर छिछलती और मानीखेज नजरों से देख लिया था।

'दस घंटे भी लग सकते हैं, दस दिन भी और दस साल भी'

'अमाँ, दस मिनट कहिए, दस मिनट!' दफ्तर में अपनी कायरता के लिए प्रसिद्ध एक साहब ने ऐसे जोष में कहा, जैसे वह क्लर्क नहीं, फौज के कप्तान हों।

'यार, लाहौर आ जाए,? बगल की मेज से आवाज आई, 'हम तो वहीं चलकर बसने की सोच रहे हैं। सुना है कि शहर साला बेहद खूबसूरत है।'

'हाँ, है तो, लेकिन वहाँ करोगे क्या?'

'क्यों, कुछ भी किया जा सकता है – अखबार है, प्रेस है। क्यों सर, वहाँ चलकर हिंदी का प्रेस डाल लूँ, कैसा रहेगा?'

'मैं तो भाई होटल खोलूँगा।' एक दूसरे साहब ने पुलकित स्वर में कहा, 'पानी बेचो और पैसा सूँतो! साली होटल में बड़ी आमदनी है। और कुछ नहीं, तो इस गुलामी से तो पिंड छूटे...'

'कल मैं तेरह रुपए पंद्रह पैसे का मनीआर्डर करने जा रहा हूँ।' सहसा दफ्तर के बीचोंबीच और रिजवी के सामने घोषणा हुई, 'किसके नाम जानते हो?' प्रेसीडेंट अय्यूब के नाम! बेचारा बड़ा गरीब आदमी है। पारटीशन होते ही हमारे तेरह रुपए पंद्रह आने लेकर भाग गया था। यकीन न हो तो छिंदवाड़ा मिलिटरी कैंटीन का पुराना खाता देख लो...'

उसी समय रिजवी, जो अब तक सारी बातों को अनसुनी करता मेज पर गरदन झुकाए बैठा था, सहसा उठा और बिना किसी को देखे हुए चुपचाप गेट से बाहर निकल गया। एक क्षण को तो सब चुप हो गए थे, लेकिन दूसरे ही क्षण कुरैशी ने सबकी ओर देखकर आँख मारी थी और लोगों ने एक–दूसरे को कोहनियों से ठेला था।

'देख लिया दत्ती जी,' किसी ने सीधे शंकरदत्त पर हमला किया, 'ये अचानक क्या हो गया? क्या मिर्च लग गई?'

शंकरदत्त हमलावर का मुँह ताकते ही रह गए थे। कि कुरैशी ने तपाक से कहा 'अजी, दत्तजी बेचारे क्या कहेंगे! अभी परसों जब मैं राष्ट्रीय मुस्लिम संघ की अपील लेकर गया था, तो हजरत कहने लगे, काहे की अपील और क्यों?' पट्ठे ने दस्तखत करने से साफ मना कर दिया। कहने लगा, मैं क्या बेईमान हूँ, जो ईमानदारी का सबूत पेश करता फिरूँ...?'

'बत्ती बुझाओ... बत्ती बुजाओ...!

दूर से अभी स्वयंसेवकों की आवाजें आ रही थी– किसी सूनी पहाड़ी से टकराकर लौटी और मुँह चिढ़ाती–सी। बाहर अँधेरा और हैबतनाक खामोसी थी, जैसे समूचे शहर को किसी ने ठंडे और अँधेरे गार में उतार दिया हो। रह–रहकर लड़ाकू हवाई जहाजों की आवाज सहसा आकाश के किसी कोने में जनमती, फिर वह शैतानी जबान की तरह लपलपाती हुई मानो प्रत्येक घर की छत–मुँडेरों को चाटती हुई कहीं दूर निकल जाती। फिर वही हैबतनाक खामोश और बेपनाह धड़कता हुआ अँधेरा, जिसमें देर तक यूँ लगता रहता था, जैसे वह आवाज गई नहीं, अपनी छत पर रुकी हुई है।

'अब तो शहरों पर भी बम गिराए जा रहे हैं – सिविलियन्स पर!' शंकरदत्त ने साँस भरकर कहा, जैसे अपने आप से बात कर रहे हों। फिर रिजवी की ओर देखने लगे। वह दोनों घुटने उठाए गुड़ी–मुड़ी–सा बैठा था। कमरे में एक मरियल मोमबत्ती की हलकी सी रोषनी थी, जिसे खिड़की–दरवाजे बंद करके, या परदों को खींचकर रोका गया था। रोषनदान तक के षीषों पर कागज चिपकाककर उन्हें अंधा किया गया था।

'तुमने आज का अखबार देखा?' शंकरदत्त को अपनी ही आवाज कहीं दूर से आती हुई सुनाई दी, 'सिविलियन्स अस्पताल पर बमबारी और बेगुनाह मरीजों के बीमार जिस्मों के परखच्चे उड़ जाना, .. हरे राम, क्या इस क्रूरता के लिए हमें ईश्वर कभी क्षमा कर सकता है?' मुझे तो लगता है...'

उसी समट मोमबत्ती की लौ काँपकर टेढ़ी हो गई थी। लगा था कमरे के नीम उजाले फर्श को पलटती हुई अँधेरे की कोई लहर आई हो। रिजवी ने घुटने पर से सिर उठाया। उसके होंठ भी खुले लेकिन वह बोला नहीं। उसने केवल सिर हिला दिया। उठकर शंकरदत्त पास गए और मनाने वाले स्वर में अपनेपन से बोल, 'अमाँ, भूलो भी उसे!'

'किसे?'

'वही सब...?'

'किसे भूलूँ, दत्तजी?'

'क्या वही सब दुहराकर मैं फिर से तुम्हारा मन खराब करूँ?' शंकरदत्त ने अत्यंत स्नेहपूर्वक रिजवी के कंधे पर हाथ रख दिया, वसीम, मैं बराबर यही कहता रहूँगा कि नाइन्साफियों को लेकर मातम करना आज ऐसा ही है जैसे आदमी की मौत पर सिर पटकना। क्या तुम समझते हो कि अपनी बच्चों जैसी जिद से लड़कर तुम ऐसी दुनिया से जीत जाओगे, जो युद्ध से कहीं ज्यादा क्रूर है?'

'बत्ती बुझाओ..!' दूसरे ब्लॉक में से आवाज आई थी, लेकिन लगा, जैसे वे फिर क्वार्टर के सामने आ गए हों। शंकरदत्त ने उठकर परदों को एहतियातन और ठीक कर दिया।

जरा सी बात का हंगामा हो गया था।

पिछले कई दिनों से शहर में ब्लैक आउट चल रहा था। शहर कैंटोनमेंट एरिया में नहीं आता था, तो भी खतरा बना हुआ था। चाहे नागरिकता के फर्ज के नाते हो, या प्राणों के डर से, लोग बेहद चौकस और समझदार हो गए थे। ब्लैक आउट बनाए रखने के लिए हर मोहल्ले में स्वयंसेवकों के जत्थे तैयार थे।

रोज की तरह आवाज लगाते हुए आज भी स्वयंसेवकों के जत्थे आए थे, लेकिन एक जत्था इस ब्लॉक में पहुँचकर आगे नहीं बढ़ा – ऐन रिजवी के क्वार्टर के सामने आकर रुक गया था। शायद किसी खिड़की का परदा जरा सा सरक गया था और रोशनी की शहतीर क्वार्टर से कूदकर सामने की सड़क पर पड़ रही थी।

'बत्ती बुझाओ! किसी ने डपटकर आवाज लगाई थी। रिजवी घर पर मौजूद था। उसने झाँककर भी देखा था, लेकिन कोई असर लिए बिना वह चुपचाप बैठा पढ़ता रहा।

'क्यों साब, बहरे हैं?' दो नौजवानों ने आगे बढ़कर पूरी ताकत से कुंडी खटखटाई।

'क्या बात है?' कुछ क्रोध और कुछ कैफियत तलफ करने के अंदाज में रिजवी बाहर निकल आया और बात शायद यहीं से बिगड़ गई थी। 'अपना फर्ज मैं खूब समझता हूँ, बत्ती बुझी हुई है।' आखिर में रिजवी ने कहा था।

'अगर बत्ती बुझी हुई है, तो यह रोशनी कहाँ से आ रही है?' किसी ने जलकर प्रहार किया, 'क्या मेरी ससुराल से?'

'वह मोमबत्ती है। मैंने पढ़ने के लिए जलाई है।'

'क्या मोमबत्ती में रोशनी नहीं होती?'

'उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं परदे ठीक किए देता हूँ।'

'फर्क पड़ता हो या नहीं, आप बत्ती बुझाइए!' कहकर एक उत्साही युवक तीर की तरह दरवाजे की ओर बढ़ा और जिसे अधबीच में बाँह अड़ाकर रिजवी ने रोक लिया था।

'वह बत्ती नहीं बुझेगी!'

'बुझेगी!'

'नहीं बुझेगी!'

'बुझेगी!'

'जिद बेकार है,' रिजवी ने कहा था, 'पहले सामने वाले क्वार्टर्स की मोमबत्तियाँ बुझाइए!'

'उनकी उन पर छोड़िए! हम आपसे बात कर रहे हैं!'

'क्यों छोड़ दूँ? क्या उन पर हीरे–मोती जड़े हैं!'

एक क्षण को वह युवक नवयुवक हतप्रभ सा देखता रहा, फिर सहसा वह शेर की तरह यों रगजा कि सारी कॉलोनी गूँज उठी, 'यह बत्ती जरूर बुझेगी!'

सन्न, सकता पल–भर का, जिसे तोड़ते हुए अँधेरे में से एक आवाज आई, 'मार डालो जासूस को!'

'जासूस! जासूस!'

कई लमहों तक रिजवी काँपता खड़ा रहा, फिर एकाएक अँधेरे में वह उस ओर लपका, जिधर से आवाज आई थी।

देर हो चुकी थी, जब तक शंकरदत्त वहाँ पहुँचे और बीच–बचाव किया, काफी देर हो चुकी थी।

'भाईजान!' कोई दस मिनट बाद जब वे दोनों भीतर आकर संयत हुए तो इस रूँधी आवाज में शंकरदत्त चौंके थे। भीतरी दरवाजे की चौखट में यह बेगम रिजवी की आवाज थी, गले में फँसी–फँसी और अवरुद्ध।

'भाईजान, हम पर एक अहसान कीजिए। इनसे कहिए कि मुझे और बच्चों को जरा जहर देकर सुला दें, फिर चाहे ये दुनिया से जूझते फिरें... हम... हम... हमारा खुदा है...'

आगे उनका स्वर यकबयक उमड़ने वाली रुलाई में फँसकर डूब गया था और शंकरदत्त को लगा था कि सहसा उनके टेंटुए के आसपास काँटे–से उग आए हैं। उन्होंने दरवाजे की ओर देखा, जहाँ बेगम रिजवी के दुपट्टे का पल्लू झाँक रहा था, पर कुछ बोल नहीं पाए। रिजवी के दोनों बच्चे अप्पू और सबा परदे से लगे हुए और भयभीत खड़े थे। खासकर अप्पू जैसी खामोश, कातर और डरी हुई आँखों से अपने पिता की ओर देख रहा था, उससे शंकरदत्त सहम कर रह गए। यकबयक खयाल आया था कि वे भी हिंदू हैं। इतने बरसों में इस घर में पहली बार... फिर जैसे यह भी पहली बार ध्यान आया कि रिजवी अब भी उस हुलिए में बैठा हुआ है, 'फटी हुई कमीज, नुचे हुए बिखरे बाल, और निचले होंठ पर चोट का लहू–जमा निशान..'

'अप्पू बेटे!' सहमती हुई आवाज में शंकरदत्त ने धीरे से पुकारा, 'बेटे, अपने अंकल के पास आओ!'

अप्पू नहीं आया। एक बार उन्हीं आँखों से घूरकर वह परदे से और सट गया।

'पापा के लिए दूसरे कपड़े ले आओ, बेटे!' उन्होंने हतप्रभ होते हुए कहा था।

थोड़ी देर में कपड़े आए। लेकर अप्पू ही आया था, लेकिन कपड़े रखकर बिना किसी से कुछ कहे वह लौट गया था। शंकरदत्त हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ना चाहता था, लेकिन वह मछली की तरह हाथ से फिसलता चला गया था। बहुत हल्के शंकरदत्त को कहीं चोट भी लगी, लेकिन उन्होंने फीकी हँसी हँसकर धीरे से कहा था, 'अप्पू हमसे नाराज है!'

पता नहीं रिजवी ने उनकी बात सुनी थी या नहीं, स्वयं शंकरदत्त उसे देखते हुए भी नहीं देख रहे थे।

क्या अप्पू सचमुच नाराज नहीं है? क्या लोग ठीक कहते हैं कि बच्चों की आँख में अच्छे या बुरे को सहसा भाँप जाने की शक्ति होती है? लेकिन इतने बरसों में वे यकबयक बुरे कैसे हो गए और क्यों? और क्यों? कहीं ऐसा नहीं है कि उन्हें लेकर घर पर इधर कोई बात हुई हो और बच्चे ने चुपचाप उसका असर ले लिया हो? एक बार यह भी मन में आया था, लेकिन अभी कल तक?

युद्ध का ग्यारहवाँ दिन चल रहा था। वही ब्लैक आउट और अँधेरा! लेकिन कल भी वे ऐसे ही लुढ़क आए थे, जैसे ढलान की ओर राह खोजता जल... कोई अगर संतानहीन शंकरदत्त से यह पूछता कि अक्सर शामें इस घर में गुजारने के पीछे सचमुच कौन है? रिजवी या अप्पू, तो क्या वह जवाब दे सकते थे? और सचमुच कौन है! रिजवी की बरसों पुरानी दोस्ती या अप्पू की दहलीज पर से ही गले लिपट जाने वाली वह किलकारी, 'अपने अंकल आ गए.. अपने अंकल आ गए...!'

कमरे में आग से फूटने वाले काँपते उजाले की तरह जरा–सी रोशनी और बहुत–सा अँधेरा था। रह–रहकर तेज हवाई जहाजों का उसी तरह ऐन छत पर ठहर जानाक़ बाहर शहर का शहर कब्र के पत्थर की तरह ठंडा और खामोश था।

'अपने अंकल!' रोज की तरह अप्पू कल भी आ गया था, लेकिन आदत के मुताबिक न तो उसने शंकरदत्त के गले में अपनी छोटी–छोटी बाँहों का गजरा डाला था और न...

'अपने अंकल, आपको पता है, यह लड़ाई कब बंद होगी?

शंकरदत्त बेतरह चौंक गए थे, 'क्यों बेटे?'

'बताइए, कब बंद होगी?'

'लेकिन क्यों?'

'अम्मी पूछ रही हैं। कहती हैं, अंकल से पूछकर आओ।'

शंकरदत्त ने भीतरी परदे की ओर देखा। कहीं बेगम रिजवी तो नहीं खड़ी हैं? नहीं थीं। लेकिन सवाल अकेले अंकल से क्यों, पापा से क्यों नहीं? एक पल को उन्हें लगा था, जैसे वह कटघरे की ओर धकेले जा रहे हों। उसके छोटे से बदन को समेटते हुए उन्होंने धीरे से कहा, 'पता नहीं बेटे!'

अप्पू कुछ और कहता कि दूर कहीं उसी आवाज ने जन्म लिया। फिर कुछ ही पलों में वह आवाज सारे आकाश और सन्नाटे को रौंदती इतनी निष्ठुर और खतरनाक होकर पास आने लगी कि अप्पू ने कहा था, 'अंकल, आपको डर नहीं लगता?'

'लगता है, बेटे!'

'आपको भी?'

'हाँ, हमें भी।'

'यह जहाज लड़ाकू था न अंकल?'

शंकरदत्त ने सिर हिला दिया।

'यह बम गिराने जा रहा है?'

'अप्पू, अब अंदर चलो! बीच में रिजवी ने टोक दिया।'

'लड़ाई में लड़ता कौन है, अंकल?'

'सैनिक लड़ते हैं, बेटे।'

'सैनिक कैसे होते हैं?'

'जो फौज में होते हैं, वे सैनिक कहलाते हैं।'

'अच्छा समझ गए। जैसे हमारे पाकिस्तान वाले मम्मा सैनिक हैं... है न?'

'हाँ, बेटे, वे भी लड़ रहे होंगे।'

'बंदूक से?'

'हाँ, बंदूकों से, हथगोलों से, टैंकों से।'

'इन्हें फौज में भेजता कौन है अंकल?'

'देश भेजता है बेटे।'

'देश? देश कौन है?'

'बेटे... देश...' शंकरदत्त को एक पल सोचना पड़ा था, 'देश वो है जिसमें लोग रहते हैं, जैसे हम–तुम – हमीं देश हैं, बेटे!'

'लेकिन अंकल आप तो कह रहे थे कि आपको लड़ाई से डर लगता है। फिर इन्हें क्यों भेजा?'

'अप्पू!'

रिजवी ने इस बार डाँटने के स्वर में पुकारा था। अप्पू ने एक लम्हे को अपने पापा की ओर देखा था, फिर उनकी ओर मुड़कर बोला, 'अच्छा अंकल, एक बात और – सैनिक डरते नहीं हैं?'

'किससे?'

'लड़ाई में, गोली–वोली से। उनके लगती नहीं है?'

'लगती है।'

'सच्ची–मुच्ची की?'

'हाँ।'

'फिर वे मर जाते हैं?'

'मर जाते हैं।'

'सच्ची–मुच्ची?'

'हाँ बेटे, सच्ची–मुच्ची।'

अप्पू की छोटी सी पेशानी में बल पड़ा था और उसके छोटे–छोटे होंठ आश्चर्य और चिंता से खुल गए थे। एक पल उन्हें अजीब सी आँखों से घूरने के बाद सहसा पूछा था, 'तो अंकल, उन्हें पुलिस क्यों नहीं पकड़ती?'

क्या शंकरदत्त उस सवाल का जवाब दे सकते हैं? अगर रिजवी ने इस दफा और भी सख्ती से डाँटकर अप्पू को खामोश कर दिया होता, तो वह क्या कहते?

'बहुत तंग करता है!' अप्पू के चले जाने के बाद रिजवी ने धीरे से कहा।

'हाँ, सचमुच तंग करता है!' साँस भरकर शंकरदत्त बोले थे, 'वसीम, तुम्हें उस दिन की याद है – उस दिन की, जब अप्पू ने तुमसे एक सवाल कर दिया था और जिसका तुम्हारे पास बिल्कुल जवाब नहीं था। वह बात आज भी मुझे तंग करती है...'

कोई छुट्टी का दिन था। यही बैठक। यही दोनों। यही देर तक चलने वाली खामोशी। बेगम रिजवी अंदर थीं। अप्पू बाहर अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। अचानक जाने क्या हुआ कि खेल छोड़कर वह सीधे पापा के पास आ पहुँचा था और फिर गोली दागने जैसा उसका यह सवाल था।

'पापा, हम हिंदू हैं कि मुसलमान?'

'क्यों?' बेतरह चौंकते हुए भी रिजवी ने उसे टालना चाहा था, 'बाहर खेलो, बेटे! हमें बात करने दो'

'नहीं, पहले बताइए,' अप्पू मचल गया था, 'हम हिंदू हैं कि मुसलमान?'

'लेकिन क्यों?'

'बताइए?'

'अच्छा, मुसलमान।'

'अल्ला मियाँ कहाँ रहते हैं पापा, ऊपर आसमान में न?'

'हाँ।'

'और भगवान?'

'वे भी वहीं।'

'वहीं?' कहते हुए अप्पू की आँखों में एक बहुत गहरा प्रश्न तैर रहा था।

आगे सवाल न पूछे इसलिए रिजवी ने कहा, 'जाओ, बाहर खेलो...' पर अप्पू कोई अगला सवाल पूछने के लिए उतावला था और वे दोनों अपनी जान बचाने के लिए... रिजवी ने निगाह बचाने के लिए दालान की तरफ देखा।

दालान में टँगे आईने पर बैठी एक गौरैया हमेशा की तरह अपनी परछाई पर चोंच मार रही थी।

प्रतिक्रिया– एक

शानी की कहानी 'युद्ध' : एक गहराईपूर्ण विश्लेषण

भूमिका : शानी का लेखन हिंदी साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक यथार्थ के तीखे विश्लेषण के लिए जाना जाता है। वे सत्ता, धर्म, जाति, और वैचारिक संघर्षों को जिस पैनेपन से प्रस्तुत करते हैं, वह उन्हें अपने समकालीनों से अलग करता है। 'युद्ध' कहानी केवल एक राजनीतिक अथवा सैन्य संघर्ष की कथा नहीं है, बल्कि यह मानव चेतना के भीतर चलने वाले युद्धों की गहन पड़ताल है।

कथानक और संरचना : कहानी का बाहरी ढांचा एक शहर या कस्बे के परिवेश में घटने वाली राजनीतिक हिंसा और उसकी प्रतिक्रियाओं पर केंद्रित है। इसमें वामपंथी आंदोलन, प्रशासनिक दमन, आम जनता की चुप्पी और एक विचारशील व्यक्ति का मानसिक द्वंद्व एक साथ बुने गए हैं। शानी कहानी में घटनाओं की एक परंपरागत 'बता देने वाली' शैली से बचते हैं और भीतरू यथार्थ (पददमत तमंसपजल) के माध्यम से पाठक को एक ऐसे अनुभव में ले जाते हैं जहाँ युद्ध बाहर उतना नहीं है, जितना अंदर है।

प्रमुख पात्र :

नायक (विचारक/बुद्धिजीवी व्यक्ति) : कहानी का केंद्रीय पात्र वह है जो स्पष्ट रूप से कोई "नायक" नहीं, बल्कि एक आत्मसंघर्षशील नागरिक है। उसके मन में दमन, सत्ता और विचारधारा को लेकर कई असहज प्रश्न हैं। वह हिंसा से ग्रस्त है, लेकिन मौन रहकर उससे बच भी जाना चाहता है। यह पात्र बुद्धिजीवियों की नैतिक दुविधा का प्रतीक है, जो अन्याय के ख़िलाफ़ सोचते तो हैं, पर बोलने से डरते हैं।

वामपंथी कार्यकर्ता/संगठक : वे संघर्षशील वर्ग चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके भीतर एक यूटोपियन समाज की आकांक्षा है, पर रास्ता हिंसात्मक है। उनके माध्यम से कहानी विचारधारात्मक युद्ध को दर्शाती है।

सत्ता/प्रशासन/पुलिस : वे कहानी में प्रकट पात्र नहीं होते, लेकिन उनकी उपस्थिति एक दमनकारी ताकत के रूप में निरंतर बनी रहती है–

जैसे अदृश्य सत्ता जो विचारों से नहीं, गोलियों से संवाद करती है।

विषयवस्तु और विचारधारा :

आंतरिक युद्ध : कहानी का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध बाहरी नहीं, अंतरात्मा का युद्ध है। नायक को समझ नहीं आता कि क्या चुप रहना नैतिक है या बोलना खतरा मोल लेना। यह उस नैतिक निरपेक्षता पर तीखा प्रश्न है, जहाँ व्यक्ति "शांति" के नाम पर अन्याय को सहता रहता है।

विचार बनाम हिंसा : शानी यह भी दिखाते हैं कि जब विचारों को दबाया जाता है, तब वे हिंसा में रूपांतरित हो जाते हैं। यह कहानी एक चेतावनी भी है कि यदि राज्य और समाज संवाद नहीं करेंगे, तो बौद्धिक युद्ध अंततः रक्तरंजित हो जाएगा।

सत्ता और डर : कहानी का हर संवाद, हर मौन और हर संकेत सत्ता की हिंसा और उसके सामने व्यक्ति की विवशता को रेखांकित करता है।

प्रतीकात्मकता और बिंब : 'युद्ध' स्वयं एक प्रतीक है। यह केवल गोली–बंदूक का नहीं, बल्कि न्याय बनाम सत्ता, सत्य बनाम सुविधा, और मनुष्यता बनाम डर का युद्ध है।

सन्नाटा – कहानी में बार–बार आने वाला मौन, 'डर' का प्रतिनिधि है। यह दिखाता है कि कैसे सत्ता ने लोगों की आवाज छीन ली है।

पक्षी, खिड़की, आईना (यदि उल्लेखित हो)। ये पात्र की मानसिक स्थिति और चेतना के द्वंद्व को दर्शाते हैं।

भाषा और शैली : शानी की भाषा यहाँ बेहद संक्षिप्त, सधी हुई, और प्रभावशाली है। वे बहुत कम शब्दों में भी भारी बात कहने की कला में माहिर हैं। उनकी शैली विवेचनात्मक न होकर प्रयोगात्मक यथार्थवाद की ओर झुकी हुई है।

समकालीन सन्दर्भ और प्रासंगिकता : आज के भारत या किसी भी समकालीन समाज में जहाँ सत्ता, विचार, और असहमति के बीच संघर्ष चल रहा है, शानी की यह कहानी एक आइना बनकर सामने आती है। यह उन सभी के लिए सवाल खड़ा करती है जो अन्याय को देखकर भी चुप रहते हैं।

निष्कर्ष : 'युद्ध' केवल एक राजनीतिक कहानी नहीं है, यह चेतना का दस्तावेज़ है। शानी ने इसमें दिखाया है कि असली युद्ध बमों से नहीं, विचारों और आत्मा के स्तर पर लड़े जाते हैं,, और जब समाज चुप होता है, तब युद्ध और भी हिंसक हो जाता है।

यह कहानी हमें अपने समय, अपने डर और अपनी चुप्पियों से सामना करने को विवश करती है। यह साहित्य का कार्य भी है और शानी इस उद्देश्य में पूरी तरह सफल होते हैं।

रवि शर्मा, बीए द्वितीय वर्ष

प्रतिक्रिया– दो

मैंने लेखक शानी की 'युद्ध' कहानी पढ़ी, जिसको पढ़ने के बाद मेरे मन में जो भी विचार आए या जो भी मैंने उस समय अनुभव किया, उसे मैं इस प्रकार से कलमबद्ध करने जा रही हूँ – इस कहानी में भारत–पाक युद्ध के दौरान घटित घटनाओं का वर्णन हुआ है। इसमें उस समय जो हिंदू मुसलमानों के अंदर चल रहे विचारों, उनकी स्थिति, उनके भय इत्यादि का चित्रण हुआ है। इससे पढ़कर युद्ध के दौरान जो भी गतिविधियां हो रही थी ,वो मुझे बिल्कुल मेरे आँखो के समक्ष प्रत्यक्ष तौर पर अनुभव हो रहा था। इस कहानी में यौद्ध के दौरान दफ़्तर में रिजवी जो की एक मुसलमान था, के साथ बहुत बुरा व्यव्हार हो रहा था। दफ़्तर में केवल चार ही मुसलमान थे। जब तक वह यह ताने सुन सकता था, उसने सुना। लेकिन इतना सबकुछ उनके खिलाफ सुनकर उसके सब्र का बांध टूट ही गया। वह बिना कुछ कहे ही आँखे झुकाकर दफ्तर से बाहर चला गया। इससे रिजवी की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है कि उसे कैसा अनुभव हो रहा होगा।

युद्ध की स्थिति सचमुच बहुत ही भयानक व डरावनी थी। चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छाया हुआ था। पूरे देश में ब्लैक आउट था। हर समय एक डर, भय लगा रहता था कि पता नहीं कौन सा पल अपना अंतिम क्षण हो। सच ही है कि पूरी दुनिया चाहे एक दूसरे के खिलाफ खड़ी हो किंतु उसका मित्रता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मित्र विपरीत परिस्थितियों में भी एक दूसरे के साथ हमेशा खड़े रहते हैं। वैसे ही शंकरदत्त भी रिजवी को स्नेहपूर्वक समझाते है कि जिन बातों से तुम इतना ज्यादा विचलित हो रहे हो इन बातों की ओर तुम ध्यान मत दो। तुम समझते हो की बच्चों जैसी जिद से लड़कर तुम इसी दुनिया से जीत जाओगे जो की यौद्ध से बहुत ज्यदा क्रूर है।

इस कहानी में जो अप्पू को प्रश्नों के उत्तर जानने की जिज्ञासा है वही हमारे मन मे भी लगातार यही प्रश्न उठ रहे थे। अप्पू के मन मे अनेक प्रश्न थे किंतु उसके माता–पिता के पास उसके सवालों के जवाब नहीं होते थे। जिस वजह से वे हमेशा अप्पू के प्रश्नों से बचने की कोशिश करते रहते हैं। अप्पू यह जानने की कोशिश कर रहा था कि क्या भगवान् और अल्लाह अलग है, वे कहाँ रहते हैं, क्या वे साथ में ही रहते हैं। लेकिन रिजवी और उसकी पत्नी के पास इसका कोई जवाब नहीं था। जिस कारण वह इस बात को टाल लेते थे।

"दालान में टंगे आईने पर बैठी एक गोरैया हमेशा की तरह अपनी परछाई पर चोंच मार रही थी"। इस अंतिम पंक्ति से ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे यह युद्ध के समय यह हिंदू मुसलमानों की ही बात कही गयी है। दोनों एक ही है लेकिन अपनी ही परछाई को अपना शत्रु मानकर अपने आप पर ही प्रहार करके जख्मी करने की कोशिश करते हैं।

प्रिया, बीए प्रथम वर्ष

दो– एटम बम

अमृतलाल नागर

चेतना लौटने लगी। साँस में गंधक की तरह तेज़ बदबूदार और दम घुटाने वाली हवा भरी हुई थी। कोबायाशी ने महसूस किया कि बम के उस प्राण–घातक धड़ाके की गूँज अभी–भी उसके दिल में धँस रही है। भय अभी–भी उस पर छाया हुआ है। उसका दिल ज़ोर–ज़ोर से धड़क रहा है। उसे साँस लेने में तकलीफ़ होती है, उसकी साँस बहुत भारी और धीमी चल रही है।

हारे हुए कोबायाशी का ज़र्ज़र मन इन दोनों अनुभवों से खीझकर कराह उठा। उसका दिल फिर गफ़लत में डूबने लगा। होश में आने के बाद, मृत्यु के पंजे से छूटकर निकल आने पर जो जीवनदायिनी स्फूर्ति और शांति उसे मिलनी चाहिए थी, उसके विपरीत यह अनुभव होने से ऊबकर, तन और मन की सारी कमज़ोरी के साथ वह चिढ़ उठा। जीवन कोबायाशी के शरीर में अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए विद्रोह करने लगा। उसमें बल का संचार हुआ।

कोबायाशी ने आँखें खोलीं। गहरे कुहासे की तरह दम घुटाने वाला ज़हरीला धुआँ हर तरफ़ छाया हुआ था। उसके स्पर्श से कोबायाशी को अपने रोम–रोम में हज़ारों सुइयाँ चुभने का–सा अनुभव हो रहा था। रोम–रोम से चिनगियाँ छूट रही थीं। उसकी आँखों में भी जलन होने लगी; पानी आ गया। कोबायाशी ने घबराकर आँखें मींच लीं।

लेकिन आँखें बंद कर लेने से तो और भी ज़्यादा दम घुटता है। कोबायाशी के प्राण घबरा उठे। वे कहीं भी सुरक्षित न थे। मौत अँधेरे की तरह उस पर छाने लगी। यह हीनावस्था की पराकाष्ठा थी। कोबायाषी की आत्मा रो उठी। हारकर उसने फिर अपनी आँखें खोल दीं। हठ के साथ वह उन्हें खोले ही रहा। ज़हरीला धुआँ लाल–मिर्च के पाउडर की तरह उसकी आँखों में भर रहा था। लाख तकलीफ़ हो, मगर वह दुनिया को कम–से–कम देख तो रहा है। बम गिरने के बाद भी दुनिया अभी नेस्तनाबूद नहीं हुई... आँखें खुली रहने पर यह तसल्ली तो उसे हो ही रही है। गर्दन घुमाकर उसने हिरोशिमा की धरती को देखा, जिस पर वह पड़ा हुआ था। धरती के लिए उसके मन में ममत्व जाग उठा। कमज़ोर हाथ आप–ही–आप आगे बढ़कर अपने नगर की मिट्टी को स्पर्ष करने का सुख अनुभव करने लगे। कृमन कहीं खोया। अपने अंदर उसे किसी ज़बरदस्त कमी का एहसास हुआ। यह एहसास बढ़ता ही गया। आंतरिक ह्रदय से सुख का अनुभव करते ही उसकी कल्पना दुःख की ओर प्रेरित हुई। स्मृति झकोले खाने लगी।

चेतन बुद्धि पर छाए हुए भय से बचने के लिए अंतर–चेतना की किसी बात की विस्मृति का मोटा पर्दा पड़ रहा था। मौत के चंगुल से छूटकर निकल आने पर, पार्थिवता की बोझ–स्वरूप धरती के स्पर्श से, जीवन को स्पर्श करने का सुख उसे प्राप्त हुआ था; परंतु भावना उत्पन्न होते ही उसके सुख में घुन भी लग गए। भय ने नींवें डगमगा दीं। अपनी अनास्था को दबाने के लिए वह बार–बार ज़मीन को छूता था। अंतर के अविश्वास को चमत्कार का रूप देते हुए, इस खुली जगह में पड़े रहने के बावजूद अपने जीवित बच जाने के बारे में उसे भगवान की लीला दिखाई देने लगी।

करुणा सोते की तरह दिल से फूट निकली। पराजय के आँसू इस तरह अपना रूप बदलकर दिल में घुमेड़े ले रहे थे। ज़हरीले धुएँ के कारण आँखों में भरे हुए पानी के साथ–साथ वे आँसू भी घुल–मिलकर गाल से ढुलकते हुए ज़मीन पर टपकने लगे।

बेहोश होने से कुछ मिनट पहले उसने जिस प्रलय को देखा था, उसकी विकरालता अपने पूरे वज़न के साथ कोबायाशी की स्मृति पर आघात करके उसके टुकड़े–टुकड़े कर रही थी। वह ठीक–ठीक सोच नहीं पा रहा था कि जो दृश्य उसने देखा, वह सत्य था क्या?. ..धड़ाका! जूड़ी–बुखार की कँपकँपी की तरह ज़मीन काँप उठी थी। बम था.. दुश्मनों का हवाई हमला। हज़ारों लोग अपने प्राणों की पूरी शक्ति लगाकर चीख उठे थे। ...कहाँ हैं वे लोग? वे प्राणांतक चीखें, वह आर्त्तनाद जो बम के धड़ाके से भी अधिक ऊँचा उठ रहा था...वह इस समय कहाँ है? खुद वह इस समय कहाँ है? और...

कुछ खो देने का एहसास फिर हुआ। कोबायाशी विचलित हुआ। उसने कराहते हुए करवट बदलकर उठने की कोशिश की, लेकिन उसमें हिलने की भी ताब न थी। उसने फिर अपनी गर्दन ज़मीन पर डाल दी। हवा में काले–काले ज़र्रे भरे हुए थे। धुआँ, गर्मी, जलन, प्यास... उसका हलक सूखा जा रहा था। बेचैनी बढ़ रही थी। वह उठना चाहता था। उठकर वह अपने चारों तरफ़ देखना चाहता था। क्या? ...यह अस्पष्ट था। उसके दिमाग में एक दुनिया चक्कर काट रही थी। नगर, इमारतें, जनसमूह से भरी हुई सड़कें, आती–जाती सवारियाँ, मोटरें, गाड़ियाँ, साइकिलें... और... और... दिमाग इन सब में खोया हुआ कुछ ढूँढ़ रहा था; अटका, मगर फौरन ही बढ़ गया। जीवन के पच्चीस वर्ष जिस वातावरण से आत्मवत् परिचित और घनिष्ठ रहे थे, वह उसके दिमाग की स्क्रीन पर चलती–फिरती तस्वीरों की तरह नुमायाँ हो रहा था; लेकिन सब कुछ अस्पष्ट, मिटा–मिटा–सा! कल्पना में वे चित्र बड़ी तेज़ी के साथ झलक दिखाकर बिखर जाते थे। इससे कोबायाशी का मन और भी उद्विग्न हो उठा।

प्यास बढ़ रही थी। हलक में काँटे पड़ गए थे। ...और उसमें उठने की भी ताब न थी। एक बूँद पानी के लिए ज़िंदगी देह को छोड़कर चले जाने की धमकी दे रही थी, और शरीर फिर भी नहीं उठ पाता था। कोबायाशी को इस वक़्त मौत ही भली लगी। बड़े दर्द के साथ उसने आँखें बंद कर लीं।

मगर मौत न आई।

कोबायाशी सोच रहा था... "मैंने ऐसा कौन–सा अपराध किया, जिसकी यह सज़ा मुझे मिल रही है? अमीरों और अफ़सरों को छोड़कर कौन ऐसा आदमी था, जो यह लड़ाई चाहता था? दुनिया अगर दुश्मनी निकालती, तो उन लोगों से। हमने उनका क्या बिगाड़ा था? हमें क्यों मारा गया? ...प्यास लग रही है। पानी न मिलेगा। ऐसी बुरी मौत मुझे क्यों मिल रही है? ईश्वर! मैंने ऐसा क्या अपराध किया था?

करुणासागर ईश्वर कोबायाशी के दिल में उमड़ने लगा। आँखों से गंगा–जमुना बहने लगी। सबसे बड़े मुंसिफ़ के हुज़ूर में लाठी और भैंसवाले न्याय के विरुद्ध वह रो–रोकर फ़रियाद कर रहा था। आँसू हलाकान किए दे रहे थे। लंबी–लंबी हिचकियाँ बँध रही थी, जिनसे पसलियों को और सारे शरीर को, बार–बार झटके लग रहे थे। इस तरह, रोने से दम घोंटने वाला ज़हरीला धुआँ जल्दी–जल्दी पेट में जाता था। उसका जी मिचलाने लगा। उसके प्राण अटकने लगे।

...प्राणों के भय से एक लंबी हिचकी को रोकते हुए जो साँस खींची तो कई पल तक वह उसे अंदर ही रोके रहा; फिर सुबकियों में वह धीरे–धीरे टूटी। रो भी नहीं सकता! ..कोबायाशी की आँखों में फिर पानी भर आया। कमज़ोर हाथ उठाकर उसने बेजान–सी उँगलियों से अपने आँसू पोंछे।

आँखों के पानी से उँगलियों के दो पोर गीले हुए; उतनी जगह में तरावट आई। कोबायाशी की काँटों–पड़ी ज़बान और हलक को फिर से तरावट की तलब हुई। प्यास बगुले–सी फिर भड़क उठी। हठात् उसने अपनी आँसुओं से नम उँगलियाँ ज़बान से चाट लीं। दो उँगलियों के बीच में बिखरी हुई आँसुओं की एक बूँद उसकी ज़बान का ज़ायका बदल गई। और उसे पछतावा होने लगा...इतनी देर रोया, मगर बेकार ही गया। उसकी फिर से रोने की तबिअत होने लगी, मगर आँसू अब न निकलते थे। कोबायाशी के दोनों हाथों में ताक़त आ गई। नम आँखों से लेकर गीले गालों के पीछे कनपटियों तक आँसू की एक बूँद जुटाकर अपनी प्यास बुझाने के लिए वह उँगलियाँ दौड़ाने लगा। आँसू खुश्क हो चले थे; और कोबायाशी की प्यास दम तोड़ रही थी।

चक्कर आने लगे। ग़फ़लत फिर बढ़ने लगी। बराबर सुन्न पड़ते जाने की चेतना अपनी हार पर बुरी तरह से चिढ़ उठी। और उसकी चिढ़ विद्रोह में बदल गई। गुस्सा शक्ति बनकर उसके शरीर में दमकने लगा... क़ाबू से बाहर होने लगा। माथे की नसें तड़कने लगीं। वह एकदम अपने क़ाबू से बाहर हो गया। दोनों हाथ टेककर उसने बड़े ज़ोम के साथ उठने की कोशिश की। वह कुछ उठा भी। कमज़ोरी की वजह से माथे में फिर मुरछा आने लगी। उसने सँभाला..मन भी, तन भी। दोनों हाथ मज़बूती से ज़मीन पर टेके रहा। हाँफते हुए, मुँह से एक लंबी साँस ली; और अपनी भुजाओं के बल पर घिसटकर वह कुछ और उठा। पीठ लगी तो घूमकर देखा.. पीछे दीवार थी। उसने ज़िंदगी की एक और निशानी देखी। कोबायाशी का हौसला बढ़ा। मौत को पहली शिकस्त देकर पुरुषार्थ ने गर्व का बोध किया; परंतु पीड़ा और जड़ता का ज़ोर अभी भी कुछ कम न था। फिर भी उसे शांति मिली। दीवार की तरफ़ देखते ही ध्यान बदला। सिर उठाकर ऊँचे देखा, दीवार टूट गई थी। उसे आश्चर्यमय प्रसन्नता हुई। दीवार से टूटा हुआ मलबा दूसरी तरफ़ गिरा था। भगवान ने उसकी कैसी रक्षा की। जीवन के प्रति फिर से आस्था उत्पन्न होने लगी। टूटी हुई दीवार की ऊँचाई के साथ–साथ उसका ध्यान और ऊँचा गया। उसे ध्यान आया कि यह तो अस्पताल की दीवार है। ...अभी–अभी वह अपनी पत्नी को भरती करा के बाहर निकला था। सबेरे से उसे दर्द उठ रहे थे, नई ज़िंदगी आने को थी। पत्नी, जिसे बच्चा होने वाला था ...डॉक्टर, नर्स, मरीज़ों के पलंग...डॉक्टर ने उससे कहा था... 'बाहर जाकर इंतिज़ार करो।' वह फिर बाहर आकर अस्पताल के नीचे ही कंकड़ों की कच्ची सड़क पर सिगरेट पीते हुए टहलने लगा था। आज उसने काम से भी छुट्टी ले रखी थी। वह बहुत खुश था। ..जब अचानक आसमान पर कानों के पर्दे फाड़ने वाला धमाका हुआ था। अँधा बना देने वाली तीन प्रकाश की किरणें कहीं से फूटकर चारों तरफ़ बिखर गईं। पलक मारते ही काले धुएँ की मोटी चादर बादलों से घिरे हुए आसमान पर तेज़ी से बिछती चली गई। काले धुएँ की बरसात होने लगी। चमकते हुए विद्युत्कण सारे वातावरण में फैल गए थे। सारा शरीर झुलस गया; दम घुटने लगा था। सैकड़ों चीख़ें एक साथ सुनाई दी थी। इस अस्पताल से भी गई होंगी। दीवार उसी तरफ़ गिरी है। और उन चीख़ों में उसकी पत्नी की चीख भी ज़रूर शामिल रही होगी। ... कोबायाशी का दिल तड़प उठा। उसे अपनी पत्नी को देखने की तीव्र उत्कंठा हुई।

होश में आने के बाद पहली बार कोबायाशी को अपनी पत्नी का ध्यान आया था। बहुत देर से जिसकी स्मृति खोई हुई थी, उसे पाकर कोबायाशी को एक पल के लिए राहत हुई। इससे उसकी उत्कंठा का वेग और भी तीव्र हो गया।

साल–भर पहले उसने विवाह किया था। एक वर्ष का यह सुख उसके जीवन की अमूल्य निधि बन गया था। दुःख, यातना और संघर्ष के पिछले चौबीस वर्षों के मरुस्थल–से जीवन में आज की यह महायंत्रणा जुड़कर सुख–शांति के एक वर्ष को पानी की एक बूँद की तरह सोख गई थी।

बचपन में ही उसके माँ–बाप मर गए थे। एक छोटा भाई था, जिसके भरण–पोषण के लिए कोबायाशी को दस बरस की उम्र में ही बुजुर्गों की तरह मर्द बनना पड़ा था। दिन और रात जी तोड़कर मेहनत–मजूरी की, उसे शाहज़ादे की तरह पाल–पोसकर बड़ा किया। तीन बरस हुए वह फ़ौज में भरती होकर चीन की लड़ाई पर चला गया। और फिर कभी न लौटा।

अपने भाई को खोकर कोबायाशी ज़िंदगी से ऊब गया था। जीवन से लड़ने के लिए उसे कहीं से प्रेरणा नहीं मिलती थी। वह निराश हो चुका था। बेवा मकान–मालकिन की लड़की उसके जीवन में नया रस ले आई। उनका विवाह हुआ। ...और उसके घर में एक नई ज़िंदगी आने वाली थी। आज सवेरे से ही वह बड़े जोश में था। उसके सारे जोश और उल्लास पर यह गाज गिरी! ज़हरीले धुएँ की तपिश ने उसके अंतर तक को भून दिया था। वेदना असह्य हो गई थी... और चेतना लुप्त हो गई।
अपनी पत्नी से मिलने के लिए कोबायाशी सब खोकर तड़प रहा था। वह जैसे बच गया। वैसे ही भगवान ने षायद उसे भी बचा लिया हो; लेकिन दीवार तो उधर गिरी है। ..."नहीं!"

... कोबायाशी चीख़ उठा। होश में आने के बाद पहली बार उसका कंठ फूटा था। सारे शरीर में उत्तेजना की एक लहर दौड़ गई। स्वर की तेज़ी से उसके सूखे हुए निष्प्राण कंठ में ख़राश पैदा हुई। प्यास फिर होश में आइ। कोबायाशी के लिए बैठा रहना असह्य हो गया। अंदरूनी ज़ोम का दौरा कमज़ोर शरीर को झिझोड़कर उठाने लगा। दीवार का सहारा लेकर वह अपने पागल जोश के साथ तेज़ी से उठा। वह दौड़ना चाहता था। दिमाग़ में दौड़ने की तेज़ी लिए हुए, कमज़ोर और डगमगाते हुए पैरों से वह धीरे–धीरे अस्पताल के फाटक की तरफ़ बढ़ा।

फाटक टूटकर गिर चुका था। अंदर मलबा–मिट्टी ज़मीन की सतह से लगा हुआ पड़ा था। कुछ नहीं... वीरान! जैसे यहाँ कभी कुछ बना ही न था। सब मिट्टी और खंडहर! दूर–दूर तक वीरान... ख़ाली! ख़ाली! ख़ाली! उसकी पत्नी नहीं है। उसकी दुनिया नहीं है। वह दुनिया, जो उसने पच्चीस बरसों तक देखी, समझी और बरती थी, आज उसे कहीं भी नहीं दिखाई पड़ती। सपने की तरह वह काफ़ूर हो चुकी है।

मीलों तक फैली हुई वीरानी को देखकर वह अपने को भूल गया, अपनी पत्नी को भूल गया। इस महानाश के विराट शून्य को देखकर उसका अपनापन उसी में विलीन हो गया। उसकी शक्ति उस महाशून्य में लय हो गइ। जीवन के विपरीत यह अनास्था उसे चिढ़ाने लगी। टूटी दीवार का सहारा छोड़कर वह बेतहाशा दौड़ पड़ा। वह ज़ोर–ज़ोर से चीख़ रहा था... "मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?" .. .मीलों तक उजड़े हुए हिरोशिमा नगर के इस खंडहर में लाखों निर्दोष प्राणियों की आत्मा बनकर पागल कोबायाशी चीख़ रहा था... "मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?"

कैंप अस्पताल में हज़ारों ज़ख्मी और पागल लाए जा रहे थे। डॉक्टरों को फ़ुर्सत नहीं, नर्सों को आराम नहीं; लेकिन इलाज कुछ भी नहीं हो रहा था। क्या इलाज करे? चारों ओर चीख़–चिल्लाहट, दर्द और यंत्रणा का हंगामा! "गोरा... दुश्मन! ख़ुदा.... दुश्मन! बादशाह, ..दुश्मन!" ...पागलपन के उस शोर में हर तरफ़ अपने लिए दर्द का, अपने परिवार और बच्चों के लिए सवाल था, जिसकी यह सज़ा उन्हें मिली है! और दुश्मनों के लिए नफ़रत थी, जिन्होंने बिना किसी अपराध के उनकी जान ली।
अस्पताल के बरामदे में एक मरीज़ दहन फाड़कर चिल्ला उठा.... "मुझे क्यों मारा? मुझे क्यों मारा?"

अस्पताल के इंचार्ज डॉक्टर सुज़ुकी इन तमाम आवाज़ों के बीच में खोए हुए खड़े थे। वह हार चुके थे। कल से उन्हें नींद नहीं, आराम नहीं, भूख–प्यास नहीं। ये पागलों का शोर, दर्द, चीख़, कराह! उनका दिल, दिमाग़ और जिस्म थक चुका था। अभी थोड़ी देर पहले उन्हें ख़बर मिली थी, नागासाकी पर भी बम गिराया गया। वे इससे चिढ़ उठे थे... "क्यों नहीं बादशाह और वज़ीर हार मान लेते? क्या अपनी झूठी आन के लिए वह जापान को तबाह कर देंगे?" उन्हें दुश्मनों पर भी गुस्सा आ रहा था "इन्हें क्यों मारा गया? ये किसी के दुश्मन नहीं थे। इन्हें अपने लिए साम्राज्य की चाह नहीं थी। अगर इनका अपराध है, तो केवल यही कि यह अपने बादशाह के मजबूरन बनाए हुए गुलाम हैं। व्यक्ति की सत्ता के शिकार हैं। संस्कारों के गुलाम हैं। ...दुश्मन इन्हें मारकर खुश है। जापान की निर्दोष और मूक जनता ने दुश्मनों का क्या बिगाड़ा था, जो उन पर एटम बम बरसाए गए? विज्ञान की नई खोज की शक्ति आज़माने के लिए उन्हें लाखों बे–ज़बान बे–गुनाहों की जान लेने का क्या अधिकार था? क्या यह धर्म युद्ध है? ...सदादर्शों के लिए लड़ाई हो रही है? एटम का विनाशकारी प्रयोग विश्व को स्वतंत्र करने की योजना नहीं, उसे गुलाम बनाने की ज़िद है। ऐसी ज़िद, जो इंसान को तबाह करके ही छोड़ेगी। ... और इंसानियत के दुश्मन कहते हैं कि एटम का आविष्कार मानव–बुद्धि की सबसे बड़ी सफलता है!... हिः पागल कहीं के!...

नर्स आई। उसने कहा; "डॉक्टर! सेंटर से ख़बर आई है, और नए मरीज़ भेजे जा रहे हैं।"

डॉक्टर सुज़ुकी के थके चेहरे पर सनक–भरी सूखी हँसी दिखाई दी। उन्होंने जवाब दिया... "इन नए मुर्दा मरीज़ों के लिए नई ज़िंदगी कहाँ से लाऊँगा, नर्स? विनाश–लोलुप स्वार्थी मनुष्य शक्ति का प्रयोग भी जीवन नष्ट करने के लिए ही कर रहा है। फिर निर्माण का दूसरा ज़रिया ही क्या रहा? फेंक दो उन ज़िंदा लाशों को, हिरोशिमा की वीरान धरती पर!कृपया उन्हें ज़हर दे दो! अस्पताल और डॉक्टरों का अब दुनिया में कोई काम नहीं रहा।"

नर्स के पास इन फ़िज़ूल की बातों के लिए समय नहीं था। ...नए मरीज़ आ रहे हैं। सैकड़ों अस्पताल में पड़े हैं। वह डॉक्टर पर झुँझला उठी...

"यह वक़्त इन बातों का नहीं है डॉक्टर! हमें ज़िंदगी को बचाना है। यह हमारा पेशा है, फ़र्ज़ है। एटम की शक्ति से हारकर क्या हम इंसान और इंसानियत को चुपचाप मरते हुए देखते रहेंगे? चलिए, आइए, मरीज़ों को इंजेक्शन लगाना है, आगे का काम करना है।" नर्स डॉक्टर सुज़ुकी का हाथ पकड़कर तेज़ी से आगे बढ़ गई।

प्रतिक्रिया

विस्तारित विश्लेषण एवं विषयगत विवेचन प्रस्तुत है :–

भूमिकाः मानवता पर युद्ध की सबसे भीषण चोट : "एटम बम" कहानी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई है, जब 6 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया था। यह घटना विश्व इतिहास की सबसे भयावह त्रासदियों में से एक मानी जाती है। अमृतलाल नागर ने इस घटना को केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना के धरातल पर समझने का प्रयास किया है। उनकी लेखनी उस अमूर्त पीड़ा, यातना और अनुत्तरित प्रश्नों को स्वर देती है, जो युद्ध के बाद बचे लोगों के जीवन में अनवरत गूंजते हैं। इस कहानी में कोबायाशी नामक पात्र एक प्रतीक बनकर उभरता है। वह हर उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो युद्ध का भागी नहीं होते हुए भी उसकी विभीषिका का शिकार बनता है।

कथावस्तु का विस्तृत परिचय : कोबायाशी जापान के हिरोशिमा का निवासी है। कहानी की शुरुआत में वह बम गिरने के क्षण बेहोश हो जाता है और जब उसकी चेतना लौटती है, तो वह खुद को राख, मलबे, जलती हुई हवाओं और मृत्यु के सन्नाटे के बीच पाता है। इस स्थिति में उसकी सबसे पहली चिंता है। उसकी पत्नी और अजन्मा बच्चा, जिनका कोई पता नहीं चलता। कोबायाशी की आँखों के सामने जो दृश्य आते हैं। जली हुई लाशें, चीखते लोग, पानी की खोज में दर–बदर भटकते घायल। वे सब मिलकर इस कथा को केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं रहने देते, बल्कि समस्त मानव जाति की सामूहिक पीड़ा बना देते हैं।

कहानी का अंतिम प्रश्न "मुझे क्यों मारा?" केवल कोबायाशी का नहीं, वह समूची मानवता का प्रश्न है।

विषयवस्तु और प्रमुख भावों का विश्लेषण :

युद्ध की नृशंसता और अमानवीयता : यह रचना युद्ध के उस भयावह पक्ष को उजागर करती है जहाँ निर्दोष लोग मारे जाते हैं, जीवन की सारी बुनियादी व्यवस्थाएँ टूट जाती हैं और सभ्यता का चेहरा झुलस जाता है। लेखक बताते हैं कि युद्ध केवल रणभूमि में नहीं लड़ा जाता। वह लोगों के घरों, उनकी स्मृतियों और भावनाओं को भी तबाह कर देता है।

सामूहिक त्रासदी में व्यक्तिगत अनुभव : कोबायाशी का दुःख निजी होते हुए भी सार्वभौमिक बन जाता है। उसकी पत्नी और अजन्मे शिशु की मौत, और उसका उनका पता न लग पाना, दर्शाता है कि जब युद्ध आता है तो व्यक्ति का निजी संसार भी ध्वस्त हो जाता है।

अस्तित्व की जिजीविषा बनाम व्यर्थता की अनुभूति : कोबायाशी की जलन, उसकी प्यास, और स्मृति का क्षीण होता जाना यह दिखाते हैं कि मनुष्य जीवन के बुनियादी आधारों.. जल, स्मृति, संबंध.. से वंचित हो जाए तो उसका अस्तित्व किस पीड़ा में बदल जाता है।

न्याय और ईश्वर पर सवाल : कहानी का नायक जब ईश्वर से पूछता है... "ऐसी बुरी मौत मुझे क्यों मिल रही है?" ...तो यह केवल एक व्यक्ति का दुख नहीं रह जाता। यह धार्मिक आस्था और नैतिकता की उस पूरी अवधारणा को चुनौती देता है, जो कहती है कि ईश्वर न्याय करता है। युद्ध के संदर्भ में यह विश्वास टूटता दिखाई देता है।

प्रतीकों और शिल्पगत विशेषताओं की पड़ताल :

आँसू और प्यास : कोबायाशी का रोना उसकी पीड़ा का बहिर्गमन भी है और उसकी प्यास बुझाने का अंतिम साधन भी। जब वह कहता है कि "मेरे आँसू ही मेरी प्यास बुझा रहे हैं," तो यह मनुष्य की गहराई से निकलती विवश पुकार बन जाती है।

दीवार : पहले की मजबूत, जीवन से भरी दीवार अब मलबे में बदल चुकी है। यह टूटन दर्शाती है कि कैसे युद्ध इंसान की रचना को एक झटके में मिटा देता है... चाहे वह भौतिक संरचना हो या भावनात्मक जीवन।

प्रकाश और धुआँ : बमबारी के बाद फैली रोशनी और धुआँ सभ्यता के सबसे उन्नत वैज्ञानिक आविष्कार की 'प्रकाशमय' घोषणा है... पर यह प्रकाश जीवन का नहीं, मृत्यु का है। यह द्वंद्व... विज्ञान बनाम नैतिकता दृ रचना में गहरे पैठा है।

कोबायाशी का चरित्र–चित्रण : कोबायाशी केवल एक पात्र नहीं है, वह युद्ध की शिकार हुई मानवता का जीवंत स्वरूप है। उसमें करुणा है, प्रेम है, जिजीविषा है, प्रश्न है, और अंततः एक ऐसी चेतना है जो सत्य के सामने आँखें मूँदने को तैयार नहीं। वह अपने आपसे, ईश्वर से, सभ्यता से और मानवता से प्रश्न करता है। यह उसका साहस है। उसे अपनी हार मालूम है, लेकिन उसकी चेतना युद्ध के 'विजेता' पर नैतिक रूप से भारी पड़ती है।

भाषा, शैली और संरचना : अमृतलाल नागर की भाषा सहज, भावप्रधान और चित्रात्मक है। उन्होंने दृश्य और मनोभावों के संयोजन से पाठक को हिरोशिमा की धधकती गलियों में उतार दिया है। संवादों में गहराई है और मौन में भी अर्थ छिपे हैं। कहानी की शैली आंतरिक एकालाप और प्रतीकों पर आधारित है, जो इसे केवल विवरणात्मक कहानी नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक अनुभव बना देती है।

संदेश और आधुनिक प्रासंगिकता : कहानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी 1945 में थी। जब दुनिया फिर से हथियारों की दौड़ में उलझी है, जब युद्ध की आशंका बार–बार मंडराने लगती है... यह कहानी एक चेतावनी बनकर हमारे सामने आती है :

युद्ध की असली कीमत वे चुकाते हैं जो न युद्ध चाहते हैं, न लड़ते हैं। यह कहानी शांति, करुणा, और मानवीय मूल्यों की अपील है... जो आज की दुनिया के लिए नितांत आवश्यक हैं। आज के समय में भी जब भारत और पाकिस्तान के मध्य तनाव की स्थिति है और युद्ध की स्थिति बनती जा रही है तो यह कहानी से हमें स्पष्ट पता लगता है कि युद्ध क्या लेकर के आता है युद्ध ऐसी परिस्थितियाँ लेकर के आता है जिनका भयावा रूप सदियों तक देखा जा सकता है यह कहानी आज भी और मुझे लगता है जब तक धर्म जाति मजहब और इंसानों के विचारों के बीच में मतभेद होते रहेंगे तब तक यह युद्ध होते रहेंगे और यह कहानी प्रासंगिक रहेगी।

निष्कर्ष : 'एटम बम' केवल कहानी नहीं है... यह एक अंतरात्मा की चीख है, युद्ध के विरुद्ध घोषणापत्र है, और मानवता की पक्षधरता का घोष है। अमृतलाल नागर ने इस रचना में अत्यंत संवेदनशीलता, करुणा और साहस के साथ उस सत्य को उजागर किया है जिसे सभ्यता अक्सर इतिहास के पन्नों में छुपा देना चाहती है।

यह कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम सचमुच एक 'विकसित' सभ्यता हैं... या केवल तकनीक से सम्पन्न, लेकिन नैतिकता से विफल एक मानव समुदाय हैं।

रवि, बीए द्वितीय वर्ष

तीन –

पिता का पत्र पुत्री के नाम : भारत की सभ्यता और संस्कृति की सुंदर और सरल व्याख्या

प्रिय इंदु!

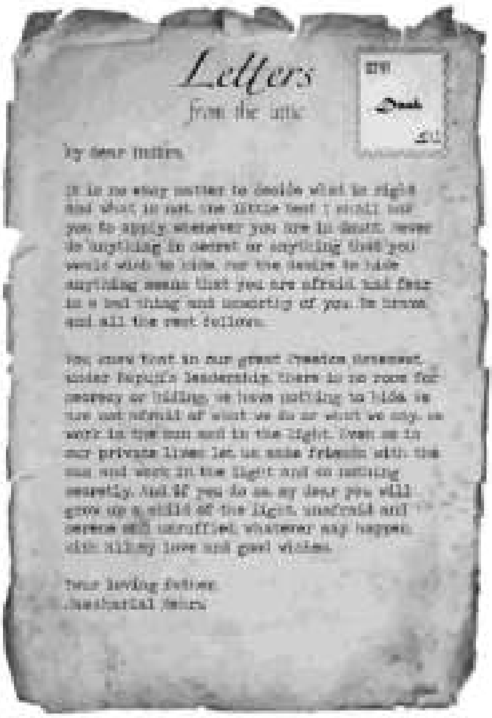

मैं आज तुम्हें पुराने जमाने की सभ्यता का कुछ हाल बताता हूँ।

लेकिन इसके पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि सभ्यता का अर्थ क्या है? कोश में तो इसका अर्थ लिखा है अच्छा करना, सुधारना, जंगली आदतों की जगह अच्छी आदतें पैदा करना। और इसका व्यवहार किसी समाज या जाति के लिए ही किया जाता है। आदमी की जंगली दशा को, जब वह बिल्कुल जानवरों–सा होता है, बर्बरता कहते हैं। सभ्यता बिल्कुल उसकी उलटी चीज है। हम बर्बरता से जितनी ही दूर जाते हैं, उतने ही सभ्य होते जाते हैं।

लेकिन हमें यह कैसे मालूम हो कि कोई आदमी या समाज जंगली है या सभ्य? यूरोप के बहुत से आदमी समझते हैं कि हमीं सभ्य हैं और एशियावाले जंगली हैं। क्या इसका यह सबब है कि यूरोप वाले एशिया और अफ्रीका वालों से ज्यादा कपड़े पहनते हैं? लेकिन कपड़े तो आबोहवा पर निर्भर करते हैं। ठंडे मुल्क में लोग गर्म मुल्क वालों से ज्यादा कपड़े पहनते हैं। तो क्या इसका यह सबब है कि जिसके पास बंदूक है वह निहत्थे आदमी से ज्यादा मजबूत और इसलिए ज्यादा सभ्य है? चाहे वह ज्यादा सभ्य हो या न हो, कमजोर आदमी उससे यह नहीं कह सकता कि आप सभ्य नहीं हैं। कहीं मजबूत आदमी झल्ला कर उसे गोली मार दे, तो वह बेचारा क्या करेगा?

तुम्हें मालूम है कि कई साल पहले एक बड़ी लड़ाई हुई थी। दुनिया के बहुत से मुल्क उसमें शरीक थे और हर एक आदमी दूसरी तरफ के ज्यादा से ज्यादा आदमियों को मार डालने की कोशिश कर रहा था। अंग्रेज जर्मनी वालों के खून के प्यासे थे और जर्मन अंग्रेजों के खून के। इस लड़ाई में लाखों आदमी मारे गये और हजारों के अंग–भंग हो गये–– कोई अंधा हो गया, कोई लूला, कोई लंगड़ा।

तुमने फ्रांस और दूसरी जगह भी ऐसे बहुत–से लड़ाई के जख्मी देखे होंगे। पेरिस की सुरंगवाली रेलगाड़ी में, जिसे मेट्रो कहते हैं, उनके लिए खास जगहें हैं। क्या तुम समझती हो कि इस तरह अपने भाइयों को मारना सभ्यता और समझदारी की बात है? दो आदमी गलियों में लड़ने लगते हैं, तो पुलिसवाले उनमें बीच बचाव कर देते हैं और लोग समझते हैं कि ये दोनों कितने बेवकूफ हैं। तो जब दो बड़े–बड़े मुल्क आपस में लड़ने लगें और हजारों और लाखों आदमियों को मार डालें तो वह कितनी बड़ी बेवकूफी और पागलपन है। यह ठीक वैसा ही है, जैसे दो वहशी जंगलों में लड़ रहे हों। और अगर वहशी आदमी जंगली कहे जा सकते हैं तो वह मूर्ख कितने जंगली हैं जो इस तरह लड़ते हैं?

अगर इस निगाह से तुम इस मामले को देखो, तो तुम फौरन कहोगी कि इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, इटली और बहुत से दूसरे मुल्क जिन्होंने इतनी मार–काट की, जरा भी सभ्य नहीं हैं। और फिर भी तुम जानती हो कि इन मुल्कों में कितनी अच्छी–अच्छी चीजें हैं और वहाँ कितने अच्छे–अच्छे आदमी रहते हैं।

अब तुम कहोगी कि सभ्यता का मतलब समझना आसान नहीं है, और यह ठीक है। यह बहुत ही मुश्किल मामला है। अच्छी–अच्छी इमारतें, अच्छी–अच्छी तस्वीरें और किताबें और तरह–तरह की दूसरी और खूबसूरत चीजें जरूर सभ्यता की पहचान हैं। मगर एक भला आदमी जो स्वार्थी नहीं है और सबकी भलाई के लिए दूसरों के साथ मिल कर काम करता है, सभ्यता की इससे भी बड़ी पहचान है। मिल कर काम करना अकेले काम करने से अच्छा है और सबकी भलाई के लिए एक साथ मिल कर काम करना सबसे अच्छी बात है।

तुम्हारा पिता

जवाहरलाल नेहरू

(जवाहरलाल नेहरू ने यह पत्र दस साल की अपनी बेटी इंदिरा प्रियदर्शिनी को तब लिखा था, जब वह मसूरी के एक स्कूल–होस्टल में थीं। अंग्रेजी में लिखे इस पत्र का हिंदी अनुवाद प्रेमचंद ने किया था।)

प्रतिक्रिया

एक पिता का पत्र : सभ्यता, सोच और संवेदना की पाठशाला

"बचपन में जो संस्कार मनलते हैं, वही आगे चलकर मकसी राष्ट्र की आत्मा बनते हैं।"

— महात्मा गांधी

जब पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी दस वर्षीय बेटी इंदिरा प्रियदर्शिनी को मसूरी के एक बोर्डिंग स्कूल में रहते हुए पत्र लिखा था, तब शायद उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी कि यह पत्र आने वाली पीढ़ियों के लिए सभ्यता, मानवता और सोच की एक जीवंत पाठशाला बन जाएगा। यह केवल एक पिता की बेटी को लिखी चिट्ठी नहीं थी– यह एक विचारशील नागररिक द्वारा भावी नागरिक को दी गई वैचारिक और नैतिक विरासत थी।

सभ्यता की परिभाषा : दिखावे से परे, मूल्यों की ओर

"सभ्यता वह नहीं जो हम पहनते हैं या दिखाते हैं, बल्कि वह है जो हम सोचते हैं और करते हैं।"

— पं. नेहरू (पत्र से)

नेहरू अपने पत्र में बडे सरल शब्दों में सभ्यता का तात्पर्य समझाते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि सभ्यता का मतलब महंगे कपडे या आधुनिक हथियार नहीं हैं, बल्कि यह है कि हम कितने सहयोगी, प्रवचारशील और परोपकारी हैं। जब दुनिया युद्धों में झोंकी जा रही थी, नेहरू उस बर्बरता के विरुद्ध खडे होते हैं और अपनी बेटी से पूछते हैं – "क्या भाइयों का एक–दूसरे को मारना सभ्यता है?"

यह प्रश्न आज भी प्रासंगिक है, जब आधुनिक दुनिया तकनीकी रूप से विकसित होते हुए भी मानवीय दृष्टि से पिछडती जा रही है। नेहरू की यह सीख हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या विकास का अर्थ केवल साधनों की प्रगति है, या फिर मूल्यों की परिपक्वता?

संवाद की शक्तिः आदेश नहीं, सोचने की आज़ादी

"एक विचारशील सवाल, एक आदेश से अधिक गहरा प्रभाव डालता है

— पं नेहरू (के पत्र से)"

नेहरू इंदिरा को केवल सूचना नहीं देते – वे उसे सोचने के लिए आमंत्रित करते हैं। यह संवाद एकपक्षीय उपदेश नहीं है, बल्कि दो बुद्धियों के बीच एक ईमानदार और स्नेहिल चर्चा है। यही वह तरीका है जिससे बच्चों में आत्मनिर्भरता, विवेक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।

यह पत्र दिखाता है कि एक पिता किस तरह अपने बच्चे की जिज्ञासा का सम्मान करते हुए उसे दिशा दे सकता है, बिना उस पर दबाव डाले। यह बच्चों की मानसिक स्वतंत्रता का पोषण है, जिससे वे आगे चलकर आत्मविश्वासी और संवेदनशील नेता बन सकते हैं– जैसी कि इंदिरा गांधी बनीं।

घर–परिवार का वातावरण : चरित्र निर्माण की बुनियाद

"बच्चों का मन एक साफ स्लेट जैसा होता है, उस पर जो लिखेंगे, वही वे जीवनभर पढ़ेंगे।"

घर न केवल आराम की जगह है, बल्कि वह सबसे पहली सामाजिक संस्था है जहाँ बच्चे समाज, संबंध और नैतकिता को सीखते हैं। नेहरू का पत्र यह स्पष्ट करता है कि यदि परिवार में संवाद, विचार और भावनात्मक जुड़ाव का वातावरण हो, तो बच्चा एक अच्छा नागरिक, एक अच्छा मनुष्य और एक जागरुक संवेदनशील आत्मा बन सकता है। आज जब अभिभावक बच्चों को ट्यूशन, प्रतियोगिता और तकनीक के हवाले कर देते हैं, तब यह पत्र एक चेतावनी भी है_ केवल शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन–दृष्टि देना भी अभिभावकों की जिम्मेदारी है।

समाज और दुनिया के प्रति जागरूकता का अंकुर

"जिस समाज में सोचने की आजादी है, वहीं से परिवर्तन की शुरुआत होती है।"

नेहरू अपने पत्र में यूरोपीय देशों की आलोचना करते हैं जो सभ्यता के दावे तो करते हैं, लेकिन युद्धों में लिप्त रहते हैं। यह वैश्विक दृष्टिकोण बच्चे के सोचने के दायरे को सीमित नहीं करता, बल्कि उसे एक नागरिक से वैश्विक नागररक बनने की ओर ले जाता है। इंदिरा जैसी बच्ची इस सोच के साथ बडी होती है कि सच्चा विकास शांति, सहयोग और संवेदना से होता है।

निष्कर्ष : एक पत्र, एक परंपरा, एक विरासत

"संवाद केवल शब्दों का आदान–प्रदान नहीं, आत्मा से आत्मा तक की यात्रा है।"

नेहरू का यह पत्र एक ऐसे पिता की भावना है, जो अपनी संतान को न केवल ज्ञान देना चाहता है, बल्कि उसे एक अच्छा इंसान बनते हुए देखना चाहता है। यह पत्र हर माता–पिता के लिए एक उदाहरण है कि बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में संवाद, समझ और दिशा कितनी बडी भूमिका निभाते हैं।

आज जब दुनिया सामाजिक और नैतिक चुनौतियों से जूझ रही है, तब नेहरू का यह पत्र हमें याद दिलाता है कि यदि हमें एक संवेदनशील और विवेकशील पीढ़ी चाहिए, तो इसकी शुरुआत हमें अपने घरों से ही करनी होगी– शब्दों से, संवाद से, स्नेह से। अपने बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान देना आज के समय के मांग जहां आज की पीढ़ी तकनीक की गुलाम होती जा रही है उन्हे साहित्य से किताबों से जोडने की आवश्यकता है ताकि उनकी व्यवहारिक समझ विकसित हो पंडित जवाहर लाल नेहरू के पत्र से हम सीख सकते है कि अपने बच्चों को हमको समाज मे समाज की समझ के लिए झोंक देना होगा।

"खुद मे वोह बदलाव लाइए जो आप दुनिया मे देखना चाह रहे है"

— महात्मा गांधी

रवि शर्मा, बीए द्वितीय वर्ष

कहानी

बीना

यह कहानी एक छोटे से गांव की रहने वाली लड़की की है, जिसका नाम बीना था। बीना अपनी आम जिंदगी में खुश थी। ज़िंदगी मानो मज़े में कट रही थी। घर में हम चार लोग थे। बीना, मां, पिता जी और बड़ी बहन सुरक्षा। मीना और सुरक्षा स्कूल में पढ़ते थे। पिता जी की एक छोटी सी बर्तन की दुकान थी और मां घर में ही रहती थी। घर की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। पिता जी सुबह घर से दुकान की ओर जाते और रात को 9 बजे घर को वापस आते। पिता के घर आने के बाद मां हर शाम की तरह खाना परोसती और सब मिलकर खाना खाते। मैं और बड़ी बहन शीला सोने ही जा रहे थे। इतने में पिता जी ने दोनों को बुलाया और कहा।

"तुम दोनों के लिए मैं कुछ लाया हूं!"

बड़ी बहन का शीघ्रता से जवाब आया 'क्या लाए हो आप हमें।"

"ये लो तुम दोनो खुद ही देख लो।"

पिता जी कपड़े लाए थे। मैं और बड़ी बहन सुरक्षा बहुत खुश हुए। पिता जी दोनों को तो कपड़े लाए ही थे परन्तु वे मां को भी एक सुन्दर सी साड़ी लाए थे। मां उस साड़ी को देख कर बहुत खुश हुई और कहने लगी

'कितनी सुन्दर साड़ी है।"

कपड़ों को ले कर वे सब सोने चले गए। सुबह जल्दी उठ कर बीना और मेरी बड़ी बहन स्कूल के लिए तैयार होते है। और पिता जी दुकान जाने को सुबह का नाश्ता खत्म कर सब अपने अपने रास्ते निकल जाते हैं। वैसे तो गांव में ज्यादा लोग रहते नहीं थे पर जो लोग थे उनका स्वभाव कुछ अच्छा नहीं था। जब भी वह स्कूल की ओर जाते थे तो लोग अजीब नज़रों से देखते थे। गांव के लोग सिर्फ एक दूसरे की निंदा करते थे। शायद उन लोगों को प्रेम का अर्थ पता नहीं था। वे एक दूसरे को नीचे धकेलने का काम करते थे। बच्चे भी ऐसे जो केवल मार पीट और नशे में ही थे। परन्तु गांव के कुछ लोग अच्छे स्वभाव के भी थे। वे लोगों से अच्छे से बातचीत करते थे। पिता जी के कुछ मित्र भी थे वे भी बहुत अच्छे थे। घर में उनका आना जाना होता रहता था।

रात को पिता जी घर बहुत देर से आए। हम सभी उनका ही इंतजार कर रहे थे।

"आज इतनी देरी कैसे हो गई।"

"वो दुकान में आज बहुत लोग थे तो आने में देरी हो गई।"

"अच्छा अच्छा ! खाना लगा दूं।"

"नहीं! मुझे भूख नहीं हैं।"

पर क्यू।

"तुम खा लो मुझे 'भूख नहीं है।"

और कमरे में चले गए। पिता जी ने खाना खाने से मना कर दिया था तो मां और बड़ी बहन सुरक्षा ने ही खाना खाया। खाना खा कर दोनों बहने चली गई। रात को सोते वक्त बीना ने मन ही मन में सोचा कि पिता जी कभी भी खाने को मना नहीं करते थे पर आज उन्होंने खाना खाने से मना क्यू कर दिया। उसे लगा कि पिता जी बाहर से खाना खा कर आए होंगे पर पिता जी हमेशा परिवार के साथ ही खाना खाते थे। हमारे सो जाने के बाद मां और पिता जी की बात हुई क्या हुई उस सम्बंध में बीना को भी कुछ नहीं पता था। सुबह दोनों बहने घर पर ही थी। परन्तु पिता जी आज भी दुकान जा रहे थे । सुबह का खाना खा कर। पिता जी दुकान को चले गए। बीना ने पिता जी की ओर देख तो वे कुछ गुमसुम से थे। उन्होंने जाते वक्त हमसे कुछ भी नहीं कहा वरना तो पिता जी दोनों बहनों को देख मुस्कुराते थे या कुछ न कुछ कहते ही थे। परन्तु आज कुछ भी ऐसा नहीं हुआ।

बीना ने अपनी बड़ी बहन से कहा," आपने पिता जी को देखा।

बड़ी बहन हंस कर बोली," रोज ही तो देखते हैं।"

बीना ने गुस्से में कहा, 'देखा कि नहीं ?"

'देखा हैं मैनें। पिता जी कुछ ठीक नहीं लग रहे थे यही नहीं वे रात से ही कुछ गुमसुम से भी हैं।

हां आप सही बोल रही हो।

बीना ने मां से बात की और कहा, "मां पिता जी कुछ ठीक नहीं लग रहे।

"क्यू तुम्हें ऐसा क्यों लगा।"

पिता जी कल रात से ही कुछ गुमसुम हैं और कुछ परेशान से हैं।

मां बोली, 'कुछ नहीं हुआ हैं वो कल दुकान में लोग ज्यादा थे तो इसलिए थोड़े थके हुए लग रहे थे।"

"अच्छा मां"

रात को पिता जी जब घर आए तो वे कुछ ठीक नहीं लग रहे थे। वे सीधा ही अपने कमरे में चले गए और मां भी उनके पीछे पीछे चली गई। बीना और बड़ी बहन सुरक्षा सोचने लगे कि क्या हो रहा है। दोनों बहने उनके कमरे में जाने लगे परन्तु मां तुरंत कमरे के बाहर आ गई और कहने लगी तुम दोनो कहा जा रहे हो।"

'मां आप ये क्या कह रही हो पिता जी के पास जा रहे हैं।"

"तुम दोनों अंदर नहीं जा सकते उनकी तबीयत थोड़ी खराब हैं वो अभी आराम कर रहे हैं। तुम दोनों सुबह उनसे मिल लेना।"

"क्यू! क्या हुआ पिता जी को।"

"उनकी थोडी तबीयत खराब है।"

"मां हम अभी क्यू नहीं मिल सकते।"

"नहीं बोला तो नही रात बहुत हो गई हैं तुम दोनो सोने चले जाओ।"

दोनों बहनें वहां से चली गई और आपस में बात करने लगी।

बहुत से विचार आ रहे थे कि मां ऐसे पिता जी के पीछे क्यू भाग कर गई। मां ने हमको उसने मिलने क्यू नहीं दिया। इतने में बड़ी बहन सुरक्षा धीमी गति से कमरे से बाहर निकाला और मां का फोन ले आयी। मैं उस समय सोई नहीं थी पर ये बात उसको पता नहीं थी वो किसी से फोन पर बात करती हैं मुझे ये तो पता नहीं था कि वह कौन हैं पर मुझे इतना पता चल गया था कि वो किसी लड़के से बात कर रही थी। मैं बस उसकी बात ही सुन रही थी। शीला आज रात की बात उसको बता रही थी। मैनें उनकी बातों को अनसुना किया और सो गई। जैसे ही सुबह हुई तो हम दोनों उनके कमरे में चले गए परन्तु वे वहां नहीं थे। हमने उनको सब जगह ढूंढा परन्तु वे कही नहीं मिले। हम सीधा मां के पास गए और कहा, मां पिता जी कहां हैं। कही दिखाई नहीं दे रहे।

"वे तो कब के चले गए।"

"पर वे तो इतनी जल्दी दुकान को नहीं जाते थे।"

"पता नहीं बोल रहे थे। जल्दी जाना हैं।"

"पर आप ने तो कहा था कि तुम दोनों सुबह बात कर लेना।"

"हाँ कहा था। परन्तु तुम्हारे पिता जी ने मुझे भी आज सुबह ही ये बात बोली।"

'कोई नहीं तुम दोनों उनसे रात को बात कर लेना।" दोनों बहने स्कूल के लिए तैयार हो रहे थे। उतने में बीना ने अपनी बहन से कहा, "वो कल रात आप किस से बात कर रही थी।" उन्होंने बीना ओर देखा और कहा, क्या?

"वो आप रात को किस से बात कर रही थी।"

उन्होंने हिचकिचाते हुए कहा," किसी से भी नहीं।"

"झूठ मत बोलो मैने अपने कानो से सुना है" कोई लड़का था शायद।'

सुरक्षा गुस्से में बोली," तू अपने काम से काम रख। ठीक हैं। तुझे क्या मैं किसी से भी बात करू।"

""एक तो घर की स्थिति कुछ ठीक नहीं है। और आप उसको घर की सारी बातें बता रही हो।"

"तुझे क्या मैं किसी को भी बात बताऊं। तू छोटी है तो छोटी बन कर रे बड़ी मत बन।"

मैंने कुछ नहीं कहा और चुप चाप स्कूल चली गई। उनका ऐसा व्यवहार देख कर मुझे कुछ अच्छा ना लगा।

स्कूल से आ कर के भी बीना और उसके पिताजी उसका ही इंतजार कर रहे थे। दोनों बहने घड़ी की ओर देख रहे थे कि कब 9 बजेंगे और कब पिता जी आएंगे और हम उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछेंगे। उतने में घर के दरवाजे में दस्तक हुई। मां ने दरवाजा खोला तो वो पिता जी थे। मैंने घड़ी की ओर देखा तो अभी 8 ही बजे थे। पिता जी उस रात जल्दी ही आ गए थे। पिता जी सीधा आ कर कुर्सी में बैठ गए।

हमने कहा, "आप ठीक तो हो ना?"

उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "मैं ठीक हूँ। मुझे क्या हुआ है।" लेकिन हमें पता चल गया था कि उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं है। क्योंकि उनके चेहरे से वह भाव झलक रहे थे। हम दोनों ने कुछ नहीं कहा। फिर सभी खाना खा कर सोने चले गए। दिनप्रतिदिन उनके स्वास्थ्य में गिरावट आ रही थी। तब भी वो पिता का फ़र्ज़ निभा रहे थे।

वे सुबह फिर दुकान की ओर जल्दी चले गए थे।

बीना ने मां से पूछा, "मां पिता जी कहाँ हैं।"

"वे तो आज फिर जल्दी चले गए। वैसे तुम दोनों को स्कूल जाने के लिए देरी नही हो रही है।"

"जी माँ हम निकाल ही रहे थे।"

जब बीना स्कूल से घर की ओर जा रही थी। तो बड़ी बहन सुरक्षा के पास एक लड़के को आते देखा। बीना दूर से उन्हें देख रही थी। उसे यह नहीं पता था कि वह कौन है। पर दोनों को देख कर लग रहा था कि वे एक दूसरे को जानते हैं। दोनों ने बहुत देर तक बातें की। बीना को दोनों की बातें सुनाई तो नहीं दे रही थी परन्तु दोनों को देख कर लग रहा था कि ये लड़ रहे थे। सुरक्षा उस लड़के पर बहुत गुस्सा हो रही थी और उसे वहाँ से जाने को कह रही थी। परन्तु वह लड़का उसकी बात को अनसुना कर रहा था। थोड़े देर बाद वह लड़का वहाँ से चला गया। बीना यह सब दूर खड़ी हो कर सब देख रही थी। सुरक्षा भी वहाँ से चली गई। घर पहुँच के बीना ने पूछा, "कौन था वो लड़का।"

उस ने बीना की ओर देखा और कहा, "कौन लड़का। मैं किसी लड़के को नहीं जानती।"

"सच में?"

"हाँ"

"अच्छा तो जो आपसे बात कर रहा था वह कौन था।" सुरक्षा थोड़ी सहम कर बोली, "मुझसे कोई भी बात नहीं कर रहा था।"

"झूठ मत बोलो। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि आप किसी लड़के से बात कर रही थी।"

"अच्छा अच्छा वो। वो तो मेरा दोस्त था।"

"अच्छा पर देखने से तो लग नहीं रहा था।"

सुरक्षा चुप हो गई।

और बोली, "कहना क्या चाहती है तू।"

"मैंने अपनी आँखों से सब देखा किस तरह आप दोनों लड़ रहे थे।"

सुरक्षा ने कुछ नहीं कहा।

"बोलो।"

सुरक्षा गुस्से में बोली, "हाँ कर रही थी मैं बात तो तू क्या कर लेगी। माँ को बोलेगी जा बोल ले।"

उनका ऐसा व्यवहार देख कर मैं वहाँ से जाने लगी। उतने में उन्होंने पीछे से कहा, "एक और बात तू मेरे मामले में दखल ना दे। अपने काम से काम रख।" फिर मैं वहाँ से चली गई।

माँ रसोई में रात के खाने की तैयारी कर रही थी।दोनों बहने शीला टीवी देख कर अपना मनोरंजन कर रही थी। उतने में पिता जी घर पहुँच गए। दोनों को देख कर वे अंदर चले गए। माँ ने पिता जी को खाना खाने के लिए आवाज़ लगाई। खाने में आज माँ ने मटर पनीर बनाया था। सभी ने खाना खाया। खाना खा कर

दोनों बहने अपने कमरे की ओर जा रही थी। उतने में पिता जी ने कहा, "कहाँ चले तुम दोनों।"

"सोने।"

"इतनी जल्दी।"

"जी।"

"इधर आओ मेरे पास बैठो।"

दोनों ही पास बैठ गए। उतने में माँ वहाँ आ पहुँची और कहने लगी, "तुम दोनों अभी तक सोने नहीं गए।"

"मां वो।"

पिता जी के तुरंत कहा, "वो मैंने इन दोनों को रोक लिया।" मां भी वहा हमारे साथ बैठ गई। पिता जी खाने की तारीफ कर के बोले, आज का जो खाना था वो तो बहुत स्वादिष्ट था।"

"पिता जी खाना बनाया किसने था माने तो स्वादिष्ट तो होगा ही ना।"

मां हंस पड़ी।

हा हा...

पिता जी मजाक में मां को बोले, पर शायद नमक काम था। मां–पिता जी की ओर गुस्से से देखा और कहा, "अच्छा तो कल से आपको खाना नहीं मिलेगा।"

पिता जी तुरंत हंस कर बोले, अरे अरे में तो मज़ाक कर रहा था।"

सब हंसने लगे। सभी पिता जी के स्वास्थ्य को भूल चुके थे। तीनों पिता जी को देखा और मन ही मन सोचने लगी कि पिता जी अब ठीक हो चले हैं। उतने में पिता जी कहते हैं, अगर में ना रहा तो तुम सब क्या करोगे। सब हंसते हंसते चुप हो गए।

'क्या करोगे तुम सब बोलो तो सही।"

दोनों बहने एक–दूसरे को देखने लगी।

''में तो मज़ाक कर रहा था। में तुम सब को छोड़ कर थोड़ी कही जाऊंगा।"

पिता जी दोनों बहनों को देख कर बोले," देखो बेटा ज़िंदगी में बहुत सी मुश्किलें आएंगी पर तुमने उनका सामना करना है वहा से भागना नहीं हैं।

मां बोली,' चलो चलो रात बहुत हो गई है। सब सोने चले जाओ।"

दोनों बहने पिता जी को गले लगा कर अपने कमरे में सोने के लिए चले गए। सुबह होते ही पिता जी हर बार की तरह दुकान की ओर जा रहे थे और मां अंदर रसोई घर में थी। दोनों बहने स्कूल जाने के लिए तैयार थे। उतने में किसी चीज की गिरने की आवाज़ आई।

बहन सुरक्षा भाग कर बाहर की ओर गए। और देखते है तो पिता जी जमीन पर थे। सभी घबरा कर पिता जी की ओर भागे। सुरक्षा और बीना ने पिता जी को उठाया और अन्दर कमरे की ओर गए। मां पिता जी को उठाती है। परन्तु वे नहीं उठाते। सुरक्षा जैसे ही पिता जी की दिल की धड़कने सुनने लगी तो उनको पिता जी की दिल कि धड़कने सुनाई नहीं दी। और वे झटके से पीछे हो गई और मा से बोली." मां वो वो...

"क्या वो वो।"

''वो पिता जी की दिल कि धड़कने सुनाई नहीं दे रही है। मां तू ये क्या बोल रही है।"

उतने में सुरक्षा भाग कर पड़ोसी को बुला लाई। उन्होंने पिता जी को देखा और बोले, ये अब नही रहे।

मां चिल्लाई नहीं।

"नहीं ऐसा नहीं हो सकता। आप झूठ बोल रहे हो।

''जी मैं सच बोल रहा हूं। शायद इन्हें दिल का दौरा पड़ा है।"

''पिता जी उठिये ना।"

इतने में मां जोर–जोर से रोने लगी।

"उठिए ना जी दोनों बहने रोने लगे। उठिए ना पिता जी उठिए ना...''

गांव के लोग एक एक कर के इकठा होने लगे। रिश्तेदार, उनके दोस्त सभी घर में आने लगे। मां का तो रो रो कर बुरा हाल था। थोड़ी देर बाद पिता जी को अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया। गांव के लोग और रिश्तेदार सब पूछने लगे।

"क्या हो गया ये सब।"

कैसे हुआ?

कल तक तो सब ठीक था। अचानक ये सब।

किस की नज़र लग गई परिवार को।

हमने उनका कुछ जबाव नहीं दिया। बस शांत रह कर उनकी बातें सुनी। क्योंकि उन्हें सिर्फ बातों में दिलचस्पी थी उनको हमारे अंदर छुपे भावो की कोई अहमियत नहीं थी। लोग एक–एक कर के अपने घर जाने लगे। घर मानो सुनसान हो चुका था। सब चुप चाप थे। घर की को खुशियां थी वो मानो चली सी गई थी। रात जैसे ही हुई तो सब घड़ी की ओर ही देख रहे थे। परन्तु अब घड़ी की ओर देख कर कोई आने वाला नहीं था। सभी अन्दर ही अन्दर टूट चुके थे। सभी उस रात को याद कर रहे थे। और उतने में सुरक्षा बोली, "मां पिता जी ने आपको क्या कहा था कि खाने में नमक कम है। ये बात सुन कर मा के आंखों में आसूं आ जाते हैं। सभी हर एक एक पल को याद कर रहे थे। वो कपड़े, वो साड़ी सब। धीरे धीरे थोड़ा समय बीत गया। स्कूल जाते वक्त गांव के लोग हमे अजीब नज़रों से देखने लगे थे। मां के साथ चलते वक्त भी लोग हमे अजीब नज़रों से देखते थे। घर आ कर मैंने मां से कहा, " मां लोग हमें ऐसे क्यू देखते हैं। हमने तो उसका कुछ नहीं बिगड़ा। फिर भी ये हमे ऐसे क्यू देखते हैं हम इन्हें कुछ कहते क्यू नहीं।

मा, "नहीं! ये समाज ऐसा ही है हम कितने लोगों को बोलेंगे। इन लोगो कि सोच और देखने का नजरिया अलग हैं। तुम इन लोगों पर ध्यान मत दो।"

कुछ दिन बीत गए परन्तु मुश्किलें अभी काम नहीं हुई थी। पिता की मृत्यु को महीने हो चुके थे। स्थिति अब कुछ ठीक हो गई थी।

दोनों बहने स्कूल की ओर जा रही थी। घर से थोड़ी दूर आ कर के सुरक्षा ने कहा, "सुन तू स्कूल जा में अभी घर जा कर आई।

पर क्यूं।

बड़ी बहन सुरक्षा थोड़ा रुक कर बोली, वो मैं अपनी किताब घर पर ही भूल गई हूं। तो मैं उसको ले कर आती हूं तू स्कूल जा मैं आ जाऊंगी।

अच्छा अच्छा।

मैं फिर स्कूल अकेले ही चली गई। स्कूल में मैने उनको कहीं नहीं देखा। सोचा क्लास में होगी परन्तु वे वहा भी नहीं थी। मैंने उसे सब जगह ढूंढा परन्तु वे कही नहीं मिली। मैं सीधा उनकी सहेलियों के पास चली गई और कहा, "वो अपने सुरक्षा दीदी को देखा।"

वो तो आज स्कूल ही नहीं आई है।

क्या?

ये बात तो तुझे पता होनी चाहिए तेरी बड़ी बहन है।

ये बात बोल कर वे सब हंसने लगी, हा। हा। हा...... ।"

और मैं वहा से चली गई।

घर पहुंच कर भी मैंने उन्हें सब जगह ढूंढा पर उनका कुछ पता नहीं चला। इतने में मां बोली, किसको ढूंढ रही हैं और सुरक्षा कहा हैं।

मुझे नही पता।

तुझे नहीं पता होगा तो किसको पता होगा तुम दोनो साथ में ही तो स्कूल गए थे।

जी मां गए तो थे पर उन्होंने थोड़ी दूर आ कर के कहा कि मैं अपनी किताब घर पर ही भूल गई हूं तो उसको ले कर के आती हूं। फिर मैं स्कूल चली गई। पर वो तो घर आई ही नहीं।
क्या?

हां! वो तो घर आई ही नहीं।

स्कूल में भी वो नहीं थी।

"तू चिंता मत कर किसी सहेली के घर गई होगी आ जाएंगी। मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा था। स्कूल में भी वो नही थी और घर तो वो आई ही नहीं। तो फिर वो चली कहां गई। रात होने आई पर वो अभी तक घर नहीं आई थी। मां अब परेशान होने लगी और बोली, कहां चली गई ये लड़की इतनी रात हो गई और अभी तक घर नहीं आई। आने दो आज उसे घर अच्छी तरह बात करती हूं।"

रात बहुत हो गई पर वो घर नहीं आई। बीना और मां उसकी राह देख रही थी। पर उसका कुछ नहीं पता था।

सुबह उठ कर बीना और मां ने उन्हे सब जगह ढूंढा पर वह कही नहीं मिले। गांव के लोगों से पूछा पर उन्हें भी कुछ पता नहीं था। रिश्तेदारों से भी बात की पर उनको भी कुछ पता नहीं था। गांव का चप्पा– चप्पा ढूंढ कर मां ओर बीना घर आ गए। मां परेशान हो कर रोने लगी और बोली कहां चले गई वो। एक तो उसके पिता जी हमें छोड़ कर चले गए और अब्बू वो भी हमें छोड़ कर चली गई।"

"मां आप ऐसा क्यू कह रहे हो।"

"कल हम फिर उनको ढूंढने जाएंगे। आप चिंता मत करो। आप अभी सो जाओ।"

फिर मैं कमरे में चली गई। मैं सोच सोच कर बहुत परेशान हो रही थी। वो कहां होंगी कैसे होंगी ठीक तो होंगी।

सुबह होते हम फिर उनको ढूंढने चले गए हमने उसको हर जगह ढूंढा पर कुछ पता ना चला। गांव में यह बात पूरी तरह फेल चुकी थी। मां को घर छोड़ कर मैं स्कूल चली गई। स्कूल में उनकी सहेलियां ने मुझसे कहा, सुरक्षा स्कूल क्यू नहीं आ रही हैं। मैंने कुछ नहीं कहा और वहा से चली गई। स्कूल से जब मैं घर की ओर जा रही थी तो गांव के लोग तरह–तरह को बातें कर रहे थे, "सुनो सुनो इसकी बड़ी बहन भाग गई है ना।"

"हां हां आप सही बोल रहे हो। भाग गई होगी किसी लड़के कर साथ ।"

"वैसे नाम क्या था उसका।

"सुरक्षा।"

"मुझे तो उसका चरित्र ही अच्छा नहीं लगता था। "

"बाप को मरे कुछ महीने ही हुए है और अब ये सब ।"
क्या कर सकते है अब जी

बीना ने उन्हें कुछ नहीं कहा और वहा से चुप चपा चली गई। घर पहुंच के बीना ने मां से कहा "मां लोग तरह–तरह की बातें कर रहे हैं।"

मां खामोश थी। बीना ने मां को देखा और कहा "मां आप ठीक तो हो ना।"

मां जोर जोर से रोने लगी। कहां चली गई वो।

"कैसी होगी। कहा होगी। किस हालत में होगी। भगवान यही दिन देखना रह गया था। बीना ने मां को गले से लगा लिया। घर की जो पहले जैसी स्थिति थी वो अब नहीं थी। वे पहले वाली रोनक सब खत्म हो गई थी। हमने बड़ी बहन सुरक्षा को सब जगह ढूंढा पर उनका कुछ पता ना चला।

अंजली (बीए तृतीय वर्ष)

मेरा गाँव

एक– नाऊ

मेरे गांव का नाम नाऊ है। यह मंडी जिले में स्थित है। गांव मैं बहुत पहले निरमंड से कुछ एक लोग आए जिन्हें 'नूआल' कहते थे। उनके आने से ही हमारे गांव का नाम नाऊ पड़ा। ये निरमंड से आकर यहां बस गए जिससे यहां पर गांव बन गया। नूआलो के साथ ही हमारी स्थानीय देवी माता 'अंबिका' भी इनके साथ निरमंड से यहां आई थी।

माता अंबिका रांघड़ (जो कि नाऊ के साथ लगने वाला एक गांव है) में प्रकट हुई थी । कहा जाता है कि उस समय रांघड़ में किसी के खेत में लोग जुआरी करने के लिए गए हुए थे। जिसमें की बहुत सारी औरतें इकट्ठा होकर खेत में नींडाई कर रही थी। नींडाई करते–करते किसी एक औरत की किनली किसी एक सख्त वस्तु के साथ टकराई तो उसने खोदकर देखा कि यह तो एक सोने का मुख है । उसके मन में लालच पैदा हो गया। उसने सोचा कि वह उस मुख को बेचकर बहुत सा धन पा सकेंगी । उसने उस मुख को छुपाने का प्रयास किया। उसने अपने कपड़ों में जब उस मुख को छुपाया तो वह सांप से लिपट गई। और जैसे ही उसने उसे नीचे फेंका तो वह सांप से वापस मुख बन गया। साथ काम कर रहे लोगों ने जब उसे देखा तो उनके मुंह से 'जय माता दी' निकल गया। बाद में उस मुख को एक करली में डालकर नाऊ लाया गया। फिर प्रत्येक वर्ष इसी प्रकार से इसी तिथि को माता का मुख रांघड़ से नाऊ को करली में लाया जाता है जिसे होम या जगराते का नाम दिया जाता है तथा इसे माता के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है ।

नूआलों कि आगे तीन खानदान बन गई। पहले गांव में कम लोग थे परंतु समय के साथ–साथ यहां की आबादी भी बढ़ती चली गई तथा अब यहां काफी अधिक लोग हो चुके हैं। गांव की मुख्य खानदानों में शामिल है –

पहली खानदान : पहली खानदान के वंषजों में चौकी वाले, कोठी वाले, कोठी के पीछे वाले आते हैं।

दूसरी खानदान : दूसरी खानदान के वंशजों को मांदू कहा जाता है।

तीसरी खानदान : तीसरी खानदान का वंश आगे न बढ़ पाने के कारण वह मांदूओं में शामिल हो गए थे ।

आजकल यहां की देवी मां की पूजा आरती चौकी वाले (जो की देवी की चौकी की देखभाल करते थे) , कोठी वाले (जिस कोठी में देवी मां रहती है), कोठी के पीछे वाले (जिनका घर देवी की कोठी के पीछे था) और मांदू आदि चार खानदानों के वंशजों द्वारा की जाती है। नूआलों के साथ ही एक औरत भी आई हुई थी जिनकी संतानों को बणशींग कहा गया और आज यह वंश काफी बड़ा हो चुका है।

इसके अलावा गांव में राय खानदान के भी बहुत लोग रहते हैं तथा साथ ही अन्य भी कई लोग रहते हैं जो इधर–उधर से आकर यहां पर बसे हुए हैं।

चर्चित व्यक्ति की श्रेणी में यहां पर आए नूआल शामिल है। उनके आने से ही यह गांव बसा। उन्हीं की वजह से हमारे गांव का नाम नाऊ पड़ा। गांव की सबसे श्रेष्ठ व्यक्तियों की श्रेणी में यही लोग आते थे। इन्हीं लोगों की कहानी गांव में अधिकतर सुनने को मिलती है। इन्होंने नाऊ गांव की जमीन को अपने नाम करवाया तथा साथ ही नाऊ के आसपास के क्षेत्र को भी उन्होंने अपने नाम पर किया। दोघरी नामक गांव की 70 बीघा जमीन भी इन्होंने अपने नाम पर करवाई थी। इस भूमि का प्रयोग वह कृषि के लिए किया करते थे।

नूआल दोघरी नामक जगह पर रहने लगे यह नाऊ के साथ में लगने वाली जगह थी। यह लोग वहीं पर रहते थे । जब उन्हें पता चला कि देवी मां रांघड़ में प्रकट हो चुकी है तो वह वापस आ गए और उन्होंने देवी मां के मुख को ऊपर (रांघड़) से नाऊ को लाया और उन्होंने नाऊ में देवी मां के लिए एक मंदिर बनाया जो कि पहले छोटा सा था परंतु जल्द ही उसे बहुत बड़ा बनाया गया। माता के मंदिर में माता अंबिका और माता श्यामा काली की मूर्ति भी है। यह मूर्तियां यहीं पर प्रकट हुई थी। यहां मूर्तियां प्रकट होने के कारण मंदिर भी यहीं पर बनाया गया । गांव का सबसे प्राचीन मंदिर यही है।

देवी की मुख्य हार (इलाका) में नाऊ – पनाऊ, रांघड़ , सुआड़ी , दोघरी के अलावा अन्य भी कई जगह शामिल है। नाऊ का मंदिर 12 महीने खुला रहता है अर्थात पौष महीने में जब स्नोर घाटी के अधिकतर देवी– देवताओं के मंदिर बंद हो जाते हैं तो उस समय भी यहां का मंदिर खुला रहता है। यहां साल के 12 महीने पूजा– आरती की जाती है । यहां वर्ष के 12 महीनों माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख , ज्येष्ठ ,आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष और पौष आदि के 12 साजे मनाए जाते हैं। साजे वाले दिन यहां के लोग मंदिर जाते हैं और इन्हें बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। साजे वाले दिन लोग मंदिर में धूप देते हैं और प्रसाद चढ़ाते हैं। कई–कई साजों को देवी मां बाहर निकलती है और गांव के लोग अर्थात महिलाएं देवी को धूप देती है। धूप ग्रहण करने की प्रक्रिया मंदिर से शुरू होती है तथा यह गांव में बनी माता की कोठी के प्रांगण में जाकर समाप्त होती है। कोठी के प्रांगण में सभी महिलाएं देवी को धूप देती है तथा इसके बाद देवी मां अपनी कोठी में विराजमान हो जाती है। नाऊ में 12 साजों के अलावा 18 त्यौहार भी मनाए जाते हैं। जो कि इस प्रकार हैं –

1. **लोहड़ी** – लोहड़ी का त्यौहार भी गांव में बड़ी धूमधाम से बनाया जाता है। इस दिन गांव के लोग सबसे पहले मंदिर जाते हैं। लोहड़ी वाले दिन गांव में रोटियां बांटने का रिवाज है। फिर रात के समय बच्चे लोहड़ी मांगने के लिए आते हैं। उन्हें मूंगफली , रेवड़ी , गचक और पैसे दिए जाते हैं।

2. दूब देने का साजा – दूब देने का साजा माघ के साजे वाले दिन मनाया जाता है। इस दिन सबसे पहले मंदिर में माता को दूब दी जाती है तथा उसके बाद सभी लोग अपने से बड़ों को दूब देते हैं तथा उनसे आशीर्वाद लेते हैं। इस दिन खाने में खिचड़ी बनाई जाती है। हमारे यहां पर यह 7 दिनों तक चलता है।

3. सदैला – दूब देने का साजा 7 दिनों तक चलता है सातवें दिन को सदैला कहा जाता है तथा सदैले वाले दिन लोगों के घरों में अच्छे–अच्छे पकवान बनते हैं इन दिनों खाने में गुलगुले (बबरू), भल्ले, घी वाली रोटियां, खिचड़ी, मीठे चावल आदि बनाए जाते हैं।

4. होली का त्यौहार – गांव में होली का त्यौहार भी बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी लोग सुबह मंदिर जाते हैं और मंदिर में देवी मां को होली चढ़ाते हैं और उसके बाद ही एक दूसरे को रंग लगाते हैं तथा होली खेलते हैं। गांव में बावड़ी के पास एक राधाकृष्ण का मंदिर भी बनाया गया है , गांव के सभी लोग दोपहर के समय यहां पर आते हैं और राधाकृष्ण के साथ होली खेलते हैं तथा यहां पर पूरे दिन भर कीर्तन किया जाता है और शाम के समय मंदिर में भी कीर्तन किया जाता है । इसके बाद सभी लोग अपने–अपने घर चले जाते हैं। संध्या के समय यहां होलिका का दहन किया जाता है और गांव के सभी लोग होलिका में चावल और चीनी मिलाकर फेंकते हैं। इसे यहां पर फाग कहा जाता है।

5. चैत्र के साजे वाले दिन यहां पर गांव की सभी महिलाएं शाम के समय मंदिर के प्रांगण में एकत्रित होती है और सामूहिक रूप से नृत्य करती है। चैत्र मास में पूरे महीने यह गतिविधि चलती है, गांव की सभी औरतें माता की कोठी के प्रांगण में इकट्ठा होती है और नाचती है।

6. चैत्र में नए संवत का त्यौहार भी यहां बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन लोगों को उनके आने वाले नव वर्ष के बारे में बताया जाता है तथा इस दिन घर में अच्छे–अच्छे पकवान बनाए जाते हैं।

7. संवत वाले दिन से ही चैत्र नवरात्रि की शुरुआत भी हो जाती है। देवी मां नवरात्रि के 9 दिन मंदिर में सज–धज कर बैठी है और यहां के लोग नवरात्रि के 9 दिन देवी मां को धूप देने रोज सुबह मंदिर आते हैं। इन दिनों मंदिर में बहुत ज्यादा भीड़ रहती है। मंदिर में नौ दिनों तक पुरोहितों द्वारा जाप किया जाता है। नौवे दिन मंदिर की यज्ञशाला में पूर्ण आहुति देने के बाद ही यह जाप समाप्त होता है ।

8. वैशाख मास के साजे वाले दिन यहां माता बाहर निकलती है और नाचती है। देवी के बाहर निकलने से पहले यहां एक अन्य गतिविधि होती है जिसमें गांव के सभी पुरुष और लड़के बुरांस के फूल को तीर या पत्थर से मारते हैं। इन सब के बाद पनाऊ और रांघड़ गांव की औरतें पुरुषों को शिरा सुनाती है। इन सब गतिविधियों के बाद ही माता बाहर निकलती है और मंदिर से कोठी तक जाती है, जिसके दौरान गांव की सभी महिलाएं देवी को धूप देती है।

9. श्रावण के साजे वाले दिन यहां शाहू का त्यौहार मनाया जाता है जिसमें गांव तक माता बाजे के साथ जाती है और कोठी के प्रांगण में सभी औरतें देवी मां को धूप देती हैं। इसके बाद देवी मां को नचाया जाता है । इस दिन यहां के सभी लोगों के घरों में अच्छे –अच्छे पकवान बनते हैं।

10. भाद्र मास में यहां साजे के दूसरे दिन छोटा होम या जाग जगाई जाती है या मनाई जाती हैं। जिसमें देवी की हार के सभी लोग अपने अपने घरों से मशाल लेकर मंदिर तक आते हैं और वहां जाग जगाई जाती है।

11. जाग या छोटे होम के 10 से 15 दिनों के भीतर बड़ा होम मनाया जाता है। इस दिन भी सभी लोग अपने–अपने घरों से मशाल लेकर मंदिर आते है। देवी का मुख इस दिन करली में रांघड़ से नाऊ तक लाया जाता है।

12. जगराते के बाद यहां मेला लगता है। जिसमें दूसरे स्थानों से देवी–देवताओं को बुलाया जाता है। लोगों के घरों में भांति – भांति के पकवान बनते हैं। मंदिर के प्रांगण

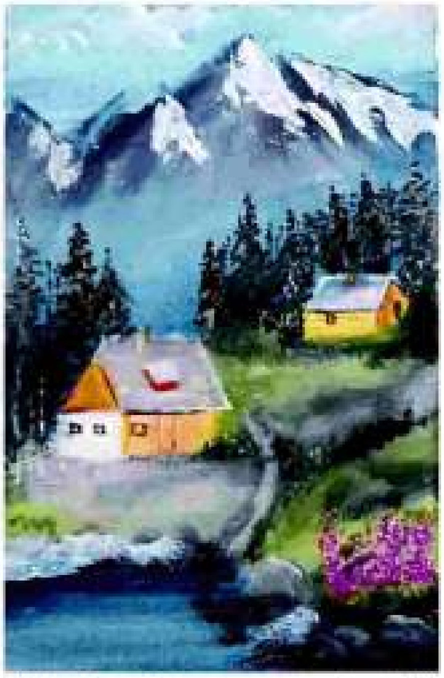

में देवी–देवताओं का नृत्य होता है। मेले में बहुत सारी दुकानें और झूले लगते है। जगराते को देवी मां के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है और इस दिन गांव के लोगों के साथ–साथ बाहर के लोग भी व्रत करते है और इस व्रत को रात को 12 बजे के बाद या अगले दिन सुबह खोला जाता है।

13. दीपावली का त्यौहार – कार्तिक मास में दीपावाली का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन यहां संध्या के समय गांव के लोग मंदिर आते हैं और दीपक जलाते हैं। साथ ही मिठाइयां भी चढ़ाते हैं। मंदिर के प्रांगण में सभी लोग घास को बांध कर उसमें आग लगाते है और उसे गोल–गोल घुमाया जाता है। फिर पटाखे भी जलाए जाते हैं।

14. अश्विन मास में यहां नवरात्रि को पुनः धूम–धाम से मनाया जाता है ।

15. अश्विन मास में यहां सायर का त्यौहार मनाया जाता है। जिसे यहां शयरी साजा कहा जाता है। सायर से एक दिन पहले शयरी इकट्ठा की जाती है। जिसमें मक्की का पेड़, देसी आलू का पौधा, धान, माह का पौधा और सभी प्रकार की नई फसलों को इकट्ठा कर के घर के अंदर लाया जाता है और इनकी पूजा आरती करने के बाद सुबह उन्हें पानी में प्रवाहित किया जाता है।

16. जन्माष्टमी का त्योहार – हमारे गांव में जन्माष्टमी का त्यौहार भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। गांव के राधा कृष्ण मंदिर को सजाया जाता है। यहां के लोग इस दिन व्रत रखते हैं और रात को 12 बजे के बाद श्री कृष्ण को झूला झूलाने के बाद व्रत खोला जाता है। मंदिर के बाहर एक झूला बनाया जाता है जिसे फूलों से सजाया जाता है। फिर श्री कृष्ण को उसमें रखकर उन्हें झूला झुलाया जाता है। इसके 7–8 दिन बाद मेला शुरू हो जाता है जिसके लिए सभी घरों के अंदर जौ बीजे जाते हैं और उनकी सिंचाई गर्म पानी से की जाती है। इन्हें ढक कर रखा जाता है ताकि इन पर ध ूप ना पड़ सके, धूप ना पड़ने के कारण इनका रंग उगने के बाद पीला होता है। श्री कृष्ण के मंदिर के पास लोग कीर्तन करते हैं और 12:00 बजे राधा कृष्ण को झूला झुलाकर प्रसाद ग्रहण किया जाता है इसके बाद भी लोग सारी रात कीर्तन करते हैं और प्रातःकाल चार–पांच बज जाने पर अपने–अपने घर जाते हैं।

17. माल का त्यौहार – यह त्यौहार आश्विन मास या कार्तिक मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन सभी लोग मंदिर में सुबह धूप देते हैं और मंदिर में अखरोट भी चढ़ाए जाते हैं। बाद में सभी लोग अपने–अपने बैल लेकर मंदिर के आंगन में आते हैं और उन्हें एक दूसरे के साथ लड़ाया जाता है । इस दौरान उन पर बहुत से अखरोट फेंके जाते हैं । इस लड़ाई में जिस किसी का भी बैल जीत जाता है वह गांव के लोगों को चाय और हलवा खिलाते हैं। इसके बाद सभी गांव वाले अपनी–अपनी गाय बछड़ों की पूजा करते हैं और उन्हें फूलों की माला पहनाते हैं, उन पर अखरोट भी फेंके जाते हैं। शाम के समय देवी मां का रथ बाहर निकलता है और इस दिन गुरु कार्रवाई भी होती है। गांव की सभी औरतें अपने–अपने घर से त्राणी (धड़छ) लेकर आती है और अनाज की एक टोकरी भी लेकर आती है, उसी से उस दिन धूप भी दिया जाता है। मंदिर के प्रांगण में देवी नाचती है और गुरु में प्रकट हो जाती है। गुरु मंदिर से गांव तक सभी लोगों की त्राणी को नचाता है। गांव में कोठी के प्रांगण में गुर बची हुई सभी त्राणियों को नचाता है। इसके बाद देवी मां को नचाया जाता है। बाद में देवी कोठी में विराजमान हो जाती है।

18. आशाढ़ के महीने में आशाढ़ के 20 प्रविष्टे को 'आशाढ़ की 20' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन गांव वाले देवी मां को धूप देने के बाद डोरी चढ़ाते हैं और शाम को देवी का रथ बाहर निकलता है और धूप ग्रहण करने के लिए मंदिर से देवी मां गांव तक जाती है और फिर अपनी कोठी में विराजमान हो जाती है।

स्थानीय देवी मां अंबिका का रहस्य :

यह उस समय की बात है जब यहां के लोग रांघड़ गांव में देवी के भंडारी के यहां जुआरी पर गए हुए थे। उस समय उनके खेत में किसी फसल की निंडाई हो रही थी। जुआरी के लिए नाऊ,पनाऊ, सुआड़ी , जोरी की औरतें आई हुई थी। उनमें से एक औरत जब निंडाई कर रही थी तो उनकी किनली किसी सख्त चीज में टकराई जब उसने खुदाई की तो उसने देखा कि यह तो सोने का मुख है और उसे माया मिल गई है। उसने सोचा कि मैं इसे छुपा कर रखूंगी किसी दूसरे को नहीं दिखाऊंगी। जैसे ही उसने अपने कपड़ों में उसे मुख को छुपाने की कोशिश की तो उसे सांप ने लपेट लिया क्योंकि उसके मन में लालच पैदा हो गया था। कहा जाता है कि वह मुख ही सांप में बदल गया था और जब उसने उसे मुख को नीचे फेंका तो वह पुनः मुख बन गया। साथ वाले लोगों ने जैसे ही उसे मुख को देखा तो उनके मुंह से 'जय माता दी' निकल गया। फिर जब उन लोगों ने यह मुख देखा तो उन्हें पता चला कि यह तो देवी मां का ही मुख है।

बाद में जब वह नुआल नाऊ से रांगड़ गया तो उन लोगों ने उसे बताया कि यहां पर देवी मां का मुख मिला है। फिर उन सब ने उस मुख को एक करली में डालकर नाऊ पहुंचाया। तब से लेकर प्रत्येक वर्ष इसी प्रकार से माता के मुख को रांघड़ से करली में डालकर नाऊ लाया जाता है और लोग मशाल लेकर माता का स्वागत करने के लिए गेट से मंदिर तक कतार में खड़े हो जाते हैं।

गांव का सबसे प्राचीन मंदिर – नाऊ में सबसे पुराना मंदिर हमारी यहां की देवी का है। पहले मंदिर का क्षेत्र थोड़ा छोटा था फिर इसे बहुत बड़ा बनाया गया मंदिर के साथ–साथ सरांय भी बनाई गई थी जिन्हें बाद में काफी बड़ा बना दिया गया। मंदिर के साथ ही यज्ञशाला भी बनाई गई है। जिसमें प्रत्येक वर्ष नवरात्रि को यज्ञ किया जाता है।

मंदिर के साथ–साथ गांव में माता की एक कोठी भी है जहां पर माता के साथ–साथ निरमंड से आए परशुराम जी और जोगनी माता भी रहती है।

व्यापार : पहले यहां सड़कों की ज्यादा व्यवस्था न होने के कारण यहां से व्यापार भी नहीं हो पाता था। यहां के लोग खुद से उगाए हुए अनाज से ही अपना भरण – पोषण करते थे। उस समय की मुख्य फसल थी – कोदरा, मक्की, जौ, गेहूं आदि। उस समय लोग अधिकतर हरी सब्जियां खाया करते थे ।

वाद्य यंत्र : वाद्य यंत्र बजाने वाले सभी लोग निरमंड से नहीं आए थे। कुछ एक को हमारे पूर्वजों द्वारा यहीं आस–पास से लाया गया था और उन्हें यहीं बसाया गया था। वाद्य यंत्रों में ढोल , नगाड़े , करनाल, नरसिंगे, बाम , ढाव, भाण इत्यादि शामिल है इनके अलावा अन्य भी कई प्रकार के वाद्य यंत्र पाए जाते हैं। इन्हें अलग–अलग लोगों द्वारा बजाया जाता है। जैसे–जैसे गांव की आबादी बढ़ने लगी वैसे–वैसे गांव के लोग बाहर के लोगों के साथ संपर्क में आए।

नैना शर्मा (कला स्नातक द्वितीय वर्ष)

साक्षी शर्मा (कला स्नातक द्वितीय वर्ष)

दो– गाँव धार

मेरे गाव का नाम धार है इसका नाम धार इसलिए पड़ा क्योंकि मेरा गाँव पहाड़ी के शिखर पर स्थित है। धार का अर्थ होता है पर्वत या पहाड़ी की शिश्वर की जगह, जहाँ से हम दूसरी पहाडियों को देख सकते है यहाँ के खेत खलिहान तथा पेड़–पौधे गाँव सुन्दरता को और अधिक सुन्दर बनाते है आस पास यहाँ कई और गाँव है जैसे राही, बेहड़, कंडीखत तथा देवधार आदि। कहा जाता है कि प्राचीन काल में कम मात्रा में घर होते थे। लोग एक दूसरे से बात करने के लिए आवाज डालते थे। पुराने समय में यहाँ लोगों को जलाया जाता बाद बाद में यहाँ घर बनने शुरु हो गए। हमारे गाँव के स्थानीय लोग दूसरी जगह से आकर यहाँ वस गए है। प्राचीन काल में लोगों के पास पहनने के लिए कपड़े तथा पैरों के लिए जूते नहीं होते थे तथा एक व्यक्त दूसरे व्यक्ति से पहनने के लिए कपड़े मांगते थे अगर आबादी की बात की जाए तो हमारे गाँव में बहुत कम आवादी थी गाँव में कुछ टोली होती थी। प्रत्येक टोली में कुछ एक परिवार होते थे हमारे उस समय दो तीन ही टोलियाँ थी। काफी कम मात्रा में लोग गाँव में रहते थे।

गाँव का देवता / देवी गाँव में विभिन्न प्रकार के देवी–देवता है। जैसे वीर देवता, मारकण्डेय ऋषि, चुन्जवाला जी, माता हडिम्बा जी यहाँ के स्थानीय देवता है। वीर देवता हमारे गाँव का ही देवता है जिसे गाँव वाले पूजते है। हमारा कूल देवता श्री बिरुडू नाथ नारायण जी है जो कि वहां के स्थानीय देवता है। मारकण्डेय ऋषि जी के बारे में कहा जाता है कि यह देवता पहले ऋषि था। घोर तपस्या के बाद इसने देवता का रूप धारण किया। चुन्जवाला जी हमारा यहाँ का प्रमुख देवता है। जिसे महाकाल का रूप कहा जाता है। चुजवाला देवते की सात हारे है। हारे का अर्थ होता है जहाँ जहाँ देवता जाता है। माता हडिम्बा जी हमारे यहाँ की देवी है जो मनाली से आकर यहाँ बस गई है। इसे काली माता का अवतार कहा जाता है। जब हमारे गाँव में देवी–देवता आते हैं तो देवता को ढोल करनाली वाद्ययंत्र बजाकर देवता को लाया जाता है। फिर फूलों की माला पहनाई जाती है। रात को घंडी–शंख बजाकर पूजा की जाती है।

चुंजवाला मंदिर बागीचाच गट : एक अनोखी कथा और अलौकिक स्थल –

चुंजवाला महादेय मंदिर एक ऐसा स्थल है जो अपनी अनोखी कथा और अलौकिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। और यहाँ की कथा इतनी रोमांचक है कि यहाँ के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं को भी आकर्षित करती है।

प्राचीन समय की घटना, प्राचीन समय में, एक ब्राह्मण की औरत ने फूटे परवाडे नामक स्थान पर घास काटने के लिए गई। घास काटने के दौरान, उसकी दराटी एक पत्थर से टकराई, और वहाँ से तीन धाराएँ निकलने लगी । एक रक्त की, दूसरी दूध की तथा तीसरी घी की। यह एक शिवलिंग था। यह देखकर वह औरत भयभीत और अचंभित हो गई।

यह घटना उसके लिए एक अद्भुत और अविश्वसनीय अनुभव था। वह दौड़ी दौड़ी गाँव पहुंची। यह घटना गाँव वासियों को बताई, सारे गाँव के लोग उसकी बात सुनकर इस स्थान पर पहुंचे और विचार–विमर्श करके यह निष्कर्ष निकाला की इस शिवलिंग को गाँव ले जाते है। कुछ लोग ने यह शिवलिंग उठायी और गाँव की तरफ चल पड़े, पर यह शिवलिंग बहुत भारी थी। जिस कारण उन सभी लोगों ने आधे रास्ते में विश्राम किया

फिर विश्राम के बाद पुनः शिवलिंग को उठाना चाहा परन्तु सारे विफल रहे। यह शिवलिंग यहीं पर स्थापित हो गई । जहाँ आधुनिक समय में चुनवाला महादेव का मूल मंदिर है वागीचाच गढ़ में) मंदिर का निर्माण मकड़ी के जाले के आधार पर, इस स्थान पर मंदिर बनाने की सुझ सझी, दुर्भाग्यवश उन लोगों में आपस में वाद विवाद पैदा हो गया। इस बात पर कि मंदिर का आकार कैसा होना चाहिए और गर्भगृह का मुख्य द्वार किस दिशा में बनाना चाहिए। इसी बीच अंधेरा हो गया सारे लोग अपने अपने घर चले गए जब सवेरे यहाँ पहुंचे तो यहाँ का .श्य देखकर आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि मकड़ी ने स्वंय इस मंदिर का जाला तैयार किया। इसी जाले के आधार पर ही मंदिर का निर्माण किया गया। चुजवाला महादेव मंदिर का जगराता प्रतिवर्ष 13–14 मई को मनाया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण त्योहार है। जिसमें श्रद्धालु भगवान शिव की पूजा अर्चना करते है और उनकी .पा की प्रार्थना करते हैं। चुन्जवाला महादेव सकंटहर्ता हैं, .पालु हैं और भक्तवत्सल हैं। यह अपने भक्तों की मनोकामना सदैव पूर्ण करते हैं। आध्यात्मिक शांति और भगवान शिव की अनंत महिमा का अनुभव कराता है। यह मंदिर अपनी अनोखी कथा अलौकिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। जो आपको आकर्षित करती है और आपके जीवन को एक नई दिशा देती है इस मंदिर की कथा हमें यह सिखाती है कि भगवान शिव की .पा और महिमा अनंत है और वह अपने भक्तों की मनोकामना सदैव पूर्ण करते है। यह मंदिर एक अलौकिक स्थल है। जो आपको आध्यात्मिक शांति और सुकून का अनुभव कराता है।

चुंजवाला महादेव मंदिर जाने से आप :

– भगवान शिव की अनंत महिमा का अनुभव करेंगे। – आध्यात्मिक शांति और सुकून का अनुभव करेंगे।
– अपने जीवन को एक नई दिशा देंगे। – भगवान शिव की .पा और आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

इसलिए, यदि आप एक आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करना चाहते है और भगवान शिव की महिमा को जानना चाहते है, तो चुंजवाला महादेव मंदिर का भ्रमण जरूर करें।

सुनीता द्वितीय वर्ष

तीन– गांव टिल्ली

मेरे गांव का नाम टिल्ली है। इसका अर्थात टिल्ला या टिले पर बसा हुआ। इसका नाम माता के नाम पर पड़ा जिनका नाम टिल्ली की माता है। कहते हैं कि यहां के लोग पहले माता के साथ रहते थे और बाद में वे लोग यहां जा बसे इसलिए इसका नाम टिल्ली पड़ा। अनुमानतः यह 18वीं ई० में बसा होगा। यहां के लोग इसी इलाके में अलग जगह से आए हैं। पहले ये लोग याची नामक जगह पर रहते थे। कोई लोग कन्नौज नामक जगह से आए हैं। कोई लोग मड़ी से आकर बसे हैं।

हमारी स्मृति में 50–60 लोग यहां रहते थे। गांव के देवता भगवान श्री खवलाशी नारायण जी हैं। अंग्रेजों के समय में यहां के आस–पास के इलाकों में राणा–ठाकुर राज करते थे, ये ठाकुर और राना परिवार से थे जिसमें कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार से हैः–

(प) कोटली के राना

कोटली रियासत के राजा मंडी राज्य के अधीन थे और स्थानीय प्रशासन में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने अंग्रेजों के शासनकाल में अपनी जागीर को बचाने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों के साथ सहयोग बनाए रखा।

करसोग के ठाकुर

करसोग क्षेत्र के ठाकुरों का भी मंडी राज्य और अंग्रेजों के साथ निकट संबंध था।नामक स्थान पर बसे थे वहां के लोगों को भगवान की वहोलत या सोना चादी पैसा इत्याति परिणामस्वरूप लोगों में ईर्ष्या, लोग, क्रोध पैदा हो गया। एक दिन एक भाई का बछड़ा दूसरे भाई के खेत में चला जाता है। जिसने अपने खेत के चारों ओर सोने की तारें लगाई थी । दूसरे भाई ने क्रोध में आकर बछड़े को कार दिया। इससे प्रभु बहुत नाराज हो गए। उसी गांव की एक औरत रोज घास को जाती थी उसे पहारी से एक आवाज आती थी मैं आऊं? एक दिन उसने कहा हुआ जा और वो पूरा पहाड़ नीचे गिर गया उसके कई वर्षों बाद एक औरत पसारसा से खवलाश को शाग बचने जाती थी एक दिन भी वो जाती है रास्ते मैंइसे एक पत्थर मिलता जिससे वो अपने किलटे में डालती है। धीरे–2 को किल्टा भारी से गया उसने साथ साग नीचे फेंक दिन फिरखवतारां नामक स्थान पर वह किल्य नीचे रख देती है वहां पत्थर की मूर्ति बन जाती है। लोगों को देव खेल आती है और वह अपनी अस्तित्व को बताते है। मुंह से बाजा बजाए जाते हैं।

यह इलाका रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था, और ब्रिटिश सरकार यहां के ठाकुरों से समर्थन लेती थी।

राना ठाकुरों से जुड़े लोकगीत :

मंडी के राना और ठाकुरों पर भी कई गीत प्रचलित थे, खासकर तब, जब ये किसी युद्ध में लड़ते थे या कोई ऐतिहासिक घटना घटती थी।

राना जी की फौज चले,
घोडियां चढ़े सजीले,
चाँद तलवार लहराए निशान १६६

मंडी के व्यापारी लेह – लद्दाख, तिब्बत और चीन तक विभिन्न व्यापारिक मार्गों के माध्यम से अपना सामान पहुंचाते थे। ये मार्ग आमतौर पर हिमालयी दर्रों से होकर गुजरते थे। कुछ प्रमुख मार्ग इस प्रकार थे। मंडी–कुल्लू–लाहौल–स्पीति–लेह मार्ग मंडी से व्यापारी कुल्लू होते हुए लाहौल–स्पीति के किलोंग और फिर लेह–लद्दाख तक जाते थे। इस मार्ग से ऊन, परमीना, नमक और जड़ी बूटियों के व्यापार प्रसिद्ध थे।

मण्डी, किन्नौर–तिब्बत मार्ग मण्डी से व्यापारी रामपुर बुशहर होते हुए किन्नौर जिले के शिपकी ला दर्रे से तिब्बत तक पहुंचते थे। इस मार्ग से तिब्बती ऊन, नमक, चारा और जड़ी–बूटियों का व्यापार किया जाता था। मंडी–चंबा–जोजिला दर्रा–कारकोरम मार्ग मंडी से व्यापारी रामपुर बुशहर होते हुए किन्नौर जिले के शिपकी ला दर्रे से तिब्बत तक पहुंचते थे। इस मार्ग से मध्य एशिया तक व्यापार के लिए प्रयोग किया जाता था। इस मार्ग से व्यापारी चंबा से जोजिला दर्रे होते हुए लेह लद्दाख और फिर चीन के यारकंद व काशगर तक पहुंचते थे।

यहां के स्थानीय निवासी बाहरी लोगों के सम्पर्क में कब आए? उनके आने के बाद गांव में अच्छे या बुरे बदलाव यहां के स्थानीय

निवासी बाहरी लोगों के सम्पर्क में बहुत पहले ही आ चुके थे। यहां पर्यटन बढ़ता चला गया। इससे यहां पर अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के बदलाव देखने को मिलते हैं जो इस प्रकार से हैं। अच्छे बदलाव (सकारात्मक प्रभाव) आर्थिक सुधार और व्यापार का विकास पर्यटन से स्थानीय लोगों को नौकरी और व्यवसाय मिला सेब और अन्य फलों की खेती में सुधार हुआ।

शिक्षा और आधुनिकता का प्रसार बाहरी लोगों के सम्पर्क में आने से गांव में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी। स्कूल और कालेजों की संख्या बढ़ी जिससे बच्चों को बेहतर शिक्षा मिली। इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क का विस्तार हुआ। स्वस्थ सुविधाओं में सुधार बाहरी सम्पर्क बढ़ने से गांवों में अस्पताल, क्लीनिक और स्वास्थ्य सेवाएं पहले से बेहतर हुई। एलोपैथिक इलाज के साथ–साथ आयुर्वेद और प्रा.तिक चिकित्सा का भी विकास हुआ। बुरे बदलाव (नकारात्मक प्रभाव) पारंपरिक संस्कृति पर असर बाहरी संस्कृति के प्रभाव से स्थानीय परंपराएं, रीति–रिवाज और बोलियां धीरे–धीरे कमजोर हो रही है।

2. अपराध दर में वृद्धि व पर्यटन के बढ़ने से नशे, जुआ और अन्य अवैध गतिविधियों में वृद्धि हुई।

3. पर्यावरणीय समस्याएं व जगलों में अंधाधुंध कटाई और अतिक्रमण से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है।

गांव में बहुत से मन्दिर है। सभी घरों में अपने कुल देवता का मन्दिर बना हुआ है चाहे वो अन्दर बना हो या बाहर। यहां पांच वीर का मन्दिर, हनुमान जी का मन्दिर, जरासंध भगवान का मन्दिर ख्यादि बहुत से मन्दिर है। वाद्य यन्त्र निम्नलिखित है :–

– ढोल, नगाड़ा, करनाल, शहनाई। इन्हे स्थानीय लोगों द्वारा ही बजाया जाता है। वे इसमें बचपन से ही निपुण होते हैं।

यहाँ मन्दिर व द्वार काष्ठकुणी शैली के बने होते हैं। यहाँ ज्यादातर घर पत्थर ईंटों सीमेंट से बने हैं और पुराने घर काष्ठकुणी शैली के हैं। यहाँ के मन्दिर का निर्माण पूर्वजों द्वारा किया गया। कुछ मन्दिरों को तोड़कर नया बनाया गया। इन मन्दिरों को पूर्वजों द्वारा ही बनाया गया था।

अंग्रेज आये देश लुटायो अंग्रेज आये देश लुटायो, सोने की चिड़िया पिंजरे में डालो। राजा–महाराजा सब डरकर भागे, किसान–मजदूर रो–रोकर जागो। चौपट कर दी खेती–बाड़ी, लूटा धन–दौलत सारी।।

कर मत रे किसान
अंग्रेज बोले कर दे,
तेरी हस्ती थी हम ले ले रे।
गाँव–गाँव में कहर मचाया,
किसान का सारा अन्न खाया।
हल चला के अन्न उगाया,
पर कर तेरा हम बढ़ाया।
बच्चे तेरे भूखे रोते,
पर फिरंगी दौलत संजोते।

मेरे गांव का मन्दिर 500–600 साल पुराना बताया जाता है। यह काष्टकुणी शैली का बना हुआ है। इसमें लकडी की सीढ़ी ऊपर जाने के लिए है। यह बहुत पुराना हो चुका है परन्तु देवता जी आज भी वहां आते है और रहते हैं। इसके दरवाजे छोटे होते है। अन्दर जाने की जगह छोटी होती है। देवता जी थोडे – थोडे समय के बाद आते है। पुराना होने के कारण इसमें लोग नहीं जा सकते। यहां समय–2 पर सफाई होती रहती है ताकि यहां साफ–सफाई की रहे। यहां लोग काम तो नहीं करते पर अपनी इच्छा से सभी कामों में हाथ बटाते हैं। यह ऐसी जगह पर बसा हुआ है। जहां से सारी जगह दिखाई देती है। वह पूरी तरह से लकड़ी से बना हुआ है। इसकी छत पर चाके लगे है जो स्लेट होती है। जो इसे बारिश, हवा इत्यादि से बचाती है। लोगों का भी उस मन्दिर के ऊपर पूरा विश्वास होता है जो उनके आज के जीवन में पूरे तौर से बताता है।

– सुमन, बीए द्वितीय वर्ष

लोककथा / देव–परम्परा

एक : नानाजी

यह लोककथा हमारे गांव के एक नाना जी की है। जिनका नाम श्री लाल सिंह है। वह बहुत ही मनोरंजन करने वाले इन्सान है। वह तरह–तरह की आवाज़े निकालते हैं तथा लोगों की भी हुबहुय आवाज़ निकालते हैं। एक बार क्या हुआ कि वो और उनका बड़ा बेटा कुली का काम करने के लिए कुल्लू चले गए। एक दिन उन्होंने सुबह काम किया और शाम के लिए चिकन और शराब लाया। उनकी एक खास बात यह थी कि अगर वे एक बार शराब पी लें तो उन्हें शराब इतनी चढ़ जाती थी कि वे अपने होश में ही नहीं रहते थे। उन्हें शराब इतनी चढ़ गई थी कि क्या ही बोलें। वे रात को अनेक जानवरों की आवाज़ निकालने लगे, जैसेः– कुत्ता, बकरी, भेड़, शेर इत्यादि। जहाँ पर लाल सिंह का तम्बू लगा था उसके आस–पास ही फिल्म की शूटिंग करने वाले लोगों का भी तम्बू लगा था जोकि शहर से आए थे। सुबह उठते ही वहाँ पर फिल्म की शूटिंग करने लगे कि क्या रात को आपने बकरा काटा था। क्या तो वे बोले नहीं। शूटिंग करने वाले बोले कि रात को तो बकरे की आवाज़ आ रही थी। तो वहाँ पर मौजूद लोगों ने कहा कि वे आवाज़ तो लाल सिंह निकाल रहे थे। हमने कोई बकरा नही लाया था। तो वे लाल सिंह को फिर से जानवरों की आवाज़ निकालने के लिए कहते हैं। तो लाल सिंह कहते है कि नहीं वो आवाज़ें तो मैं तब निकालता हूँ जब मुझे शराब लगी हो। तो वे बोले की ठीक हैं आज रात हमारी तरफ से खाना और शराब आएगा। तो उन्होंने रात को सभी लोगों के लिए चिकन और शराब लाया। फिर उन्होंने लाल सिंह को अनेक आवाज़े निकालने के लिए कहा। जोकि उन्होंने निकाली। शहर से आए लोगों को उनकी आवाज़े बड़ी पसंद आ गई। तो उन्होंने निर्णय किया कि वे उन्हें आवाज कलाकार का काम करने के लिए शहर ले जाएंगे। परंतु हमारे लाल सिंह वहां गांव वाले थे। उन्होंने सोचा कि पता नही ये लोग मुझे कहाँ ले जा रहे है। तो उन्होंने अचानक ही पीठ दर्द का बहाना बनाया। वे इतना चिखने चिलाने लगे कि उनके बड़े बेटे उन्हें गांव के डॉक्टर के पास ले गए। तो उन्होंने उनका इलाज किया। जब वे कुल्लू से पनारसा पहुँचे तो तब भी उन्हें डर लगा रहा कि वे लोग यहाँ न आ जाएं। किंतु जैसे ही वह अपनी गाड़ी में बैठ जाते है और घर की तरफ आते हैं तो उनकी पीठ दर्द खत्म हो गई। तो यह लोककथा थी हमारे श्री लाल सिंह जी की।

रमा देवी, बीए प्रथम वर्ष

दो– साठ रस्सी एक घोण

यह लोककथा हमारे गाँव में प्रचलित है। इस लोककथा के बारे में मुझे मेरे दादा जी ने बताया था, साठ रस्सी एक घोण के बारे में मुझे एक कहानी सुनाई है। इस लोककथा में यह घटना महार्षि पराशर ऋषि के देव स्थान में हुई हैं। जिसमें पराशर ऋषि के झील के अन्दर एक गिद ने भैंस का कटा हुआ सिर गिरा दिया था जिस कारण झील दूषित हो गई थी। उसमें भैंसे का कटा हुआ सिर गिराने के कारण वहाँ का पानी तेजी से बढ़ने लगा था। उससे पूरा पराशर ऋषि का मन्दिर पूरी तरह से पानी में डूब गया था। पराशर ऋषि देवता का जो गुर था वह उस समय खेत में हल लगा रहा था, अचानक से जब उसने बाकि लोगों की बात को सुना तो पता लगा कि पराशर ऋषि का मंदिर झील में डूब रहा है तो वह गुर भी उन लोगों के साथ मंन्दिर की ओर जाने लगे। जब उन्होंने मन्दिर को अपने आँखों के सामने डुबते हुए पाया तो वह देवता का गुरु बिना कुछ सोचे समझे उस झील के अन्दर चले गए।

बाकी लोग उसको बचाने के लिए उस समय बहुत सी रस्सी तथा एक घोण वहाँ ले आए। उन गाँवों के लोगों ने साठ रस्सी को आपस में बाँध कर उसे एक घोण ए" के साथ बाँध दिया और उसे झील में फेंक दिया। ताकि वह लोग देवता के गुरु को बचा सके, लेकिन वह गुर बाहर नही आता है जिस कारण उन लोगों को लगता है कि वह देवते का गुर मर गया होगा। वह लोग हार मान जाते हैं, और खाली हाथ वापिस आ जाते हैं, उनके घर वालो को उसके मरने की खबर देते है जिससे सभी लोग उदास हो जाते है। इसके साथ ही वह गांवों वालो ने देवता के गुर को मरा हुआ घोषित कर दिया था। लेकिन ग्यारह दिन के बाद जब उनके मरने पर जब लोग उनका पिड़दान करने ही वाले थे । उसी दिन वह देवता का गुरु उस झील से सही सलामत भैंसे के कटे हुए सिर के साथ बाहर आ जाते है और वह उस सिर को दूर फेंक देते है और वापिस घर चले जाते तो सभी लोग उनको जिंदा देखकर हैरान हो जाते है तथा वह सभी खुश हो जाते है। अगले दिन जब सभी गाँवों वाले देवता के मंन्दिर पहुंचते है तो उन्हें देवता की झील बिलकुल साफ सुथरी नजर आती है तो सभी हैरान हो जाते हैं और आपस में कहते है कि यह सब देवता की लीला है।

सपना ठाकुर, बीए द्वितीय वर्ष

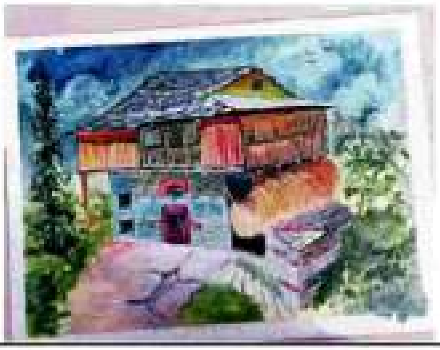

तीन– फागली

मेरे गांव का नाम मल्हई है मेरे गांव पड़ोस वाले गांव में फागली मनाई जाती है उस गांव का नाम छत है। फागली एक त्यौहार है, जो 15 पोष से 2 माह तक मनाई जाती है फागली "श्री" कथनाग देव" द्वारा मनाई जाती है।

कहा जाता है कि फागली समुद्र मंथन के समय से चली आ रही है समुद्र मंथन के समय जो सांप रस्सी बना था, वह श्री वासुकी नाग जी थे। वहीं, गांव में श्री कथनाग के रूप में है। फागली बुराइयों को खत्म करने के लिए मनाई जाती है। मेरी दादी जी कहती है कि समुद्र मंथन के समय भूतो तथा असूरों को भगाने के लिए देवताओं ने असुरो की तरह मखौटे पहने थे। उसी तरह फागली में हर साल मखौटे पहन कर भूतो और बुरी शक्तियों को डरा कर भगाया जाता है।

फागली के समय लोग घरों की साफ सफाई करते है और देवता के नियमों का पालन करते है तथा फागली के समय पुरे गांव के सभी परिवार घर आते हैं जो अन्य जगह काम करने जाते है या कोई पढाई के लिए बाहर गये होते हैं, उनका घर आना जरूरी होता है। माघ की रात को बड़ी फागली मनाई जाती है जिसमे आग जला कर उसके चारो तरफ नाचते तथा फागली के गीत गाए जाते है 'धुनुणाअआ हाई इझुणकु अआ हाई' तथा आग के साथ खेला जाता है सभी पर आग फेंकी जाती है। जिसने भी कुछ बुरा किया होता है, वह उस आग से जल जाता है। वह आग रात भर जली रहती है तथा वह लोग रात से सुबह तक नाचते रहते हैं। फिर अगले दिन फागली के अंतिम दिन बहुत लोग आते हैं और "बोदी" फेंकी जाती है। बोदी फूल और ध्रुव पत्तों से बना एक गुच्छा होता है सभी लोग उसे पकड़ने के लिए नीचे खड़े रहते है। जिसके पास वह बोदी आती है कहा जाता है उसका पूरा वर्ष बहुत अच्छा जाएगा और कुछ खुश खबरी मिलेगी। इसी के साथ फागली खत्म हो जाती है और कहते है कि फागली के गीत उसके फागली खत्म होने के बाद नहीं गाते हैं। वह बहुत शुद्ध शब्द होते है जो सिर्फ फागली के समय गाए जाते हैं।

फागली की प्रमुख लोक कथा : कहा जाता है कि बहुत समय पहले दो भाई छेत गांव के फौज में थे जो फागली के लिए छुट्टी मांग रहे थे पर उनके सर ने छुट्टी देने से इनकार कर दिया और फागली का मजाक उड़ाया। फिर जब वह परेड़ कर रहे थे उस समय सभी फौजी सावधान विश्राम छोड़ कर फागली के गीत गाने लगे और वह सर परेशान हो गया कि यह सब क्या हो रहा है। उन दो भाईयो ने फागली के बारे में बताया और उन दोनो को घर भेज दिया और उस सर ने देवता से माफी मांगी कहा जाता है कि कुछ भी हो जाए फागली में आना बहुत जरूरी होता है।

– वेदिका, बीए द्वितीय वर्ष

चार– दोष लगना

यह कहानी मण्डी जिले से संबधित है। वहां पर एक लड़की थी। जो ब्राह्मणी और वह रोज कॉलेज जाती थी। कॉलेज जाते समय उसे रोज एक लडका छेडता रहता था। वह लडका पंजाबी था। वह रोज उस लड़की का पीछा करता था। और उसे बस में छेडता रहता था। वह उसे बार–बार छेड़ता रहता था। वह लड़की उस लड़के को बोलती रहती थी

वह यह सब न करे परन्तु वह सुनता ही नहीं था। एक बार उसने उसकी क्लास में आकर यह बोल दिया कि जिस हाथ से तू मुझे छेड़ रहा है। तेरा वह हाथ गल जाएगा। उसने उसकी इस बात को अन सुना कर दिया। और वह रोज उसको छेड़ता रहता था परन्तु एक दिन उस लड़के के हाथ में कहीं–कहीं पर छाले पड़ने शुरू हो गए। और धीरे–धीरे उसका हाथ गलना शुरू हो गया था। वह डॉक्टर के पास गया। उसने अपनी बीमारी के बारे में उन्हें बताया डॉक्टर ने दवाई दी लेकिन उससे कुछ असर नहीं हुआ। उसका वह हाथ वैसा ही रहा। डॉक्टर को उसकी बीमारी के बारे में पता ही नही चल रहा था। फिर एक दिन उसको अपना एक दोस्त मिला। उसने उसको बताया कि वह देवता के पास जाए। और उनसे अपनी बीमारी के बारे में पूछा। क्या पता देवता उसे कुछ बता दे। और उसने उनसे पूछा कि उसे यह क्या हो रहा है। तब देवता ने उसे बताया कि उसे किसी का दोष लगा है। और बहुत ज्यादा लगा है। उसे अपनी गलती की माफी

उस लड़की से माफी मांगनी पड़ेगी। तभी कुछ हो सकता है। उसके बाद वह उस लड़की से माफी मांगने गया और उसके पैरों में गिर गया कि वह उसे माफ कर दे। और उसे अपनी समस्या बताई। तभी उस लड़की ने उसे माफ कर दिया। फिर किसी ने उसे बताया कि उसकी इस बीमारी का इलाज एक जगह हो सकता है। वह मौहल नामक एक स्थान पर गया। माता काली का निवास स्थान था। वह माता काली के पुजारियों से मिला और अपनी समस्या बताई। उसे कुछ कार्य करने को कहा, जिससे उसका वह हाथ ठीक हो गया। और वह अपने घर चला गया। यह घटना सच्ची घटना पर आधारित है।

अतः कहा ही जाता है बुरे कामों का फल बुरा ही होता है।

शिल्पा बीए तृतीय वर्ष

पांच– कब आयेगा वसन्त

चन्द्रताल झील, लाहौल को स्पीति नदी से मिलानेवाली घाटी कुजम ला के बगल में एक तराई मे थी। सर्दियों में झील का ऊपर का पानी जम जाता है। गर्मियो मे घनी घास से भरे पर्वत के ढलान सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। चन्द्रताल के जल मे बर्फीली चोटियो के प्रतिबिम्ब का दृश्य बड़ा मनोहारी लगता है। आसपास के गांवो के लोग भेड़ो को चराने वहीं आया करता थे भेड वहां के चरगाहों को छोड़कर जाना नहीं चाहती थी। इसलिए अधिकतर गडेरिये जाड़ा आने तक वही रुक जाते थे।

नीमा चन्द्रताल के सबसे निकटवाले गाँव हेसे का निवासी था। वह अपनी पत्नी डोलमा के साथ रहता था। नीमा हमेशा गर्मियों के आने का इन्तजार करता रहता। नीमा अपने भेड़ो को पहाड़ो पर चढ़ने के लिए ले जाता था। नीमा भेड़ो को छोड़ने के बाद गुफा के सामने सुन्दर नालों के किनारे पर लेट जाता था। एक बार जब पूर्णिमा की रात थी, नीमा झील के निकट अंगीठी के बगल में बैठा था। उसे नींद नहीं आ रही थी।

वह किसी स्त्री का कंठ स्वर सुन कर चौंक गया। उसने पीछे मुड कर देखा तो कुछ दूरी पर झील के किनारे सचमुच एक सुन्दर युवती महीन धवल वस्त्र में लिपटी मुस्कुरा रही थी। वह धीरे धीरे चलती हुई नीमा के पास आई और मधुर मन्द स्वर मैं बोली में चन्द्रताल झील की परी हूँ में तुमसे दोस्ती करना चाहती हूँ। तुम बहुत खूब सूरत लड़के हो। नीमा ने अपना परिचय दिया। मैं यहां गर्मियों में अपने भेड़ो के साथ आता हूं चन्द्रताल परी के बारे मे बहुत कुछ सुना है। वह परी लम्बी मुस्कान थी।

परी ने नीमा को अपने साथ चलने के लिए कहा। झील में कदम रखते ही आश्चर्य हो गया कि नीमा भी परी के साथ पानी की सतह पर चलने लगा, जहां पर भी कदम रखता, वहाँ पानी हट जाने लगा। तभी वहाँ पानी की सीढ़िया दिखने लगी। दोनो सीढियों से नीचे उतर कर एक ऐसे सुन्दर महल मे पहुँचे जहाँ की दीवारों में अन्धेरी रात मे जगमगाते तारो की तरह हीरे जुडे थे। फर्श मानो चमचमाते सोने के पत्तो से बनी हो ।

नीमा ने अनुमान लगाया कि उसे यहां लाने वाली परी अवश्य ही परियों की रानी होगी। रानी परी हर रात नीमा को अपने महल ले जाती और दिन जैसे–जैसे बितने लगे वह चिंतित रहने लगा कि सर्दियां आने पर क्या होगा। एक दिन ठण्ड पड गई। उस रात उसने परी को कहा कि उसे वापस जाना होगा क्योकि मूलकिला के ढलानो पर बहुत कम हरी घास है। यदि वह भेड़ो को तराई मे नही ले गया तो वे बच नही पायेंगे। रानी परी उदास हो गई। उसने अनुरोध किया कि वसन्त ऋतु मे जब फूल खिलने लगेंगे और पर्वत की ढलानो पर हरी घास फिर से उग आयेगी तब तुम जरूर आओगी। यह भी वादा करो कि हम दोनों किसी से कुछ नहीं बोलोगे। आखिरकार जब वसन्त आ गया, वह अपने भेड़ो को लेकर मुलकिला की ओर चल पड़ा । उसने गुफा की सफाई के लिए बाड़ा बनाया और रात मे झील के तट पर रानी की प्रतिक्षा करने लगा । कई राते बीत गई। पर परी दिखाई नहीं पड़ी क्या वह उससे नाराज हो गई? यह उसे कैसे पता चलेगा। कुछ दिनो के बाद उससे रहा नही गया। यदि वह नहीं आती तो मुझे उसके पास क्यों नहीं जाना चाहिए। नीमा धीरे–धीरे झील के पानी में उत्तरा और आगे बढ़ने लगा। वह गहराई में उतरता चला गया, पर मध्य तक नही पहुंच पाया। उसके बाद उसे किसी ने नहीं देखा।

श्वेता, बीए द्वितीय वर्ष

छह– अम्बिका माँ का इतिहास

(नाऊ होम का इतिहास)

बहुत समय पहले की बात है, यह घटना मंडी जिले के नाऊ गांव की है। पुराने समय की बात है कि पहले के लोग अपना घर चलाने के लिए खेतो में अनाज बिजते थे तथा उसी से अपने परिवार का पालन–पोषण करते थे। एक बार एक औरत खेतों में काम कर रही थी तो खुदाई के समय उसे एक चमकती हुई चीज मिली, जिसके कारण उस औरत के मन मे लालच आ गया। वह चमकती वस्तु अम्बिका माँ का मुख था। उस औरत के मन मे लालच के कारण उस मुख को अपनी गोद में छुपाने की कोशिश करती, जैसे ही वह औरत उसे छुपाने की कोशिश की परन्तु वह दिव्य मुख सांप में परिवर्तित होने लगा, जिसे उस औरत को अनुमान हुआ कि यह एक दैव्य शक्ति हैं। तो उन्होंने अपने घर में बताया और फिर घर के लोग (मशाल) लेकर माता के मुख को लेने आए थे उसी दिन से हर वर्ष उसी दिन माता का होम मनाया जाता है। और इसे पुरे गाँव में धूम–धाम से मनाया जाता है। इस होम कि शुरुआत उसी दिन से हुई थी, हर वर्ष इस दिन माता को रात को मशाल के साथ लाया जाता है, जिसको माता मिली थी उन्हें अब भंडारी कहा जाता है उस दिन रांगड़ से सिर्फ माता का मुख भंडारी गोद में छुपाकर लाता है तथा उनके साथ ३ दो तीन सौ लोग होते हैं तथा नाऊ पनाऊ के लोग भी सभी टूडी वीर तथा अठारा पैडे की शांगल लेकर इकट्ठा होते हैं, सुबह के समय माता के रथ को पूरा तैयार किया जाता है और सुबह चार बजे माता की आरती होती है। तथा फिर दो तीन दिन तक मेला होता है। और उस मेले में किसी और स्थान से अन्य देवी–देवता भी आते हैं। पिछली बार मेले में बाला–सुन्दरी माता और नारायण वाण की माता आई थी जब उनका मिलन होता है तो उसे मिलना कहा जाता है उस दिन के मेले को बड़ा मेला कहा जाता है।

– हर्षिता, बीए दूसरा सत्र

सात– देव शेषनाग

यह लोक कथा टेपर गाँव के देवता श्री शेषनाग जी की है। कथा शुरु होती है गाँव की एक औरत से जिसके पास 4–5 गायें थी। वह औरत उन गायों को चराने के लिए प्रतिदिन जंगल में ले जाया करती थी। उनमें से एक गाय प्रतिदिन दोपहर 12 बजे भागकर गाँव के समीप बावड़ी के पास जाया करती थी। वह महिला उस गाय को जगल में छोड़ती थी, परंतु शाम के समय उसे वह घर में पाती थी। शाम के समय जब महिला उस गाय का दूध निकालने जाती थी तो गाय बिल्कुल भी दूध नही देती थी। सात दिन से गाय ने दूध की एक बूंद भी नहीं दी थी। महिला को लगता था कि गाय के वन में न चरने और घर आ जाने के कारण वह भूखी रह जाती है। इसलिए उसने सोचा कि क्यों न मैं इसे जंगल में रस्सी से बाँधकर रखूं। इसलिए महिला ने अगले दिन गाय को जंगल मे एकरस्सी से बांधकर रख दिया । परंतु रस्सी से बंधे होने के बावजूद भी वह गाय रस्सी तोड़कर जगल में भाग गई। परंतु आज महिला सतर्क थी। वह गाय के पीछे–पीछे चली आई। वहां पर जो दृश्य उसने देखा, उसे देखकर वह स्तब्ध रह गई। उसने देखा कि सात सिरों वाला साप गाय का दूध पी रहा है। आश्चर्य के मारे उस महिला के चेहरे का रंग उड़ गया परंतु फिर भी उसने अपने आप को संभाला और सांप का परिचय पूछते हुए कहा कि आप मुझे गाय के पीछे भागते भागते सात दिन हो गए और न ही सात दिनों से गाय ने दूध भी नही दिया है। वह सांप से पूछती है कि आखिर आप हो कौन ? सांप ने उत्तर दिया में शेषनाग हूँ। और मैं इस गाँव में निवास करना चाहता हूँ। उस औरत ने पूछा कि मैं कैसे मान लूं कि आप सच में शेषनाग या देवता हैं। सांप ने उत्तर दिया कि मैं किसी न किसी अवतार में प्रकट होऊंगा और उन्होंने उस औरत को उसकी रक्षा करने का वचन दिया। कुछ समय बीतने के बाद महिला के दूध के बर्तन में पिंडी–प्राण (मूर्ति) प्रकट हुई। पिंडी–प्राण अर्थात मूर्ति को देखकर उस महिला को विश्वास हो गया कि यह वास्तव में कोई शक्ति ही है। उसने अपने पति को सारी आपबीती सुना दी। वह अपने पति से निवेदन करती है कि हमें इस मूर्ति की पूजा करनी चाहिए। पति उसके हाँ में हाँ मिलता है और फिर उन्होंने घर में एक छोटे से मंदिर का निर्माण किया और प्रतिदिन मूर्ति की पूजा करने लगे। यह दम्पति निःसंतान थे प्रभु की कृपा से उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई। पुत्र की प्राप्ति के कुछ समय पश्चात पिता की मृत्यु हो गई। उस महिला ने अकेले ही बच्चे का लालन–पालन किया। । कुछ वर्षों बाद उस गांव मे बहुत सारे लोग बस गए थे फिर गांव के लोगो ने मिलकर देवश्री शेषनाग के विशाल मंदिर का निर्माण किया। गांव के लोगों ने मंदिर का कार्यभार सुचारू रूप से संभाला।

कुछ वर्षों बाद महिला के बेटे का विवाह हो गया। उसके तीन पुत्र हुए जिनके नाम सागर, उगर, जागर था। तीनों बड़े होने के बाद तीनों भाईयों ने मिलकर देवता की पूजा, मंदिर का कार्यभार संभाला। धीरे–धीरे देव श्री शेषनाग की प्रसिद्धी पूरी घाटी में फैल गई।

उस समय मंडी के राजा विजय सेन थे। उन्होंने उस समय घाटी के प्रसिद्ध देवी–देवताओं को मंडी शिवरात्री में आमंत्रित किया। उनमे प्रमुख देवी–देवता हैं – शेषनाग, कमरूनाग बरनाग, गणपति, मारकंडा, माता अम्बिका आदि। उस दिन राजा को देव शेष नाग ने सपने में दर्शन दिए और राजा से कहा की भी मैं आपके बेढ़े (दरबार) मे रहना चाहता हूँ। कुछ दिनों के बाद राजा ने सभी देवी–देवताओं को अपने बेढ़े (दरबार) में बुलाया। और उन्होंने देव शेषनाग की पहचान की और उन्होंने देवता से पूछा कि जिन्हें उन्होंने सपने में देखा देखा देव शेषनाग ही थे। देवता ने इस पर अपनी स्वीकृति दी और राजा ने देवता को पूछा कि आप मेरे बेढ़े (दरबार) में आ सकते हो। राजा ने देवता को पूछा कि मैं आपकी और क्या सेवा कर सकता हूँ? इस पर देवता शेषनाग ने कहा कि मुझे अपने पास कुछ जगह चाहिए। तब राजा ने देवश्री शेषनाग को जमीन का टुकड़ा दिया। आज वहाँ पर देवता श्री शेषनाग जी का एक भव्य मंदिर है।

ईशा ठाकुर
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

आठ– माँ श्यामाकाली की कथा

जिला कुल्लु के दलासणी गाँव का एक प्रसिद्ध मंदिर श्यामाकाली माँ का है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले नगर के राजा दो पति पति की नगर से निकाल कर दाही–दलासणी नाम की जगह पर भेजता था। उस व्यक्ति की पत्नि ने वहा से अष्टधातु का बना मुख ले आई। कहा जाता है कि उस अष्टधातु के मुख में माता काली की शक्ति थी। उस स्त्री के पति की मृत्यु होने के पश्चात् उस स्त्री ने उस अष्टधातु से बने मुख को जमीन में दबा दिया। फिर बहुत समय बाद वहा मक्की की निडाई के लिए स्त्रियों का समूह आया। वह सब मक्की की निडाई कर रहे थे। तभी वहाँ रखे स्त्री के उस दिव्य मुख की प्राप्ति हुई। दारी नामक स्थान में उस दिव्य मुख की प्राप्ति हुई। दाही से वह औरत उस मुख को दक्षासणी ले आई। वहा गाँव वालो ने मिल कर माता के रथ का निर्माण करवाया उस रथ की खास बात यह थी कि उसमे बस रख मुख का ही प्रयोग किया गया था जो उस औरत को दाड़ी नामक स्थान पर प्राप्त हुआ। गाँव वालो ने इस समय माता के लिए मंदिर भी बनाया था। परंतु माता के नये मंदिर का निर्माण सन ११५ ई० में बन कर तैयार हुआ। इस मंदिर को बने हुए जा वर्ष पूर्ण हो चुके है लोगो के लिए मे आज भी माँ श्यामाकाली के तन्नो उतनी ही श्रध्या है। माता के मंदिर का निर्माण स्व० सुमन वकील (कुल्लू) ने करवाया था। माता के रथ का निर्माण पुनः हुआ और इस बार माता का रथ मंडप वाला बनाया गया।

कमल कांत, बीए द्वितीय वर्ष

संस्मरण

एक – यादें भूले नहीं भूलेगी

मेरे जीवन की कुछ ऐसी याद जो हमेशा याद रहेगी जो मै कभी भी नहीं भूल सकती हूँ। मैं बचपन में बहुत शरारती थी मैं अपने पूरे गाँव वालों को बहुत तंग करती थी। एक दिन मुझे शरारत करने की सुझी और मैंने और मेरे साथ गांव के कुछ और बच्चे भी थे। हमने घर में आग जला दी वो भी कमरे के अन्दर तभी बाहर से चाची आती है और उन्होने आग बुझा कर हमे वहा से भगाया और उस मम्मी से बहुत बहुत मार खाई। मेरे साथ मेरे चाचु की लड़की थी। माँ ने हम दोनों को मारा था। तब भी नही सुधरे थे। उसके बाद हमने स्कूल में भी बहुत शरारती थी। मैं अपने साथ कुछ और बच्ची को लेकर जाती थी। पानी पीने के बहाने जाकर हम पेड़ो मे झूला झूलने बैठते थे और एक घण्टे बाद हम वापस आते थे। मैं और जो मेरे साथ जो हा वो मुझे धक्का लगाते थे। एक दिन हमारे अध्यापक हमें ढूंढ़ने के लिए आए और देखा। फिर हमारे स्कूल के मुख्याध्यापक ने वह पेड़ की टहनी काट दी। उसके बाद शाम को मुझे सभी कमरों को बन्द करने को कहते चाबी हाथ में घुमाते–घुमाते जाती और चाबी मेरे हाथ से गिर जाती है। मेरे चाचु की लड़की और मेरे भाई की लड़की के साथ रास्ते में हम खेलने लगते हैं। मैंने अपने भाई की लड़की से कहा की हम दोनो दुपट्टे को आगे से पकडेंगे और चाचु की लड़की को पीछे से पकडने को कहा और हम दोनो ने उसे आगे से खींचा और वह गिर गई। उसके माथे पर निशान पड़ा जो अभी तक उसके माथे पर है। उसके बाद हमने उसे छुपाया ताकी कोई गाली ना दे, तभी रात को सारे गाँव वाले उसे ढूंढने चले जाते हैं। और हमने उससे कहा कि अगर आप कोई पूछेगा ये कैसे लगी? तो बोल देना कि मैं भाग गई। हम घर वालों को बताते की वह यहीं पर छुपी है तो फिर घर वाली ने उसे पूछा और उसने वही बोला जो हमने उसे बोलने को बोला था।

दो – बाजू में प्लास्टर

मेरे जीवन मे एक घटना घटी थी। जब मै आठवीं कक्षा मे पढ़ती थी। हम रोजाना स्कूल जाते थे। परतु एक दिन जब हमे हमारे अध्यापक के द्वारा थोड़ी जल्दी स्कूल मे बुलाया गया था। तब उस दिन हम थोड़ी जल्दी स्कूल चले गए। क्योंकि उस समय हमारी टूर्नामेंट की प्रैक्टिस चली हुई थी। मैंने कबड्डी मे भाग लिया था। जिसकी प्रैक्टिस के लिए हम हमारी अध्यापिका ने सुबह 7:30 बजे स्कूल मे बुलाया था। मै सुबह नहा–धो कर स्कूल की ओर निकल गई। जब मै स्कूल पहुँची तो उसके कुछ समय पश्चात् हमारी अध्यापिका ने हमे खेल के मैदान मे बुलाया। और मै और मेरे कुछ साथी मैदान की ओर चले गए। उसके पश्चात् हमारी अध्यापिका के द्वारा हमे वर्कआउट करवाया गया। तथा उसके बाद हमारी अध्यापिका ने हमे दो टीमों मे बाँट दिया। एक टीम मे लड़कियों को बाँटा गया तथा दूसरी टीम मे लड़कों को बाँटा गया। फिर हमारी अध्यापिका के द्वारा हमे कबड्डी की प्रैक्टिस करवाई गई। कुछ समय तक तो कबड्डी की प्रैक्टिस बहुत अच्छे तरीके से हुई हम बहुत खुश थे। परन्तु अचानक से कबड्डी खेलते–खेलते मेरा बाँह टूट गया। .... मेरे बाजू में सूजन आ गई। इसे देखकर मैं बहुत घबरा गई। मेरे अध्यापक तथा मेरे मित्र भी मेरे बाजू में आये। सूजन को देखकर घबरा गए। मेरी एक सहेली के द्वारा मुझे पानी पिलाया गया। पानी पिलाने के पश्चात् मेरे अध्यापकों के द्वारा मुझे से अस्पताल ले जाया गया। मेरे मित्र इस घटना को देखकर बहुत डर गए थे। मुझे अस्पताल ले जाया गया परंतु वहां पर डॉक्टर नही थे। उसके पश्चात् मेरे अध्यापकों के द्वारा मेरे माता– पिता को फोन किया गया। जब मेरी माता जी को फोन किया गया तब मेरी माता जी इस बात को सुनकर बहुत घबरा गई तथा तुरंत अस्पताल पहुँच गयी। मेरी माता जी के साथ मेरी ताई जी भी अस्पताल पहुँच गए। मेरी माता जी तथा ताई जी के द्वारा मुझे दूसरे अस्पताल में ले जाया गया। अब हम दूसरे अस्पताल में पहुँचे तब मुझे वहां पर हड्डी वाले डॉक्टर को दिखाया गया। डॉक्टर को दिखाने के पश्चात् मुझे डॉक्टर के द्वारा सलाह दी गई कि मुझे मेरे बाजू का एक्स–रे निकालना होगा। इस बात को सुनकर पहले तो मैं बहुत घबरा गई तथा रोने लगी। परंतु दूसरे डॉक्टर के द्वारा एक्स–रे निकाले गए। फिर हम एक्स–रे लेकर डॉक्टर के पास गए। तब डॉक्टर के द्वारा बताया गया कि मेरे बाजू की हड्डी टूट गई है। इस बात को सुनकर मेरी माता जी बहुत घबरा गए।

परंतु इसके पश्चात् मेरे बाजू में डॉक्टर के द्वारा प्लास्टर लगाने की सलाह दी गई तथा मेरे बाजू में प्लास्टर चढ़ा दिया गया। यह प्लास्टर मेरे बाजू में डॉक्टर के सलाह के अनुसार एक महीने के लिए चढ़ाया गया था। प्लास्टर लगाने के पश्चात् मुझे बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा था। मुझे बहुत बुरा लग रहा था कि मैं इस बार टूर्नामेंट नहीं खेल पाऊंगी।

– पलक

एक– संगीत

भारतीय संगीत विश्व का प्राचीनतम संगीत है। यह सर्वाधिक प्राचीन तथा अनोखा माना जाता है। विश्व संगीत का जन्म वेद के उच्चारण में देखा जा सकता है। संगीत का सबसे प्राचीनतम भरत नृत्य मुनि का नाट्यशास्त्र है। गायन वादन व नृत्य इन तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं।

गीत वाद्य तथा नृत्य–संगीत मुच्यते।

भारत से बाहर अन्य देशों में केवल गीत और वाद्य को संगीत में गिनते हैं, नृत्य को संगीत में केवल मानते हैं। भारत में भी नृत्य को संगीत में केवल इसलिए गिन लिया गया है कि उसके साथ बराबर गीत या वाद्य अथवा दोनों रहते हैं। ऊपर लिखा जा चुका है कि स्वर और लय की कला को संगीत कहते हैं।

संगीत स्वयं आध्यात्म भारतीय संस्ति का सु‚ढ़ आधार है। भारतीय संस्ति आध्यात्म प्रधान मानी जाती रही है। संगीत से आध्यात्म तथा मोक्ष की प्राप्ति के साथ भारतीय संगीत के प्रभाव नृत्य तत्त्व रागों के द्वारा मनः शांति, योग, ध्यान मानसिक रोगों की आदि विशेष लाभ्म प्राप्त होते है। प्राचीन समय से मानव संगीत की आध्यात्मिक एवं मोहक शक्ति से प्रभावित होता आया है। प्राचीन मनुष्यों ने सृष्टि की उत्पति नाद से मानी जाती है। ब्रम्हाण्ड के सम्पूर्ण जड़ चेतन में नाद व्याप्त है, इसी कारण इसे "नाद ब्रम्ह" भ्भी कहते है। संगीत एक उपासना है, इस कला माध्यम से मोह प्राप्ति होती है यही कारण है कि मानव संगीत के सुर और लय की सहायता से मीरा, तुलसी, सूर और कबीर जैसे कवियों ने ब्रम्ह के आनन्द में लीन हो गए। और अन्त में ब्रम्ह के आनन्द में लीन हो गए। इसलिए संगीत को ईश्वर प्राप्ति का सुगम मार्ग बताया है। संगीत में मन की एकाग्र करने की एक अत्यन्त प्रभावशाली शक्ति है तभी से महर्षि – मुनि इस कला का प्रयोग परमेश्वर की अराधना के लिए करने लगे। संगीत की उत्पति ब्रम्हा द्वारा हुई । ब्रम्हा ने ब्रम्ह आध्यात्मिक शक्ति यह कला देवी सरस्वती को दी। सरस्वती को वीणा पुस्तक धारणी कहकर और साहित्य की अधिष्ठात्री माना गया है। इस आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा सरस्वती ने नारद को संगीत की शिक्षा प्रदान की। नारद ने स्वर्ग के गंधर्व किन्नर तथा अप्सराओं को संगीत की शिक्षा दी। वहाँ से ही व्यरत, नारद, गन्धर्वों और आदि ऋषियों ने संगीत कला का प्रचार पृथ्वी पर किया। आध्यात्मिक आधार पर एक मत यह भी है कि नारद ने अनेक वर्षों तक योग–साधना की तब शिव ने उन्हें प्रसन्न होकर संगीत कला प्रदान की थी। आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ही पार्वती की शयन मुद्रा के देखकर शिव ने उनके अंग–प्रत्यंगों के आधार पर रुद्रवीणा बनाई और अपने पांच मुखों द्वारा पांच रागों की उत्पति की। इसके बाद स्वयं राग पार्वती के मुख से उत्पन्न हुआ। छठा तानसेन का संगीत में योगदान–अकबर के समय तानसेन को नाम से जाना जाता था। अकबर नवरत्नों के नौ मंत्रियों (नौ रत्नों) में से एक माना और उन्हें मियाँ की उपाधि दी। संगीतकार, संगीतज्ञ और गायक थे, जिनकी भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी क्षेत्रों में कई रचनाएँ का श्रेय दिया जाता है। वह रक वाद्ययंत्र भी थे जिन्होंने संगीत वाद्ययंत्रों को लोकप्रिय बनाया और उनमें सुधार किया। तानसेन को उनकी ध्रुपद रचनाओं, कई नए रागों के निर्माण के साथ–साथ दो क्लासिकल किताबें श्री गणेश स्त्रोत और संगीत पर सारा लिखने के लिए याद किया जाता है। उन्होंने ऐसे कई रागों की रचना की जो आज भी प्रचलित है आधुनिक समय में संगीत का योगदान–बीसवीं सदी के शुरुआती दौर के संगीतकार विष्णुदिगम्बर पलुस्कर और विष्णु नारायण भातखण्डे ने हिंदुस्तानी संगीत में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। संगीत को घराने के प्रभाव से मुक्त करने के प्रयास में पंडित विष्णुदिगम्बर पलुस्कर ने १९०१ में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना की, में सबसे बड़ा नाम जिसने संगीत को आसमान की ऊँचाईयों तक पहुँचाया, वो है लता मंगेशकर। १९७४ को गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्डस ने लता मंगेशकर को मानव इतिहास में सबसे ज़्यादा रिकॉर्ड किए गए तक कलाकारों में शुमार किया था। लता मंगेशकर अब से अधिक नमाओं में ३००० एकल, युगल और कोरस समर्थित गाने रिकॉर्ड करने का श्रेय दिया गया । अपने जीवनकाल में उन्हें ४०००० से ज़्यादा गानों का श्रेय दिया गया। लता मंगेशकर ही एकमात्र ऐसी जीवित व्यक्ति थीं जिनके नाम से पुरस्कार दिए जाते हैं। संगीत के लाभ–संगीत हमारे लिए काफी महत्पूर्ण है। और यह हमारी दैनिक जिन्दगी का हिस्सा बन चुका है। संगीत केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं सुना जाता, इसके कई सारे फायदे भी है। तनाव कम होता है–आजकल हर इंसान की जिंदगी दौड़ धूप से घिरी रहती है। काम करते–करते हम बुरी तरह थक जाते हैं। जब हम संगीत सुनते हैं तो हमारा दिमाग रिलैक्स फील करता है। हमारे दिमाग में नई एनर्जी का संचार होता है व हम अच्छा महसूस करते हैं यह स्मृति ह्रास (मेमोरी लॉस) को कम करता है–जिन लोगों की याददाश्त अच्छी नहीं है। उनको संगीत सुनना चाहिए। जिससे उनकी याददाश्त अच्छी हो जाती है। और दिमाग काफी बेहतर तरीके से काम करता है। ह्रदय के लिए भी संगीत अच्छा है– वैज्ञानिकों के अनुसार रोजाना ३० मिनट संगीत सुनने से दिल की दक्षमता के अंदर बढ़ोतरी होती है। एक्सरसाइज के साथ संगीत सुनने से दिल की कार्यक्षमता के अंदर इजाफा होता है। नींद अच्छी आती है– अच्छे संगीत सुनने से दिमाग में चल रहे बेकार के विचारों को विराम मिलता है। और रात के समय दिमाग पूरा खाली हो जाने से अच्छी नींद आती है। आमतौर पर जिन्हें नींद नही आती उन्हें सोने से पहले कुछ देर संगीत अच्छे गाने सुनने चाहिए।

दिलीप, प्रथम वर्ष, संगीत विभाग

दो– संगीत से तनाव दूर कैसे करें

संगीत का भावनाओं और शरीर दोनों पर गहरा प्रभाव हो सकता है। तेज़ संगीत आपको ज्यादा सतर्क और बेहतर ध्यान केन्द्रित करने में मदद कर सकता है। उत्साहपूर्ण संगीत आपको जीवन के बारे में ज्यादा आशावादी और सकारात्मक महसूस करा सकता है। धीमी गति वाला संगीत आपके दिमाग को शांत कर सकता है। और आपकी मासपेशियों को आराम दे सकता है, जिससे आप दिन भर के तनाव को दूर कर सकते हैं। संगीत विश्राम और तनाव प्रबंधन के लिए प्रभावी है।

शोध के साथ इन व्यक्तिगत अनुभवों की पुष्टि करता है। वर्तमान निष्कर्ष संकेत देते हैं कि प्रतिमिनट केवल 60 बीटस वाला संगीत मस्तिष्क को अल्फा बनतेवस (8–14 हर्टस या प्रति सेकेंड चक्रों की आवृत्ति) के कारण होने वाली धड़कन के साथ तालमेल बिठाने बन सकता है। यह अल्फा बेनवेव तब मौजूद होती है जब हम आराम और सचत होते हैं। नींदू लोन कि लिए (5 हटेस की डेल्टा ब्रेनवेव) एक व्यक्ति को आराम की स्थिति में, शांत संगीत सुनने के लिए कम से कम 45 मिनट समर्पित करने आवश्यकता हो सकती है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कहा कि "संगीत सुनने से मस्तिष्क की कार्य कॉरिणी प्रणाली उसी हद तक बदलाव आता है, जितना की दवा से" उन्होंने नोट किया कि संगीत ऐसी चीज है, जिसे लगभग कोई भी व्यक्ति सुन सकता है और यह तनाव कम करने का आसान साधन है।

किस तरह का संगीत तनाव को बेहतर ढंग से कम करता है?

यह थोड़ा आश्चर्यजनक है कि मूल अमेरिकी, सेल्टिक भारतीय ताल वाले वाद्य, श्रम और बांसूरी मध्यम रूप से तेज आवाज़ में बजाए जाने वाले भी मन को शांत करने में बहुत प्रभावी है। बारिश, गरज और प्रकृति की आवाज़े भी आराम देह हो सकती हैं, खासकर जब उन्हें दूसरे संगीत जैसे लाइट जैन, शास्त्रीय ("लार्गी मूवमेंट) और आसानी से सुनने वाले संगीत के साथ मिलाया जाता है। चूंकि संगीत के साथ हमें शायद ही कभी प्रति मिनट बीटस के बारे में बताया जा सकता है।

अपने लिए सबसे आरामदेह संगीत कैसे चुनें?

इसका उत्तर आंशिक रूप से आपके पास है : आपको सबसे पहले बजाया हुआ संगीत पंसद आना चाहिए, और यह फिर आपको आराम देह होना चाहिए। कुछ संगीत आपको आराम दे सकता है कुछ नहीं। खुद को रिसा आरामदेह सुनने के लिए मजबूर करना जो आपको परेशान कर सकते हैं, तनाव पैदा कर सकता है, इसे कम नहीं कर सकता । अगर ऐसा हो तो इंटरनेट पर विकल्प खोजने की कोशिश करें या अन्य सुझावों कि लिए परामर्श सेवा कर्मचारियों से सलाह लें। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि मन को शांत करने का मतलब यह नहीं है कि आपको अपने आप नींद आ जाएगी। इसका अर्थ यह है कि आपका मस्तिष्क और शरीर विश्राम में है, और अपनी नई शांत स्थिति के साथ, आप कई गतिविधियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शित कर सकते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध में संगीत : द्वितीय विश्व युद्ध का संगीत घरेलू मोर्चे पर तैनात लोगों तथा घर से दूर युद्धरत लोगों को प्रेरणा और सांत्वना प्रदान करता था।

शेल्डन विकलर द्वारा :– 20वीं सदी के कुछ सबसे यादगार और चिरस्थायी लोकप्रिय संगीत द्वितीय विश्व के दौरान लिखे गए थे। देशभक्ति अपने चरम पर थी, जो मनोरंजन और लोकप्रिय स्थिति संस्‍ति में परिलक्षित हुई। युद्ध प्रयास मनोरंजक उद्योग का एक अभिन्न अंग बन गया, जिसने लोगों की सामुहिक इच्छाओं और आकांक्षाओं का जबाब दिया। नायकों, प्रेम, स्मरण, प्रतिबिंब और आत्मनिरिक्षण की एक भावनात्मक युद्धकालीन स्वप्निल दुनिया उभरी जो समय बीतने के साथ अधिक आकर्षण होती गई।

1940 के दशक की शुरुआत का लोकप्रिय संगीत उत्कृष्टता के उच्च स्तर पर पहुंचा गया और कई लोगों द्वारा इसे अमेरीका का सबसे बेहतरीन संगीत माना जाता है। हालांकि द्वितीय विश्व युद्ध से सीधे प्रेरित युद्ध–उन्मुख गीतों का प्रतिशत उस अवधि के दौरान रचित लोकप्रिय गीतों के कुल उत्पादन की तुलना में लेकिन इनमे से कई संगीत रचनाएं मानक बन गई हैं जो आज भी लोकप्रिय हैं।

आजूक, मार्गिक, देशभक्तिपूर्ण, मनोबल बढ़ाने वाले और गमगीन थे। कुछ युद्ध द्वारा पैदा की गई राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों के जवाब में लिखे थे। इसमें कोई संदेह नही है कि लोकप्रिय संगीत सैनिकों के साथ–साथ घरेलू स्तर पर मौजूद लोगों को मनोबल बढ़ाने, भय और हताशा को कम करने तथा प्रदान करने और उन शांत वर्षों के दौरान सभी अमेरिकियों को एक राष्ट्र के रूप में एकजुट करने में सहायक रहा।

जब पिछले 1941 में संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूएस में प्रवेश किया, तो देश में देशभक्ति के कई शुद्ध गीत थे। "गॉड ब्लेस अमेरिका" लिरिक मूल रूप से प्रथम विश्व युद्ध के लिए इरविंग बर्लिन ने लिखा था (उस समय रोक दिया गया था और बाद में संशोधित किया गया)। 11 नवंबर, 1938 को आर्मिस्टिस डे रेडियो प्रसारण के दौरान पहली बार सार्वजनिक रूप से गाया गया था। इसे कैट स्मिथ ने लाइव गाया और मार्च 1939 में उनके द्वारा रिकॉर्ड किया गया था। इसे अपनी देशभक्ति, तरल गीत और अपार लोकप्रियता के कारण राष्ट्रगान के प्रतिस्थापन के रूप में सुझाया गया है।

यह भी लोकप्रिय सबसे खुबसूरत युद्ध गीतों में से एक, "एनाइविंगेल सॉन्ग" ग्लेन मिलर ने रे स्वारले की संगीत में 11 अक्तूबर, 1940 को यूनाइटेड स्टेटस में रिकार्ड किया था, जिसे सबसे पहले इंग्लैंड में लोकप्रियता मिली इस स्चना ने वाल्टर पिजस अभिनीत युद्ध कालीन सस्पेंझ मोशन पिक्चर, मैन हंट के के लिए पृष्ठभूमि संगीत के रूप में काम किया, और यह एक लोकप्रिय युद्धोतर फिल्म का शीर्षक भी था। एला फिट्जगेराल्ड का जन्म 25 अप्रैल, 1917 को न्यूपोर्ट न्यूज़, वर्जीनिया में हुआ था। महान बैज गायिका एला फिट्ज़गेराल्ड को उनकी विलक्षण आवाज के लिए "गीतों की पहली महिला", "जैन की रानी" और "लेडी एला" के रूप में जाना जाता है। एला फिटजगेराल्ड की आवाज 1940 के दशक के संगीत साउउद्रेक में प्रमुखता से दिखार की सुपरस्टार और सर्वकालीन महान संगीत गायिकाओं में से एक थीं। जैसा की बी बिंग – क्रास्ती – जो महान गायक थे। – ने एक बार कहा था : "पुरुष, महिला या बच्चा, एला उन सभी से महान है। रिकॉर्डिंग में से एक, फिटज़गेराल्ड की नर्सरी कविता "ए– टिस्केट, ए – टास्केट 11 का विगिग संस्करण चार्ट पर एक नबर पहुंचा और 1938 में उन्हें प्रसिद्धि दिलाई। एल्बम की इस लाख से अधिक प्रतियां बिकी।

राखी, प्रथम वर्ष, संगीत विभाग

Red Ribbon Club Activities

SWARANJALI

The Music Festival

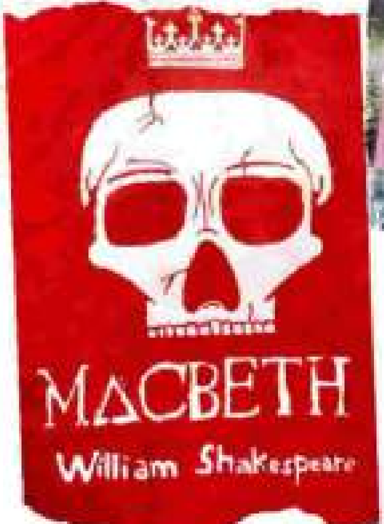

English Section

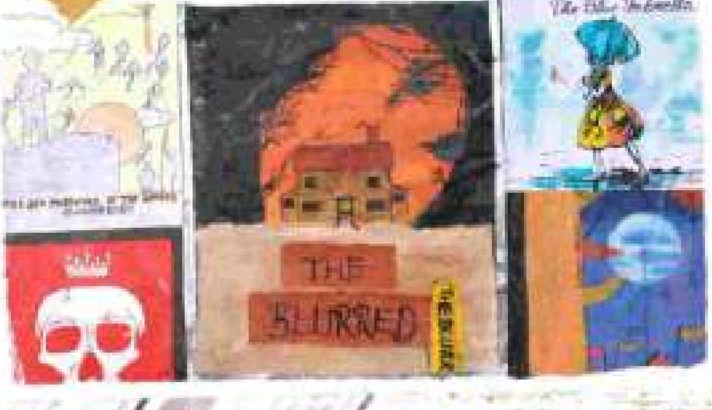

Department Journey

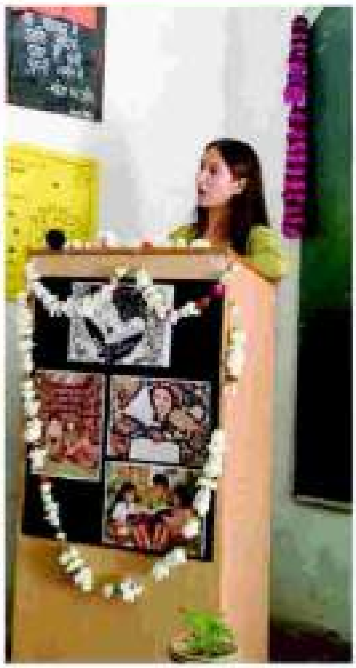

Editorial

Writing is more than expression—it is a way to reflect, question, and connect. The English section of this year's magazine offers students a platform to explore ideas with honesty and creativity.Our theme, "War," is both timely and thought-provoking. It goes beyond armed conflict to include inner battles, ideological clashes, and the struggles faced in daily life. In a world marked by division and unrest, writing about war helps us understand its impact and reimagine peace.This section features articles, stories, and reviews that portray the many faces of war—its tragedies, its survivors, and its silent scars. Through these voices, we witness the power of literature to evoke empathy and awareness.

We thank our contributors for their heartfelt work and invite readers to engage deeply with each piece. May these words remind us that even in war, the human spirit endures.

Dr. Charu Ahluwalia

Dear readers,

With enjoyment and pleasure, we put forward the next dynamic piece of creativity, freedom, self-expression, and enthusiasm of our year's work in our Annual Magazine 'Arjikiya', which is an amalgamation of the year long work of talented souls along with the blend of unique taste from each one who have contributed for this magazine.

Arjikiya is more than just a magazine where the potentials, talents, achievements and vision of our college get reflected. This year's college magazine throws light on best aspect that is 'War'.

War in its many forms, has shaped the history of humanity, leaving behind stories of courage, resilience and tragedy. It is a theme that forces us to confront the depth of human conflict, the fragility of peace and the enduring hope for a better tomorrow.

Through poetry, prose and insightful articles, our contributors have explored the impact of war - not only on nations and armies but on individuals, families and communities. Sincere efforts have been made into bringing out the English Section. I feel immense gratitude to our worthy Principal Dr. Ursem Lata for best guidance and support. I am thankful to Dr. Charu Ahluwalia, Dept. of English, for showing her faith in me and giving me the responsibility to carry out the task of student editor. Immense gratefulness is shown to all the staff members for their encouragement and cooperation for the successful completion of this annual book.

Happy Reading.

Monika Thakur
Student Editor(BA III Year)

WHAT THE PICTURE SAYS

1. As there is a great saying by Rabari E. Lee that "It is will that was is so terrible otherwise we should grow too fond of it". Here in the picture a terrible state of war has been displayed. Sometimes people who fought in wars and lay down their lives and leave behind their families and loved ones just to become our hero. War has two sides. On one side are people who win and celebrate it and on the other side people die. In the image we see how soldiers are helping each other carrying their fellows who are injured and they are in pain. It reminds us how many soldiers are there lying on death bed just to protect us and give us a soft and happy life. The effects of a war on soldiers and their lives is tremendous. We get to hear stories of our brave saldiers who fought in the Kargil war. The life of a soldier is an excellent source of inspiration for our youth for example Netaji Subash Chandra Bose is still remembered for his brave deeds, who gave his life for the country's independence.

Geetanjali
BA 1st yr (2414014)

2. In the above picture, the photographer wants to show how war destroys everything. History tells us that war has not benefitted anyone. War gives only unrest and wounds. When soldiers of two countries fight, it is only because of the enmity between their countries. There is no enmity between them, but still they fight for the country by becoming enemies of each other. They are hell-bent on killing each other. In this war without enmity, e.g. either someone bids goodbye to the world forever, or remains a burden on his family for life. Patriotism does not mean that we take the life of someone who is innocent. During the war, all soldiers are busy killing the enemy soldiers, but when the war ends, they find that some of their fellow soldiers are badly injured and some have left them forever. It is possible that soldiers do not want to fight among themselves, but they still have to fight. They may not want to kill anyone, but they still have to kill someone for their country. Their conscience will always condemn them for this act.

Lalita Thakur
B.A. 2nd year

The image depicts a makeshift shelter where children are seated. The structure appears to be constructed from materials that are not typically associated with standard housing, indicating a potentially challenging living situation. Surrounding that shelter there are various discarded items, which might suggest a lack of resources or support in the environment. The scene evokes themes of resilience and adaptation in the face of adversity, highlighting the circumstances that some individuals may encounter due to war and destruction in their country.

Gungun, BA 1st year.

2. The image shows two children playing, their laughter oblivious to the poverty and chaos around them. They are contained in a make shift box, and their joy is expressed through profound facts of resistance. For them, the world may collapse, but imagination remains an unshakable refuge.These children are emblematic of the human spirit. Fragile , yet indomitable in their laughter , there is hope that refuses to be extinguished , a poignant reminder that even amidst rubble, life finds a way to persist and bloom.

Vipin, BA 2nd yr

1.The image appears to depict a young girl standing amidst the rubble and destruction of what seems to be a war-torn building. The surrounding environment is heavily damaged with debris scattered across the floor and walls showing signs of shelling or bombing. The girl is dressed in dark clothing and light colored tights, and she is looking directly at the camera with a somber expression. In front of her, there is a pile of toys mixed with the rubble, suggesting the loss of innocence in times of war.

Aarti

2. The poignant photograph speaks volumes in its silence, encapsulating the devastating impact of war on Children. A young girl stands amidst the rubble of what was once a vibrant Classroom. The walls, pockmarked with bullet holes, bear witness to the violence that has shattered this space of learning and growth. Toys and books, once cherished companions, now lay scattered and broken, mirroring the shattered lives of those affected by the conflict.

The girl's solemn expression reflects a maturity beyond her years, a burden of trauma that no child should bear. Her eyes, though staring directly at the camera, seem to be looking beyond, perhaps haunted by the memories of the horrors she has witnessed. Her clothing, while neat, carries the dust and grime of displacement, a testament to the upheaval she has endured.

This image represents the plight of countless children caught in the crossfire of war. Their education disrupted, their homes destroyed, and their futures uncertain, they are a lost generation robbed of their childhood.

This photograph is a powerful indictment of the human cost of war. It calls on us to reflect on the devastating consequences of conflict, especially for the most vulnerable members of society. It demands accountability from those

who perpetrate such violence and urges us to work towards a world where children can grow up in peace and Security.

Despite the devastation surrounding her the girls unwavering gaze hints at a glimer of hope, a testament to the resilience of the human spirit. Even in the darkest of times, children find ways to survive to dream, and to hold on the belief in a better future.

Mamta, 2nd Year (B.A)

WAR AND DESTRUCTION

The greatest destroyer of people in modern times is war. Yet wars happen from time to time. No matter who wins a war, mankind is at loss in every case. Millions of people have died in battles during the past century with World War I and II bring worst. War is the enemy of all humanity and human civilisation. Nothing positive can come of it. Consequently, it should never be celebrated in any way. War is harmful not just to the civilians but to the soldiers as well. It harms people's morale as well as their sensitivity to moral issues. Wars are not the answer to the world's issues. Instead, they cause tension and generate hatred among nations. War, can settle one issue but it can create far too many others ones. The two most horrific examples of the war's after effects are Hiroshima and Nagasaki. People are still enduring the effects of war 77 years later. Whatever the reason for war, it always ends in the widespread loss of human life and property. War is a phenomenon that is common today and was in the past. The effects of war can be very devastating in any given nation. The devastating effects of war may include of economic activities and emotional trauma among others. Children can be more affected by occurrences of war than any other group of people. Some children may also learn negatively from war events. They end up learning and looking at violence as a way of solving issues and conflicts. The worst thing is that innocent children may become victims of war.

In conclusion, war represents one of the gravest challenges faced by humanity. Its disadvantages are profound and enduring, leaving a trail of destruction, suffering and despair in its wake. As we move forward, it is essential to prioritize peaceful dialogue, cooperation and diplomacy to prevent future conflicts and address existing ones. Only through collective efforts can we hope to create a more peaceful world for generations to come.

Lalita Thakur
B.A. 2nd year

ROLE OF WOMEN IN WAR

Women have played a variety of roles during the war, including factory work, military service, nursing, Red Cross work, and peacekeeping missions.

During World War-I

Women worked in factories and shipyards. They Manufactured ammunition and other supplies.In addition, they worked as a truck drivers, radio operators, stenographers, farmers and messengers.

During World war-II

Women served in the Army Nurse Corps. They served near the front lines.

In Indian Armed forces

Women serve in combat roles and supervisory roles as well as Peacekeeping operations.

Priya Thakur
B.A 1st year

SITA: "THE SCAPEGOT OF LANKA WAR"

In ancient India, woman's identity was deeply rooted in her relationships with her husband and family. Sita, as the wife of Lord Rama, was expected to embody the virtues of dutiful wife, including loyalty, obedience and devotion. Her identity was inextricably linkedto her husband's, and her actions were often seen as a reflection of his honor and reputation.

The Abduction by Ravana : When Ravana, the king of Lanka, abducted Sita, it was not just a personal attack on her, but also an affront to Rama's honor and authority. Ravana's actions were motivated by his desire to assert his power and dominance over Rama and the kingdom of Ayodhya. By abducting Sita, Ravana was attempting to humiliate Rama and undermine his authority. The abduction of Sita also had significant implications for her own identity and agency. As a women, she was expected to be and obedient. Her experiences in Lanka also highlighted the societal norms that governed women's lives, including her expectation of chastity and purity.

Victim : Sita is often blamed for the war, but she was actually a pawn in the conflict between Rama and Ravana. She had no agency or control over the events that unfolded. The narrative perpetuates the nation that women are responsible for the nation that women are responsible for the actions of men, and that they should be held accountable for the consequences of those actions. This a deeply problematic and patriarchal mindset that reinforces the oppression of women.

Sita's story is a powerful reminder of the societal blame placed on women. Despite being the victim of circumstance, Sita was forced to bear the burden of societal blame. Her story reflects the deep-seated societal tendency of blaming women for the actions of men.

As we reflect on Sita's story, it is essential to recognize the societal norms that perpetuate the blame game. By acknowledging these norms we can work towards creating a more equitable society, where women are not blamed for the actions of men.

PLIGHT OF WOMEN IN WAR

When a fight or war ends, women often face many problems. They have to deal with the aftermath of the fighting, which can be very difficult.

Displacement and Refugee Crisis: Many women have to leave their homes and move to other places. They have to take care of their families, but they don't have enough food, water or shelter. Women and children are often the ones who suffer the most.

Violence and Abuse : Women are often victims of violence and abuse during and after a fight. They may be :

- Raped or forced into marriage.
- Beaten or hurt by their families or strangers
- Forced into slavery or human trafficking

Health Problems : Women's health is often affected by fight. They may :

- Have problems during pregnancy or childbirth
- Get sick from dirty water or poor sanitation or pollution, including oil spills, chemicals contamination, and toxic waste. The use
- Feel sad, anxious or depressed.

Economic Problems:

Women often struggle to make a living after a fight. They may :

- Not have enough money to feed their families.
- Not have access to education or job training.
- Be treated unfairly or discriminated against.

What Can We Do?

We need to help women who have been affected by fight. We need to:

- Provide them with food, shelter, healthcare and education.
- Help them rebuild their lives and communities.
- Protect them from violence and abuse.

We can make a difference by supporting organizations that help women in these situations. We can also raise awareness about the issues that women face after a fight.

Manisha, 1st year.

THE DEVASTATING IMPACT OF WAR ON ECOLOGY

War has long been a scourge on humanity, causing irreparable harm to individuals, communities, and nations. However, the effects and of war extend far beyond the human realm, causing significant and lasting damage to the environment. The ecological impact of war is a pressing concern that demands attention and action.

Environmental Consequences of war War disrupts the natural balance, leading to widespread environmental degradation. Some of the most significant ecological impacts of war include :

1. Habitat Destruction : Military operations often result in the destruction of habitats, leading to the loss of biodiversity and extinction of species. The use of explosives, artillery, and other heavy machinery destroys vegetation, soil, and water sources.

2. Pollution : War generates massive amounts of pollution, including oil spills, chemicals contamination, and toxic waste. The use of depleted uranium ammunition, for example, has been linked to long-term health effects and environmental damage.

3. Climate Change : War contributes to climate change by releasing greenhouse gases, such as carbon dioxide and methane, into the atmosphere. The production and transportation of military equipment, as well as the destruction of infrastructure, all contribute to increased emissions.

4. Water Scarcity : War often disrupts water sources, leading to scarcity and contamination. The destruction of water treatment facilities, dams, and irrigation systems can have devastating effects on local ecosystems and human populations.

Mitigating the Ecological Impact of war

To minimize the ecological impact of war, it is essential to adopt sustainable and environmentally conscious military practices. Some strategies include:

1. Environmental Impact Assessments : Conducting thorough environmental impact assessments before and during military operations can help identify potential risks and mitigate damage.

2. Sustainable Military Practices : Adopting sustainable military practices, such as using renewable energy sources, reducing waste, and minimizing the use of hazardous materials, can reduce the ecological footprint of military operations.

3. Post-conflict Environmental Remediation : Investing in post-conflict environmental remediation efforts can help restore damaged ecosystems, promote biodiversity, and support local communities.

In conclusion, the ecological impact of war is a pressing concern that demands attention and action. By adopting sustainable military practices, conducting environmental impact assessments, and investing in post-conflict environmental remediation, we can reduce the devastating effects of war on the environment and promote a more peaceful and sustainable future.

Tilak Raj, Ba 1st yr

WARS IN FUTURE

Future wars could be shaped by new technologies, such as drones, robots, cyberwar, and artificial info- ligence (AI). They could also be influenced by climate change, digital technologies, and the global economy.

Future war technologies :

- Drones and robots : Smaller drones and robots could be used on the battlefield.
- Cyberware: Offensive cyberwar capabilities could be used to distract the enemy's worldwide.
- Surveillance: Surveillance capabilities could be used on the battlefield and on individuals.
- Virtual and augmented reality: Virtual and augmented reality (VR/AR) could be used to control the enemy's population.
- 3D printing: 3D printing could be used to create new weapons and equipment.

Ritika Thakur

THE FIRST WORLD WAR

The First World War, Often referred to "The Great War," was a devastating global Conflict that erupted in 1914 and lasted until 1918, Significantly altering the political landscape of Europe and the world; marked by unprecedented levels of carnage and destruction, Primarily due to the Complex web of alliances, burgeoning nationalism, and intense militarism prevalent in the era.

Causes of the War :-

- The spark - Assassination of Archduke Franz Ferdinand

The immediate trigger for the war was the assassination of Archduke Franz Ferdinand of Austria by a Serbian nationalist, Gavrillo Princip, which led to Austria-Hungary declaring war on Serbia, subsequently drawing in their respective alliance.

- Militarism

A rapid arms race across Europe, particularly in Germany, fueled anxieties and created a climate of aggression, with national building large and powerful militaries.

- Imperialism

Competition between European powers for colonies in Africa further intensified tension and fueled rivalries Nationalism Strong nationalist sentiments, especially in the Balkans, led to ethnic tensions and demands for self-determination, contributing to instability.

- Alliance System

A complex network of alliances between European nations, where a conflict between two countries could quickly escalated into a wider war due to their treaty obligations.

- Impact of War

The war resulted in over a million military deaths and over 7 million civilian casualties, Significantly impacting European demographics.

- Poltical Realignment

The war lead to the collapse by major empires like the Austro-Hungarian and Ottoman empires, creating new nation-states in Europe.

- Economic Disruption

The war Caused immense economic damage across Europe, leading to post-war economic instability.

- The Treaty of Versailles

The peace treaty that ended the war, which imposed harsed reparations on Germany, sowing seeds of resentment that contributed to future conflicts like World War-II.

In conclusion, the First World War was a pivotal event in modern history, marked by devastating casualties, technological advancements, and profound political shifts, leaving a lasting legacy on the global stage.

Rakhi
BA1st year

KARGIL WAR

The Kargil War was a pivotal conflict fought between India and Pakistan in 1999, in the Kargil district of Jammu and Kashmir. The war was a significant turning point in the history of both nations and had far-reaching consequences. In May 1999, Pakistani troops, disguised as militants, infiltrated the Indian side of the Line of Control (LOC) and occupied strategic positions in the Kargil district. The Indian Army caught off guard, responded swiftly and launched a counter-attack to reclaim the occupied territories. The war was fought at high altitudes, with troops on both sides facing treacherous terrain and extreme weather conditions. The Indian Army, supported by the Indian Air force, launched a series of attacks. The conflict saw intense fighting with both sides suffering significant casualties.

The Kargil War was marked by several key battles, including the Battle of Tololing, the Indian Battle of Tiger Hill, and the Battle of Batalik. The Indian Army's determination and bravery ultimately led to the recapture of the occupied territories, and the war ended with the Indian Army emerging victorious. The Kargil war had significant geopolitical implications. It exposed the fragility of the line of control and highlighted the need for a lasting solution to the Kashmir dispute. The war led to significant increase in military spending and modernization of India army

In conclusion, the Kargil War was a defining moment in the history of India and Pakistan. It showcased the bravery of Indian soldiers. The sacrifice of the Indian Army led to a renewed focus on national security and defense modernization in India. The war also underscored the need for a peaceful resolution the need for a to the Kashmir dispute and highlighted the importance of diplomacy in resolving conflicts.

LAXMI
B-A Ist year

SUICIDE

Suicide rates among active duty soldiers and veterans have risen in recent year. The US department of defense reported that the suicide rate among active duty troops reached 29.7 per 1,00,000 in 2020.

Inside the mind of a soldier, the battle is not always on the front lines. The mental health challenges they face both during and after their services are profound and for reaching. From the trauma of combat to the difficulties of reintegration, soldiers carry the weight of their experience long after their missions are over. Addressing mental health in the armed forces requires a comprehensive approach that includes early intervention support systems and a cultural shift towards mental well being of soldiers, prioritizing the mental well being of soldiers, not only honor their service but also insure they have the tools and support to thrive both in uniform and in civilian life.

Priyanka
B.Com 2nd year

THE MIND OF A SOLDIER

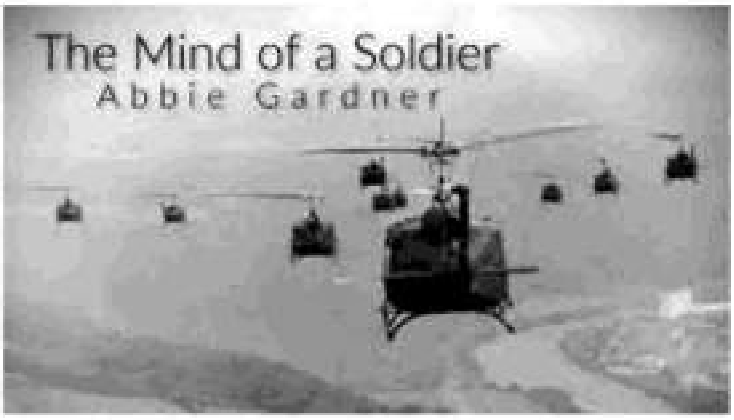

Understanding the Psychological Effects of War :

Soldiers are often revered for their bravery and selflessness, but the psychological toll of war on these individuals is often overlooked. The mind of a soldier is a complex and fragile entity, shaped by the traumatic experiences of combat. In this article, we will delve into the psychological effects of war on soldiers and explore the ways in which we can support these individuals.

The Psychological Effects of War :

War has a profound impact on the human psyche. Soldiers are exposed to traumatic events, including the loss of comrades and the constant threat of danger. These experiences can lead to a range of psychological problems, including :

- Post-Traumatic Stress Disorder (PTSD) : A condition characterized by flashbacks, nightmares, and avoidance of triggers that remind the individual of the traumatic event.

- Depression : A mood disorder that can manifest as feelings of sadness, hopelessness, and loss of interest in activities.

- Anxiety : A condition characterized by feelings of fear, worry and apprehension.

- Substance Abuse : Soldiers may turn to substance abuse as a way to cope with the stress and trauma of war

- The impact of war on the brain :

Research has shown that war can actually change the structure and function of the brain. The constant threat of danger can lead to an overactive amygdala, the part of the brain responsible for processing emotions. This can result in an exaggerated startle response, making it difficult for soldiers to adjust to civilian life.

- Supporting Soldiers : So, how can we support soldiers and help them to cope with the psychological effects of war? Here are a few strategies.

- Mental Health Services : Providing access to mental health services including counseling and therapy can help soldiers to process their experiences and manage their symptoms.

Peer Support: Connecting soldiers with peers who have experienced similar traumatic events can provide a sense of community and support.

- Family Support : Supporting the families of soldiers can also play an important role in helping soldiers to adjust to civilian life.

- Mindfulness and Relaxation Techniques : Teaching soldiers mind-fulness and relaxation techniques, such as meditation and deep breathing, can help to reduce stress and anxiety.

- Conclusion : The mind of soldiers is a complex and fragile entity, shaped by the traumatic experiences of combat. It is essential that we provide support and resources to help soldiers to cope with the psychological effect of war. By doing so, we can help to reduce the risk of mental health problems, support soldiers in their transition to civilian life, and honor their services and sacrifice.

Anurag
B.A 1st Year.

STORY REVIEW

1. Fouji Ladkiyaan by Chinua Achebe

Fouji Ladkiyan is a hindi translation of a short story by Chinua Achebe. The story is set during a time of national conflict with various peoples' lives in ways. It narrates an encounter between Reginald Nwanko, a man in the Ministry of Justice and a female checkpoint officer. Despite his authority and usual ability to bypass roadblocks using his position, he faces resistance from the officer, leading to a moment of humility and compliance.

Themes :

(1) War and its Effects : The setting during war time emphasizes how conflict disrupts normal life. Recruitment struggles, checkpoints, and heightened security reflect the social tension and the chaos of war. The Protagonist support the cause intellectually but is reluctant to experience its inconveniences personally, showcasing the divide between ideology and reality.

(2) Gender Dynamics :

The presence of a female checkpoint officer in a Warzone is significant, challenging traditional gender role. Her composure and professionalism in the face of an authoritative man reflect empowerment and competence.

Symbolism:

1) Female officer represents a new wave of gender empowerment, showing that women can perform roles traditionally reserved for men, even in militarized settings. Her insistence on conducting the car search, despite the protagonist's status, highlights her unwavering commitment to duty and justice.

2) The Checkpoint :

Symbolizes a point of confrontation between authority and equality. It is here that power dynamics shift, and the protagonist is reminded that rules apply to everyone.

3) The Boot of the Car:

Represents the unknown and the symbolic scrutinizing of one's character. For Reginald, opening the boot signifies a moment of vulnerability where he must yield to rules and accept accountability.

Critical Evaluation :

1) Exploration of Power Dynamics

The story adeptly explores how societal hierarchies are tested during war time. Reginald's reliance on his position to avoid scrutiny is a critique of the abuse of power. The officer's resistance symbolizes the integrity of those committed to their roles, even when challenged by privilege.

2) Gender roles and stereotypes by placing a female officer at the centre of the conflict, the story challenges stereotypes about women's roles in society. The officer's assertiveness and competence emphasize that gender does not limit one's ability to perform under pressure.

Strengths Relatable Setting : The wartime backdrop provides a realistic context for exploring human behaviour and societal values.

Empowered Female Character : The female officer's role is a progressive element, breaking gender norms and showcasing women's capabilities.

Balanced Narration : The story avoids taking sides, portraying both characters as flawed yet relatable.

Weakness : Limited Depth of female Officer: While the officer symbolizes empowerment, her character could have been further developed to provide more insight into her motivations and background.

Predictability : The resolution, where the protagonist complies with the rules, is somewhat predictable and could have included a more nuanced or surprising ending.

Conclusion : "Fouji Ladkiyan" is a compelling story that explores the intersection of gender, power, and accountability against a war time backdrop. It critiques societal hierarchies and emphasizes the importance of integrity and humility. While it succeeds in highlighting gender empowerment and challenging authority, the story could delve deeper into the complexities of its characters. Overall, it is a thought-provoking narrative that balances realism with moral undertones.

Monika Thakur, BA III year

2. "Hiroshima Sky" by Sumiko Nakahara.

Sumiko Nakahara's personal account of the atomic bombing of Hiroshima is a powerful reminder of the

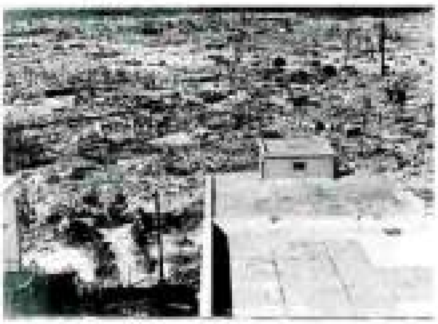

devastating effects of war. Her story, told in her memoir, is a heart-wrenching reminder of the human cost of the bombing.

On August 6, 1945, Sumiko slept outside unaware of the tragedy that would unfold the next morning. When she reached the shelter, she found that her mother and brother, Yu-cham, have perished in the tragedy. The scorching August sun beats down on the Yahata River, which flows calmly, oblivious to the cries of the survivors.

Sumiko and her father walked through the devastated city, carrying an empty box of sweets and a spade. The smell of burning flesh filled the air, like the entire city was being cremated. The smell was similar to that of cheap fish being cooked.

Sumiko's story shows the strength of the human spirit in the face of tragedy. Her account is a powerful criticism of the atomic bombing of Hiroshima, highlighting the devastating effects of war on civilians. As we reflect on the events of August 6, 1945, Nakahara's memoir serves as a poignant reminder of the importance of promoting peace and nuclear disarmament. Her story is a testament to the human cost of war and the need for us to work towards a more peaceful and harmonious world.

Ashutosh, BA-II Year

POEM REVIEW

" A Birthday" By Taki Kajiko

Taki Kajiko's poem "A Birthday" poignantly explores the intersection of personal celebration and the heavy weight of historical trauma, specifcally the Heroshima. The poem begins with a simple yet profound question from a child "Was the atomic bomb dropped on my birthday?" This question immediately links the child's personal joy to one of the most tragic events in history, illustrating how the past lingers in the present, even in the most intimate movements.

The boy's response - refusing roses or cakes for his birthday - reflects his internalization of the tragedy associated with his birthdate. His refusal is not just a childish whim, but a deep emotional response to the realization that his birthday is forever connected to the pain and devastation of Hiroshima. The child's awareness is an example of how historical trauma is passed down, influencing even those who did not directly experience the event. In response to the child's discomfort, the family made the decision to shift the birthday celebration to August 20, the birthday of the older brother. This thoughtful change in tradition represents an effort to reconcile the joy of personal milestones with the solemn memory of Hiroshima bombing. By sharing one cake between brothers, the family symbolically unites their personal histories with the broader human experience of loss, survival, and remembrance.

The poem closes with a chilling repetition of "Little Boy", the code name of the atomic bomb dropped on Hiroshima. This phrase, once symbolizing innocence, is now irrevocably linked to destruction and death. The closing reference to Hiroshima's sky serves as a haunting reminder of the lasting scars left by the bombing, both on the environment and on the hearts of those who lived through it.

Kajiko's "A Birthday" is more than just a poem about a birthday; it is a meditation on the ongoing impact of historical events on personal lives. The poem challenges the reader to reflect on how we carry the weight of the past, urging empathy and understanding in a world still grappling with the consequences of war. It emphasizes the delicate balance between remembering history and celebrating the present, urging us to find ways to preserve humanity even in the face of deep tragedy.

Aryavrat
BA 2nd year

FILM REVIEW

1. Pyaasa

Director : Guru Dutt **Year :** 1957
Cast : Guru Dutt, Waheeda Rehman, Mala Sinha, Johnny Walker, Rehman.

Introduction : Pyaasa (1957) is one of the greatest films in Indian cinema, directed by and starring Guru Dutt. It is a poignant exploration of artistic struggle, unfulfilled love, and society's indifference to true talent. The film's poetic storytelling, haunting music, and deeply emotional performances make it an unforgettable classic.

Plot Summary : The story revolves around Vijay (Guru Dutt), an idealistic and struggling poet who is unrecognized by society. His family disowns him, publishers reject him, and his love interest, Meena (Mala Sinha), chooses to marry a wealthy publisher for security. In contrast, Gulabo (Waheeda Rehman), a kind-hearted prostitute, appreciates his poetry and believes in his talent. Through a twist of fate, Vijay is presumed dead, and his poems, published posthumously, become a sensation. However, when he returns to reclaim his identity, he is met with rejection and disbelief. The film's climax is a powerful statement on materialism and the hypocrisy of society, as Vijay ultimately chooses to walk away from the world that never valued him.

Themes & Impact : Society's Hypocrisy : The film critiques how society values art only when the artist is no longer alive.

Capitalism vs Art : It highlights the struggle between material success and artistic integrity.

Women in Society : Through Meena and Gulabo, Para explores how women are often forced to make painful choices in a patriarchal world.

The social message of Pyaasa revolves around the theme of disillusionment with materialism and the artist in a society that values wealth and status over talent and integrity. The film critiques the societal obsession with superficial success, highlighting how genuine artistry, love, and emotional connection are often overlooked in favor of wealth, power, and social status. Overall, the film sends a powerful message about the inherent flaws in a materialistic society, calling for a recognition of deeper values like love, art, and human connection. It urges viewers to reconsider what truly holds value in life.

Akhilesh Paul, BA 2nd year.

2. Film Title : 12th Fail

Director : Vidhu Vinod Chopra
Cast : Vikrant Massy, Medha Shanker, Anant V Joshi, Anshuman Pushkar and others
Genre Genre : Biography, Drama
Writer : Vidhu Vinod Chopra
Duration : 2 hours 27 minutes
Original language : Hindi
Release date : 27 October 2022

12th Fail, based on the true story of Manoj Kumar Sharma, a young man who failed his 12th grade exams but went on to become an IPS officer despite societal pressure and limitations. The montage showcasing Manoj's relentless study routines, interspersed with moments of his family's unwavering support, captures the emotional core of the film. The scene where Manoj's family finally receive his IPS confirmation letter, the culmination his years of toil, is emotionally powerful and catharic.

The film inspirational narrative, Vikrant Massey's nuanced performance and the realistic portrayal of rural India resonates with audiences. It offers a hopeful message about overcoming adversity and achieving dreams so I like movies very much.

This movie is a big inspiration for students and future generation. It teaches them and us that life can be restarted multiple times and can bounce back stronger.

Jahid Akhter
BA II year

BOOK REVIEW

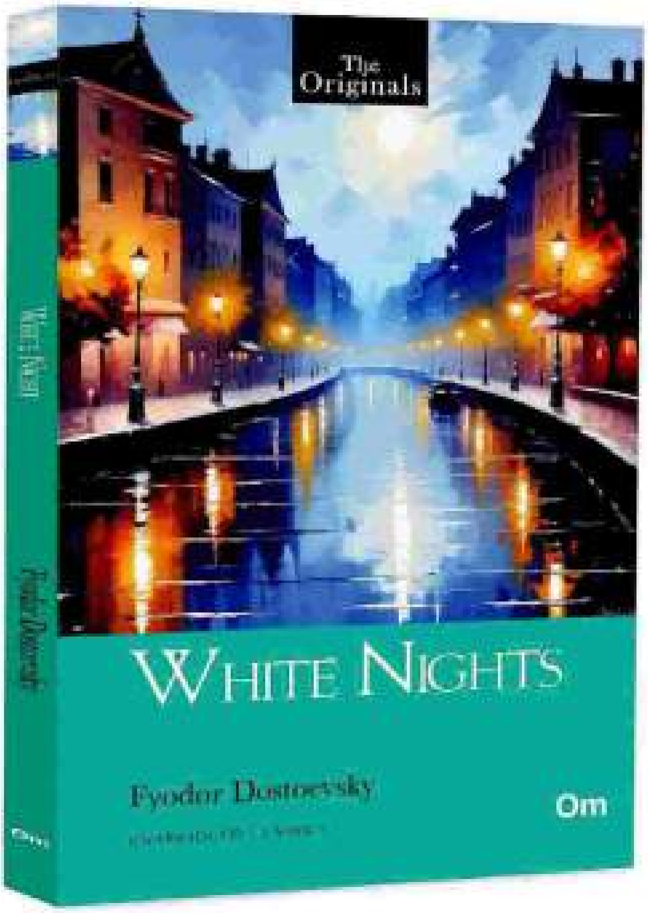

Name - White Nights
Author - Fyodor Dostoevsky
Publisher - Penguin Classic
Pages - 96
Price - Rs. 144

Overview :

The story begins with an unnamed narrator, a solitary and introverted man, wandering the streets of St. Petersburg during the enchanting "White Nights" of summer, when the city is bathed in twilight. Living in isolation, he has no close relationship and finds solace in his imagination and daydreams. He personifies the buildings and streets around him, treating them as friends, but he never interacts with real people.

One evening, during his habitual walk, he sees a young woman crying by a canal. Compelled by her vulnerability, he approaches her and asks if she needs help. Though initially wary of him, she accepts his kindness and allows him to walk her home. She introduces herself as Natasha, a spirited and open-hearted young woman.

The two strike up a connection, and Nastenka reveals the source of her distress: she is in love with a man who had promised to marry her but has not returned after a year. Her life has been one of restrictions under the watchful eye of her controlling, blind grandmother, who ties her dress to her chair to keep her from wandering.

The starry ends with the narrator reflecting on the fleeting joy he experienced during those four nights. Though he is left alone once more, he cherishes the memory of Nastenka and the emotional connection they shared however brief, as a moment of lights in his otherwise lonely existence.

Conclusion :

White Nights is an exquisite tale that masterfully captures the fragility of human emotions and the fleeting nature of meaningful connections. Dostoevsky's ability to articulate the narrator's intense loneliness and unfulfilled yearning struck a chord with me. The novella is a testament to the profound impact even momentary relationships can have on one's life.For me, it serves as a reminder of how fleeting joy and heartbreak are often intertwined, shaping us in ways we cannot anticipate. The story, with its blend of hope and sadness, left me reflecting on the fleeting nature of life's most beautiful moments. Even though the story is short, it stays with you, a bittersweet memory that lingers long after reading.

Aryavart
BA II yr

Visit of Cluster Committee

Awareness Regarding Scholarship

Green Campus

Bio Diversity Club

Community Development and Engagement Cell

Department Of History

World Book Fair

Exhibition on Partition of India

Tankri Workshop

Gandhi Jyanti

Commerce Section

Editorial

It is indeed a great pleasure for me to present the reflection of students' creativity in the college magazine through the Commerce section. As we navigate an increasingly interconnected and dynamic world the role of commerce education becomes more significant than ever. Commerce stream is no longer confined to textbooks or balance sheets- it is a gateway to understanding the forces that shape our market, industries and society at large. As a teacher I witness firsthand the transformation of students as they grasp the foundations of accounting, business statistics and economics. These are not just subjects- they are lenses through which young minds begin to interpret real world challenges and opportunities. When a student understands how a market operates or how ethical decisions impact a business, they are not merely gaining knowledge; they are developing the tools to become responsible leaders and entrepreneurs. To all commerce students: take pride in your stream. You are not just studying business - you are learning how the world works and how you can make it better. Embrace every concept with an open mind and entrepreneurial spirit. Your ideas today can be the solution of tomorrow.This session's magazine is dedicated to war and we have tried to portray the commercial impact of war on our lives.

Let us continue to learn, lead and inspire- together.

I do honestly acknowledge the support of the Principal Dr. Ursem Lata and Editor -in -Chief Dr. Charu Ahluwalia who have been the guiding spirit behind this noble mission.

With best wishes to readers!

Dr. Dimple Jamta

Assistant Professor, Department of Commerce

Dear Readers,

As we welcome the new academic year it is my pleasure to introduce the latest addition of our college magazine. This magazine is a culmination of the hard work and creativity of our talented students, faculty and staff.

One of the key features of this magazine is the inclusion of students' voices. We believe that the best way to understand diversity is to hear directly from those who have experienced it. We hope that this magazine will encourage all members of our community to engage in meaningful conversation about diversity and inclusion. By embracing differences and learning from each other we can create a gracious and equitable campus.

I want to extend my gratitude to everyone who has contributed to this magazine including the writers, artiists and editors.

Thank you for reading and I hope that you all enjoy reading it.

Laxmi, B.Com. 3rd Year

Student Editor

Impact of War on Indian Economy

War can have a profound impact on the Indian economy affecting various sectors and overall growth. One of the immediate effects is inflation and price instability as wars disrupt global supply chains, raising the prices of essential commodities like crude oil, of which India heavily relies on. This fuels inflation, reduces consumer spending and slows economic activity. Additionally, war can hamper international trade, especially if key trading partners are involved and major trade routes are blocked. The disruption of exports in sectors like pharmaceutical goods, textiles, processed military spending during war can put a strain on public finances by diverting funds from development projects and widening the fiscal deficit. Geo-political instability also deters foreign direct investment and causes stock market volatility, affecting investor confidence. Issues arising such as displacement and loss of skilled workers reduce productivity and place pressure on public infrastructure. Key sectors like agriculture, energy and manufacturing can face severe disruptions & either enough rising global prices are broken supply chains, further intensifying economic challenges.

Sonal, B.Com 1st year.

Impact of Russia-Ukraine Conflict on the Indian Economy

Russia - Ukraine conflict and the set of punitive sanctions imposed on Russia by the US and its allies, especially European Union countries, have the potential to impact India through multiple channels. Surge in input costs and impact on macroeconomics variables is expected. An expected resultant commodity price surge could lead to a severe increase in input costs, leading to increase in the product prices for exports and goods for domestic consumptions The impact of higher crude oil prices for a prolonged period on Indian macroeconomic fundamentals as GDP could be severe, affecting through various channels such as GDP growth inflation, savings, exchange rate of rupee, interest rates, trade current account and finally on India's fiscal deficit.

Exchange Rate :- High oil prices and volatility prevailing in global markets have resulted in rupee coming under significant pressures. Higher oil prices would result in higher trade deficit and leading to sharp rupee depreciation.

Inflation : A rise in global crude prices and heightened uncertainties would increase the domestic price of crude products and increase domestic inflation. The continuous hardening in crude oil prices exacerbated by the Russia - Ukraine conflict, other geo political concerns, and its impact on the Indian rupee pose the biggest risk to the WPI as well as the CPI inflation. The impact of rising crude oil prices on WPI and CPI inflation would be influenced by the extent of pass through to domestic retail prices of fuels.

Financial services : - Flights to safety has resulted in capital outflows from emerging economies, including India. Foreign portfolio investment flows are expected to remain volatile in the coming months due to Russia - Ukraine conflicts and its fallout in the form of sanctions, high inflation and expected increase rate by the Federal Reserve.

Public Services :- The impact of higher oil prices could affect India's expenditure budget, leading to fiscal targets going away. Impact of high crude oil prices on government finances could lead to Government of India cutting back on capital outlays.

Exposure of Indian Banks in Russia :- Except for the Commercial Indo Bank LLC CJV of SBI and Canara Bank, Indian banks do not have any subsidiaries, branches or representative offices in Russia, and trade finance business for Indian banks are relatively less because of the limited trade size between India and Russia. State Bank of India, the largest Indian commercial bank's exposure in Russia is reported to be less than US$ 10 million. However, due to the worsening geopolitical situation, Indian banks have decided not to process any transactions involving Russian entities due to global sanctions. Indian banks are currently exploring ways to circumvent the sanctions placed on Russian trade. Thus, implications of the current conflict on Indian banks are expected to be limited.

Laxmi, B.com 3rd Year

Impact of War on the Indian Economy and Global Markets.

War has far-reaching economic consequences, affecting nations directly involved and those indirectly connected through trade, investments and global supply chains. India, as a rapidly growing economy with significant global trade ties, experiences both direct and indirect effects from wars, whether regional or global.

1. Direct Impact on India's Economy -

(i) Inflation and Rising Costs - Wars disrupt global supply chains, leading to increased prices of essential commodities like crude oil, food grains, and metals. India, being a major importer of crude oil, faces inflationary pressures whenever oil prices surge due to geopolitical conflicts. Higher fuel prices raise transportation and production costs, leading to increased prices for goods and services.

(ii) Stock Market Volatility - Indian stock markets react sharply to global uncertainties caused by wars. Investors pull out money from equities and shift to safer assets like gold or US treasury bonds, leading to market instability. For instance, the Russia - Ukraine war led to sharp declines in Indian stock indices due to fears of economic slowdown and high import costs. In times of war, global investors prefer stable economies and currencies, often leading to capital outflows from emerging markets like India. This weakens the Indian rupee against the US dollar, making imports more expensive and widening the trade deficit.

2. Indirect Impact on India's Trade and Industries.

A) Disruptions in Global Trade India's trade relations with warring nations and their allies get affected. For instance, wars involving major wheat and fertilizer-exporting nations impact India's agricultural sector, leading to higher food prices. Similarly, conflicts affecting semiconductor supply chains can slow down India's tech and automobile industries.

B) Defence Sector Growth - On the positive side, conflicts often lead to increased defence spending. India, one of the world's largest defence importers, has also been focusing on boosting domestic production under that 'Atmanirbhar Bharat' initiative. War situations can accelerate defence manufacturing, benefiting domestic industries. C)Impact on Foreign Investments - Unstable global conditions make foreign investors cautious. Foreign Direct Investment (FDI) in India may slow down due to risk aversion. However, India can also benefit as a stable alternative far global businesses looking to shift supply chains away from conflict zones.

3. Global Economic Impact of Wars.

A) Energy Crisis and Oil Prices - Major oil-producing nations often become involved in wars, affecting global oil supply and prices. For example, the Gulf Wars and Russia-Ukraine conflict led to oil price hikes, impacting economies worldwide. India, being a net importer of oil, suffers from higher import bills and fiscal deficits.

(B) Supply Chain Disruptions - Modern economies rely on interconnected supply chains. Conflicts disrupt shipping routes, raw material supplies and manufacturing hubs, leading to production slowdowns across various sectors. For instance, the Russia-Ukraine war affected global wheat and sunflower oil supplies, impacting Indian consumers.

Priyanka, B.Com. 2nd Year.

Indian Economy : An Overview of Growth, Challenges, and Future Prospects

The Indian economy is one of the fastest-growing economies in the world, characterized by a mix of agriculture, manufacturing and services. As the fifth-largest economy globally in terms of nominal GDP, India plays a crucial role in the global economic landscape.

The Indian economy is broadly divided into three sectors:

1. Agriculture Sector: Contributes around 18% to GDP and employs nearly 43% of the workers. Key products include rice, wheat, pulses, and dairy. The government has initiated various schemes like PM-KISAN and MSP to support farmers.
2. Industry Sector: Accounts for about 29% of GDP. It includes manufacturing, mining, and construction. The "Make in India" initiative aims to boost domestic production and attract foreign investments.
3. Service Sector: The largest contributor, making up around 53% of GDP. IT, banking, telecommunications, and tourism are key industries. India is a global hub for IT services and startups.

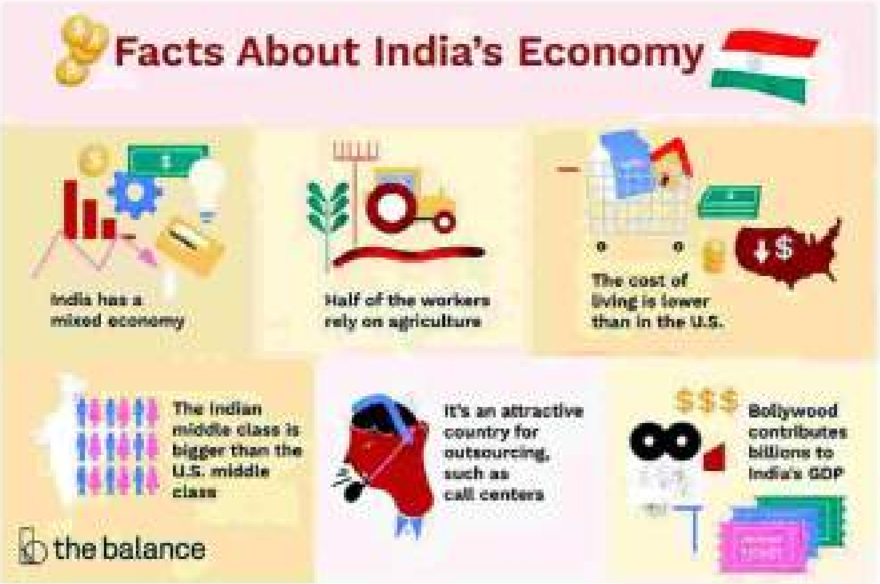

Economic Growth Trends

- India's GDP has grown at an average rate of 6-7% over the past two decades.
- Despite the COVID-19 slowdown in 2020, the economy rebounded strongly, with a projected growth rate of around 7% in 2024 Major drivers of growth include digital transformation, foreign direct investments, and government initiatives like Production - linked incentives (PLI).

Challenges facing the Indian Economy

1. Unemployment: While India has a large workforce, job creation remains a challenge, especially in the formal sector.
2. Inflation: Rising prices of essential goods impact household consumption and savings.
3. Income Inequality: The wealth gap between urban and rural populations is widening.
4. Infrastructure Deficit: Despite improvements, India still lags in transportation, electricity, and urban development.
5. Global Uncertainty: Geopolitical tensions, trade wars, and supply chain disruptions affect exports and economic stability.

Future Prospects and Government Initiatives

- Atmanirbhar Bharat (Self-Reliant India): Focuses on domestic manufacturing and reducing dependency on imports.
- Digital India: Promotes digital infrastructure, fintech, and e-governance.
- Green Economy: India is investing in renewable energy to reduce dependence on fossil fuels.
- Infrastructure Development: The Gati Shakti plan aims to modernize roads, railways, and ports.
- Startup Ecosystem: India is the third-largest startup hub globally, with growing investments in technology and m innovation.

Raman Thakur, B. Com 1st Year

The Impact of E - Commerce on Business

E - Commerce is a very popular mode of trade these days. E-commerce refers to the purchasing and selling of goods through the Internet. E- Commerce trade is accessible to anybody with an Internet connection. It has a significant influence on many aspects of business, not simply selling and marketing on business and society has risen to a global level. Every one now uses e-commerce frequently in daily life. Because of its increasing demand, it has on people's lives e-commerce is expanding rapidly.

The most fundamental economic transaction is the purchasing and selling of products; any changers to this have an impact on supply chain management. with most people using the internet, there is increasing trend of people making purchases online. No longer are the customers and sellers limited to a physical location. A list of hundreds of goods may be accessed with only a few clicks.

B 2 B e-commerce : Small retail stores or companies that are not engaged in e-commerce have decreased as a result of the consumer's reduced need to shop at various retail establishments. The bigger companies may compete in this market, such as bookstores, furniture stores, and car dealers. With a rise in internet users, B2B e-commerce has also developed in the online industry.

You should consider taking a look at these B2B e-commerce for better performance.

Logistics Industry : Since the e-commerce platform incorporates third-party logistics vendors, the increase in e-commerce sales has led to exponential growth in the logistics industry.

Demand Landscape : E-commerce regulates the demand landscape. E-commerce and technology are affecting how quickly sales transactions are completed. There is a global impact of e-commerce on business and the economy. E-commerce has a global impact on the economy. In the past, it took some time to influence the economies of the two dependent nations, but now that e-commerce has greatly altered sales patterns, this impact is nearly immediate.

Consumers : Today's consumers use Google to research the things they want to buy. Being a great search engine, Google displays hundreds of items that are suitable for customers' demands. Customers may compare the pricing of the goods they wish to buy on several websites before making a selection. Instead of visiting five different businesses to get the pricing, it is much simpler. It helps you save lots of time! Additionally, the e-store is accessible 24/7.

How E-Commerce Changed the Way to Do Business?

Elimination of Intermediaries : Companies may now sell to clients directly, cutting away any middlemen. Due to the elimination of intermediaries via e-commerce, expenses have decreased. As a result, company owners may make more money.

Marketing : Since e-commerce has altered how consumers shop, it stands to reason that e-commerce marketing strategies would also need to evolve. People look things up on Google first even if they intend to buy things in actual stores. Digital marketing has replaced traditional marketing strategies as a result of the growth of e-commerce. If you are into any e-commerce activity or specifically digital marketing, you should know the tools for digital marketing to help you grow.

Higher Profits : Traditional commerce sales have declined as a result of an increase in e-commerce sales. 24 * 7 availability and convenience have resulted in a huge amount of profits.

Global Marketplace : Now, it has become much simpler to compare the prices of the items. All of your consumers may access your items from the comfort of their own homes. It is because of the huge impact of e-commerce on business.

Conclusion : E-commerce has a significant influence on all business sectors and other fields. It has been a crucial component in the economic factors that have allowed India to dominate this industry. India is quickly overtaking other nations in terms of internet usage. As a result, e-commerce has had a significant influence on India. Therefore, e-commerce has sparked an economic revolution! If you are planning to start your business, it is recommended to get in touch with an expert digital marketing agency that not only specializes in e-Commerce management but has remarkable website design packages too.

Shreya, B.Com. 3rd Year.

Role of Commerce in the Indian Economy

Commerce plays an important role in the growth of the Indian economy. It helps in the buying and selling of goods and services, creating jobs, and increasing the country's income. Let's understand how commerce helps the economy in simple terms.

(1) Helps in Economic Growth: Commerce contributes a large part to India's income (GDP). Business markets, and online shopping platforms like Amazon and Flipkart help in increasing trade and economic activities.

(2) Creates Job Opportunities: Millions of people in India work in shops, banks, transport, and online business. Commerce provides jobs to people in different fields, making them financially stable.

(3) Encourages Trade with Other Countries: India sells many products to other countries, such as clothes, medicines, and IT services. Commerce helps in increasing trade with foreign nations, bringing more money into the country.

(4) Supports Banking and Financial Services: Banks and online payment system like UPI help businesses grow by providing loans and easy money transactions. These services make trade smooth and help people their money better.

(5) Boosts Online shopping and Digital Payments: E-commerce platforms allow people to buy and sell products online. Digital payments have made transactions faster, safer and more convenient for both business and customers.

(6) Encourages Small Business and Startups: Commerce helps small business owners and new startups grow. Government schemes like "Startup India" support new business leading to more jobs and better economic growth.

(7) Improves Roads and Transport: As business grow, the need for better roads, transport, and warehouses increases. This leads to better infrastructure which helps in the overall development of the country.

(8) Increases Government Income: The government earns money through taxes on businesses, goods and imports and this money is used for building schools, hospital and public services.

Conclusion

Commerce is an essential part of the Indian economy. It helps in trade, job creation and business growth. With the rise of online shopping and digital banking, commerce will continue to grow and strengthen India's economy.

Chandni, B.Com. 1st Year

भारतीय अर्थव्यवस्था में वाणिज्य की भूमिका

भारत की अर्थव्यवस्था में वाणिज्य (ब्वउउमतबम) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन वितरण और उपभोग को संगठित और सुचारु रूप से करने में मदद करता है। वाणिज्य व्यापार, उद्योग, बैंकिंग, बीमा, परिवहन और सेवा जैसी गतिविधियों को समाहित करता है, जो अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाते हैं।

आर्थिक विकास में योगदान : वाणिज्य उत्पादन और व्यापार को बढ़ावा देकर GDP (सकल घरेलू उत्पाद) में वृद्धि करता है, जिससे आर्थिक विकास को गति मिलती है।

रोजगार के अवसर : वाणिज्य विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि खुदरा व्यापार, ई–कॉमर्स, बैंकिंग, बीमा और लॉजिस्टिक्स में लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

मोनेटरीकरण को बढ़ावा : वाणिज्य उद्योगों को कच्चा माल, पूंजी और बाजार उपलब्ध कराता है, जिससे मैनुफैक्चरिंग और सेवा क्षेत्र में वृद्धि होती है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन वाणिज्य भारत को निर्यात और आयात के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ता है, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है और आर्थिक स्थिरता बनी रहती है।

उपभोक्ता सुविधा में वृद्धि : वाणिज्य उपभोक्ताओं को विभिन्न उत्पाद और सेवाएँ आसानी से उपलब्ध कराकर उनके जीवन स्तर में सुधार करता है।

सरकार के राजस्व में वृद्धि : व्यापार और उद्योगों से कर (टैक्स) के रूप में सरकार को बड़ी मात्रा में राजस्व प्राप्त होता है, जिससे देश के बुनियादी ढाँचे और सार्वजनिक सेवाओं में सुधार होता है।

डिजिटल और ई–कॉमर्स क्रांति : ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म (जैसे ।उंवद, थ्सपचांतज, डममीव) के माध्यम से वाणिज्य ने छोटे व्यापारियों और उपभोक्ताओं को ऑनलाइन व्यापार करने का अवसर प्रदान किया है। बैंकिंग और वित्तीय सेवाएं वाणिज्य बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के माध्यम से पूंजी प्रवाह को बढ़ाता है, जिससे व्यवसायों को विस्तार करने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष : भारतीय अर्थव्यवस्था में वाणिज्य एक रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करता है, जो उत्पादन, व्यापार, उपभोक्ता सुविधा, रोजगार और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Chandrapri Kaushal, B-Com 1st year

Women Cell

Rovers and Rangers

CSCA

Youth Festival, Group-II

Best Actress : HPU Youth Festival Group-IV Ritika

बेबी ने गणतंत्र परेड के अनुभव किए स

य महाविद्यालय पनारसा में राष्ट्रीय सेवा योजना के
क्रवार को प्रभात फेरी निकाली गई। योग अभ्यास,
बाद स्वयंसेवियों ने महाविद्यालय परिसर में फुल
काई कर उन्हें संवारा। इसके बाद बौद्धिक सत्र का
या। राजकीय महाविद्यालय कुल्लू के राजनीति वि
ठाकुर एवं वालंटियर बेबी शर्मा मुख्य वक्ता के
बेबी शर्मा ने 26 जनवरी की राष्ट्रीय दिव
के अपने अनुभवों को साझा किया।

सात दिवसीय विशेष शिविर का आरंभ

राजकीय महाविद्यालय पनारसा में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा
शिविर आरंभ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. उरसेमलता
कार्यक्रम का आगाज एनएसएस के ध्वजारोहण एवं गार्ड ऑफ ऑनर
कार्यक्रम अधिकारी कृष्ण लाल ने बताया कि यह शिविर आगामी 7
जिसमें स्वयंसेवियों द्वारा विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित
में पर्यावरण जागरूकता, सामुदायिक सहभागिता एवं विकास, सड़क
ग्राहक अधिकार, नशा मुक्ति, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, भारतीय ज्ञान
गतिविधियां शामिल हैं। इसके अतिरिक्त स्वयंसेवियों द्वारा विभिन्न प्रकार
एवं बौद्धिक गतिविधियों का भी आयोजन किया जाएगा। प्राचार्य डॉ.
जहां विद्यार्थियों को एनएसएस के इतिहास एवं यात्रा का विस्तार
सेवियों को बताया वहीं उन्होंने स्वयंसेवियों को महत्व

रसा कालेज में एनएसएस

एजेंसी

(कुल्लू)। राजकीय
पनारसा में राष्ट्रीय
इकाई का सात
शिविर शुरू हुआ।
महाविद्यालय की
उरसेम लता बतौर
अतिथि मौजूद रहीं।
के ध्वजारोहण एवं
गार्ड ऑफ ऑनर
कार्यक्रम शुरू हुआ।
कार्यक्रम अधिकारी कृष्ण
ने बताया कि शिविर सात दिन
चलेगा। इसमें कालेज के
स्वयं सेवी भाग ले रहे
इस दौरान डॉ.
अहलूवालिया, प्रो. हीरा
रतन नेगी व बिंदु सूद
मौजूद रहे।

मंडी

कालेज के टांकरी लिपी प्रशिक्षण कार्यशाला

राजकीय
में राष्ट्रीय
ई का सात
र शुरू हुआ।
विद्यालय की
लता बतौर
मौजूद रहीं।
चल
स्वयं
इस दौरान
अहलूवालिया,
रतन नेगी

एनएसएस के स्थापना

रसा कालेज के मेधावियों पर बरसे

म से मनाया गया महाविद्यालय का वार्षिक उत्सव, छात्रों ने रंगारंग कार्यक्रम से

महाविद्यालय पनारसा में राष्ट्रीय सेवा
लता की अध्यक्षता में एकल गीत, सम
प्रस्तुत किए। कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर
ना 24 सितंबर 1969 को की गई थी।
रतन नेगी, अनीता, डॉ निशा शर्मा एवं ला

पहाड़ी अनुभाग

पहाड़ी अनुभाग

प्रिय पाठको,

तमा सोभि पाठका होर महाविद्यालय रे विद्यार्थी बे बड़ी–बड़ी बधाई होर शुभकामनाएं कि महाविद्यालय री पत्रिका 'अर्जिक्या' रा सत्र 2024–25 रा इह अंक छापणा लाऊ। जेड़ा कि हामें सोभे जाणदा कि म्हारी पहाड़ी बोली रा हामा पहाड़ी रे जीवना मंजे केतरा महत्त्व आसा, पर आज हामे आपणी बोली–भाषा का दूर हुंदे लागे। ऐतका सोभि न बड़ा कारण आसा म्हारा पश्चिमी संस्‍ति बाख झुकाव। आज हामे अंग्रेजी होर हिंदी रे एतरे दीवाने होई कि आपणे बच्चे बे पहिले आपणी बोली नी सिखान्दे पर अंग्रेजी होर हिंदी जरुर सिखान्दे। एक समय ऐड़ा इहणा कि म्हारी पहाड़ी भाषा–बोली सोभे मूकणी। नई बोली–भाषा सिखणी कोई बूरी गल नी आंहदी पर महारा इह भी कर्तव्य आसा कि आपणी बोली–भाषा भी बचाई डाहणी। म्हारा एक होछा जेड़ा प्रयास आसा कि आसा आपणी बोली–भाषा बे भी तेथरा महत्व दीणा जेतरा कि होरी बोली–भाषा बे। अंता न मा एतरा बोलणा कि महाविद्यालय री पत्रिका 'अर्जिक्या' रा इह अंक तमा सोभि पाठका बे बड़ा ज्ञानबर्धक होणा।

कृष्ण लाल
सम्पादक पहाड़ी अनुभाग एवं
सहायक आचार्य (इतिहास)

प्रिय पाठको,

सबी न पहिले हांऊ धन्यवाद केरना चाहां सी प्रोफेसर कृष्ण लाल जी रा जिन्हें मुंभे महाविद्यालये री बार्षिक पत्रिका 'अर्जिक्या' री पहाड़ी अनुभागे री छात्रा–सम्पादकै री जिम्मेबारी सौंपी। औज आधुनिकते री अंधी–दौड़ा न आसा आपणी परौणी संस्‍ति संजोइया रखणी। आसा सबी री जिम्मेबारी बणा सी कि आसा आपणी परौणी धरोहरा बचाई केरी आजकाला रे आधुनिक दौरा संघे कदमा न कदम मिलाई चलणा। एक परौणी कहावत बी सा किरू

'नऊआ लाणा पर, परौणा नी छाड़णा'

हांऊ धन्यवाद केरना चाहां सी तिन्हा सबी छात्र–छात्राओं रा जिन्हें महाविद्यालये री बार्षिक पत्रिका 'अर्जिक्या' री पहाड़ी अनुभागा मंझे आपणी लोक भाषा न आपणे मना रे भाव व्यक्त केरे। सबी छात्र–छात्राओं रा आपणा बहुमूल्य योगदान दैंणे री तइंए धन्यबाद।

मधू
(छात्र सम्पादक पहाड़ी अनुभाग)

मां

ममता जदु साकार हुन्दी, तां गले लाई मुस्कान्दी माँ।
सुखे दे सुपने दिक्खदी–दिक्खदी,
सुपनेयां बिच्च डुबी जान्दी माँ।।
अप्पू सौन्दी सिन्ने पासे, बच्चा सुक्के सुआन्दी माँ।
खरा–खरा बस बच्चे खातर, अप्पु सुक्का खान्दी माँ ।।
नुहाई–धुआई गला पाई, लम्मे लोहे लान्दी माँ।
बुरी नजर नी कुसे दी लग्गै, काला टिक्का लुआन्दी माँ।।
गोदा लेई देई थपकियां, खूब लोरियां गान्दी माँ।
प्रेम निशाणी दिक्खी–दिक्खी, गले लाई मुस्कान्दी माँ।।
रोज रोटियां गर्म बणाई, बस्ते बिच्च पुआन्दी माँ।
निकियां जंघां लम्मे रस्ते, ल्योण ते छड्डण जान्दी माँ।।
पढ़ाई–लिखाई बरी–बियाई, खुशियां खूब मनान्दी माँ।
बच्चे दीयां खुशियां दिक्खी–दिक्खी, फुल्ली नेईं समान्दी माँ।।
वक्त बदलदा बूढ़ी हुन्दी, होई फालतू जान्दी माँ।
पुत्र–नुआं मौज मनान्दे, किल्ली बेई पच्छतान्दी माँ।।
पुत्र होई जायै कुपुत्र फिरी बी, माँ दा धर्म निभान्दी माँ।
गल्ल घरे दी घरे च रक्खी, हिकडुए दर्द छुपान्दी माँ।।
कुत्ते आया ते कुत्ते नौकरैणी, बणी ने वक्त लंघान्दी माँ।
कदी–कदी तां लेई बुढ़ापा, वृद्धाश्रम पुजी जान्दी माँ।।
माँ हुन्दी जियाँ बड़े दा बूट्टा, ठण्डी छाँ लुटान्दी माँ।
माँ दी कीमत समझो लोको, पैसेयां ने नी आन्दी माँ।।
नौ महीने पेट्टे टंग्गी, जम्मी संसार दिक्खान्दी माँ।
मां दा कर्जा देई नी मुकदा, दर्दे दी कलम गलान्दी माँ।

साक्षी शर्मा
कला स्नातक द्वितीय वर्ष

पहाड़ी बोली री पुकार

एड़ी क्या किती मैं गुस्ताखी, क्या किती मैं बुराई,
पढ़णे–लिखणे बे ता थी नी, पर बोलणे–गलाणे न भी गवाई।
एड़ी केड़ी खता हुई मेरे ते, जे मेरे आपणेया किती हांऊ पराई,
हांऊ सा थारी पहाड़ी, जो आज सभी लोके दीनी भुलाई।
कधी हिंदी बोली कधी बोली पंजाबी, फेरी अंग्रेजी री केरी बड़ाई,
ज्यादा पढ़ा–लिखा हुणे री तंई, किभे मुं न दीना मुहं फिराई।
बोली–भाषा न तबदीली, ता आज तक भी होंदी आई,
पर आंहे आपणी बोली रा, आस्तित्व ही दीना मुकाई।
आपणे बच्चेया बे आमे–बापुए, हिंदी ता अंग्रेजी ही सिखाई,
पहाड़ी बोली सा पिछड़ी, पता नी एड़ी सोच कोखा न आई।
भई एड़ा भी कै हुआ, जे एड़ा भी धेड़ा दीना दिखाई,
पहाड़ी संस्कृति री पहचाण, आपणी बोली आज दीनी मुकाई।
भोटी, किनौरी, लाहुली, कुल्लूवी, मुहसवी, मंडियाली,
सिरमौरी, कांगड़ी, ता चम्बयाली, इंया सभे आज बिसरनी लाई।
कोही बोली–भाषा न मु बैर नई, सभे बोली–भाषा छैल हुई,
पर आपणी बे होरी न छोटी समझणा, पता नी कौखली रीत हुई।
अंग्रेजी गाणे मोडरनिटी, ता आपणे भ्यागड़े पूराणे हुए,
अंग्रेजी गलांदे पढ़ें–लिखें, ता पहाड़ी गलांदे ग्वार हुए।
हर बोली–भाषा पढ़ा, लिखा ता बोला, पर आपणी बोली बे मत
भुलाई, हर बोली री आपणी अहमियत, पर मेरे बगैर तेरा भी क्या
बजूद मेरे भाई।

संगीता
कला स्नातक तृतीय वर्ष

गौहरी देऊआ बाबा बीर नाथे री कहाणी

एकी समय री गल सा कि भेड़ा चारदे फुआल हुरले ग्रां न आये थी। तिने आपु संगे एक करडू भी आणु सी, तुईन तिना रा देऊ थी। संझा फिरी ते भेड़ा लेईया बापिस नौठे पर तिने आपणा सौ करडू तौखे बिसरू। फिरी आगे जाईया तिना बै याद आई की सौ करडू ता तौखे बिसरू। फिरी ते बापिस हुरले वे आए। जेबे तिने सौ करडू चकना लाऊ सौ उठिए नईं सी, तिने बड़ी कोशिश केरी। फिरी एकी माणू आगे देऊ आऊ ता देऊए बोलू की मू नी जाणा ऐबे मू औखे रौहणा। फिरी ओखे सौ देऊ लोके मनणा लाऊ, सौ देऊ सा गौहरी देऊआ बाबा बीर नाथ। ऐड़ी तरह गौहरी देऊआ हुरले ग्रां न बसू। बादा न लोके गौहरी देऊआ रा करडू बणाऊ, फिरी रथ भी बणाऊ ता आज सारा हुरला गौहरी देऊआ मना सा। ऐड़ी कहानी सा म्हारे देऊआ गौहरी बाबा बीर नाथे री।

ध्रुव महंत
कला स्नातक तृतीय वर्ष

औज–काला रे शौहरु रा जीणे रा अंदाज

औज–काला रे शौहरु रा जीणे रा अंदाज,
बुड़खा मारणी बड़ी–बड़ी, घौरे नी होआ सा खाणे बे प्याज।
औज–काला रे शौहरु रा जीणे रा अंदाज,
बोला सा हांऊ बड़ा शोभला, पर शकल औसा ऐंड़ी जेंड़ी बाज।
औज–काला रे शौहरु रा जीणे रा अंदाज,
पूरी साला नी पौढ़ना, पर मार्चा रे महीने न बणा सा जहाज।
औज–काला रे शौहरु रा जीणे रा अंदाज,
पागल शोहरू रे पागल दोस्त, नशा केरीए लागे रहंदे मस्त।
औज–काला रे शौहरु रा जीणे रा अंदाज,
किताबे री जगहा लाई चकणे फोऊन, इन्हा शौहरु बे समझाए कुण।
औज–काला रे शौहरु रा जीणे रा अंदाज,
शुणदे नी आमा–बापू रा, केरा सी आपणी मर्जी रा कौम।
शूणा नए जमाने रे शौहरुओ, बदला आपणे जीणे रा अंदाज,
शोभले कौमा केरीए, बणा सी शोभली पहचान।

प्रियंका ठाकुर
कला स्नातक तृतीय बर्ष

इम्तिहाना रे दिहाड़े

आया ऐबे मार्चा रा महीना, छुटदा सभी बे पसीना।
किताबा संघे हुआ घमासान, जेबे आये शोहरू रे इम्तिहान।
आमा बोलू उठ ड़े बेट्टू, दोत हुई किबे तू लेट्टू।
दिहाड़े आसा इम्तिहाना रे तेरे, सेज उठिया पौढ़ सबेरे।
बापुए बोलू घुमणा बंद, आमे बोलू खेलणा बंद।
घौरा बेशी–बेशिया हुए तंग, दिहाड़े मैथे रे ता टी.वी. भी बंद।
साला भरी जूणा मेहनत केरा सी,
इम्तिहान न तियां नी डोरा सी।
पर इम्तिहान न तियां होआ सी परेशान,
जूणा नी देंदें पूरी साला ध्यान।
औज मिलिए आसा एक कौम केरणा,
आसा इम्तिहान न बिल्कुल नी डरणा।
केरणी आसा खूब पढाई,
ता आपणे आमा–बापू रा नाम रोशण केरणा।

पिंकी ठाकुर, कला स्नातक तृतीय बर्ष

देऊ कुबेरा री बैठक

ऐ कहाणी सा मेरे ग्रांऊआ रे देऊआ कुबेर जी री। मेरे ग्रांऊए देऊ कुबेर जी रा एक होछा जी मंदिर सा जो कि एकी होछी जी झीले रे बीचे बणी रा सा। तेस्सा झीला बै बोला आसे कुफरी। तेता मंझे हुआं सिर्फ गाशे रा पाणी कट्ठा, होर पाणी तौखे कट्ठा केरना सख्त मना सा। म्हारे बड़े बुजुर्गं रा बोलणा सा कि आज तक कदी बी ऐड़ा नी हुआ कि कुफरी एतरी भौरुई कि देऊए री मंदिरे री बैठका न उझे नाहू। चाहे केतरा भी गाश किबे न हो पर पाणी देऊए री मंदिरे री बैठका न उझे कधी नी जांदा, तंहु तक गाश रुकी जांहा। आसा नौऊंई पीढ़ी बै लगा ती कि ऐढ़ा होई नी सकदा। जुलाई–अगस्ते, 2023 मंझे हुए पाणीए जो तबाही मचाई री ती तेई बै कुण भूली सकदा। म्हारे बड़े बुजुर्गं रा बोलणा ती की ऐतरा गाश औजा न पहिले कदी बी नी होऊ। जैबे गाश दिहाड़ी–राची तबाही केरदा लागा, रुकिया नी सी तैबे आसे सोचुआ कि इस बार आसा हेरना कि पाणी सच्ची देऊआ री बैठका न उझे जांदा। आसे सारे ऐंडें गाशा न घड़ी–घड़िए देऊआ रे मंदिरा आगे चलि रे ती ऐ हेरदे कि पाणी केतरा हुआ। जेंडें पाणी देऊआ री बैठका बराबर हुआ, तैबे आसा बे लागीरा ती कि एसा बारी ता पाणी देऊआ री बैठका न उझे होई जाणा। पर होऊ एतका उल्टा, जेंडें पाणी देऊआ री बैठका बराबर हुआ ता तेड़े गाश भी रुकू, ता तबाही रा मंजर भी थमू। आसे सारे ता हैरान ही हुए कि ऐंढा कैंडें होई सका। आसा सोभी बे ता इह एक करिश्मा ही ती, पर म्हारे बड़े बुजुर्गं रा बोलणा आज सच साबित हुआ।

मधू
कला स्नातक तृतीय बर्ष

पहाड़ी पहेलियाँ

पहाड़ी बोलियों में पहेलिओं का विशेष स्थान है जिन्हें स्थानीय बोलियों में विभिन्न नामो से जाना जाता है जेसे कुल्लूवी बोली में इन्हें पढाउणी, शनोरी में पुलणी या पोलणी जबकि सराजी बोली में इन्हें उपणी या बुजाऊणी आदि नामों से जाना जाता है। यूँ तो पुरे हिमाचल की स्थानीय बोलियों में इन पहेलिओं का चलन है परन्तु कुल्लू एवं मंडी की कुल्लू, गड़सा, बजौरा, शनोर एवं सराज घाटी में इनका विशेष महत्त्व है। आइए कुल्लू, शनोर एवं सराज घाटी में बोली जाने वाली कुछ पहेलिओं को समझने का प्रयास करे:

1. शिकलू–पिकलू भरू सारा थाव,
   बुज मेरी बुजहणी सारी राच। — तारें
2. धारा उरी–पूरी दूई बेहनी,
   लेरी–लेरी थकी पर कट्ठा नी कदी होई। — आँखे
3. नाले–नाले छोकरू,
   मुंडा परेंदे टोकरू। — लिंगड़
4. डांडिए कोदे डांडिए डौह,
   सात परौली एके वौह। — मधुमक्खी
5. मंडी लागी आग, कुल्लू पडू हाला
   लाहौल पुजू धूंआ, बुज मेरी बुजहाणी, इह के हुआ। — हुक्का

सीमा चौहान
कला स्नातक तृतीय बर्ष

देऊआ चुंजवालेया री लोकगाथा

जय देऊआ चुंजवालेया, भोले रे आ भगवाना
बीझी बादली रे धणीया, बीजा बाती रे वणीया

आपणे सैणे परोड़े जऊँ शुणदा हामे कि देऊआ चुंजवालेया री उत्पति कियां होई दी? देऊआ रो देहुरो किबे आसा बागीथाचा रे गड़े? तैया दस्दा कि पराणे जमाने री गल आहा कि एक बार होऊ ऐड़ा कि म्हारे ग्रांऊँआ का नाठी दी थी बेटड़ी घाह बेरी जंगला बे ता तैंया बड़ी दूर पूजी। लगभग दुई–चीन घंटे लागणे थी तैंया आपणे धरे पूजणे बे। तैंया मंझे एकी बेटड़ी लाई आपणी दाची पाथरा उझे तीछी करणी। जेड़े तेसे तीछी करने बे आपणी दाची पाथरा उझे लाई ता तेड़े पाथरा का दुधा–चिऊआ होर खूना री धारा निखली संघा दुई बड़ी–बड़ी मुरता भी निखली। तेसे बेटड़ी आपु साऊगी आई होरी बेटड़ी का भी दस्सू कि माए साऊगी होऊ एड़ा–एड़ा। तैंया सोभे बेटड़ी बड़ी डरी ता भागदे–भागदे आपने ग्रांऊआ पूजी ता सारी गला तियैं ग्राएँ रे लोगा का दस्सी। तेऊ जमाने ग्रांऊआ न बड़े कम माहणु हुंदा थी पर सारे ग्रांऊआ लगभग शाव माहणु कट्ठा होई तेसा जगह पूजे जोई सारी घटना होई थी। तैं लोके तैंया मूर्ति चकने री बड़ी कोशिश करी पर तैंया मूर्ति हिली भी नी। फिरी दुई भाई आये तौखी ता तैं दुईए भाई तैंया मुरता कान्हा पैंदे चकी ता हांडदे–हांडदे तैंया पूजी बागीथाचा री धारा। तैंया हांडी– हांडी एतरे थकी कि तैंया तौखे बशेगचे बेठे। बशेगच्ो– बशेगचे तैंया बेरे निऊटी आई ता तैंया तौखे सुते। जेड़े तैंया सुतिया उठे ता तैंया री नजर नाठी तैंया मूर्ति बाखा कि तैंया मूर्ति डूबी पूरी माटे मंजे ता एकी मकड़ी तैंया मूर्ति परेंदें आपणे जाला संघे मंदरा रा नक्शा बनाऊ। फिरी तौखी बागीथाचा री धारा देऊआ रा मंदिर बनाऊ। ऐड़े तेरे देऊ चुंजवाला प्रकट होऊ ता देऊआ रा देहुरा (मंदिर) बागीथाचा री धारा बणु। आज भी देऊआ रे मंदिरे तेऊ जमाने रा एक लेख लिखू रा पर लोक मान्यता इह आसा कि आज तक इहु लेखा बे कोई नी पढ़ी सकू। म्हारे बुजुर्गे रा मनणा आसा कि एकी समय देऊआ चुंजवालेया रा मोहरा मंडी रे राजे संघा गला केरदा थी। मंडी रे राजे होर देऊआ रा रिश्ता ऐतरा थी कि आज भी मंडी शिवरात्री रा निऊद्रा सभी देऊआ न पहिले देऊआ चुंजवाले बे दिंदा। एड़ी भी मान्यता आसा कि देऊ चुंजवाले रा एक थाली किलो रा बाम थी, होर जेभरे इह बाम बजदा थी तेभरे राजे रे भेड़े री पूरी छत हिलदा थी। बादा न राजे रे आदेशा पर इह बाम फाली पाई। आज भी इह बाम तणी शालागाड़ा डाही री पर एते री निशाणी रे तौर पर हर साला साजे बैशाखा री दिहाडी देऊआ चुंजवालेया हूम हुंदा। आज देऊआ री सात हारी आसा पर देऊआ रा मूल स्थान शालागाड़ा आसा। आज भी सौ देऊआ रा मोहरा जो राजे संघा गला केरदा थी देऊआ रे मूल स्थान शालागाड़ा आसा। देऊआ चुंजवालेया परेंदे लोका री बड़ी आस्था आसा ता देऊ भी लोका री सभी मनोकामना पूरी करदा।

रिनू कुमारी

हुआ तलाक

एक रोज नौठा हांऊ शौशू री गेशा,
आपू बैठे थी कुर्सी पांधे, मुभै बोलू तुसे धरती बेशा।
मैं बोलू शौशू जी तुसै कि लागे सी केरदे?
शौशुए बोलू जुंआई जी तुसे कि लगे सी हेरदे?
शौशू लागी ती छौलू टालदी,
छोले देआ ता लागी मुभै भालदी।
मैं बोलू शौशू जी तुसै सी ठीक?
शौशुए बोलू जुंआई जी तुसा पढ़नी एक लाते की किक।
तेतरी घेरे आई तौखे बड़ी साली,
सैभी जे लागी भाईयो मुम्भे देंदी गाली।
साली ता शौशू हुई दुऐ कैठ,
हांऊ ता हुआ ती खड़ा शौशुए बोलू तू धरती बेश।
तैबे नी रौही तिन्हा बे गला केरणे री तमीज,
तिन्हे ता चीरी मेरी दुई शौऊए री नऊई कमीज।
झीके ता बुझू मै ऐबे कि केरणू,
पर मना न सोचू तुसेबै ता हांऊ दूजी घेरे हेरणू।
मै सोचू यारो शोहरी–बेटड़ी संघे मुंह की लाणा,
ता कनै बोलू उठ दुनिया धौरा बे जाणा।
तेसे लाड़िए भी यारों हांऊ उल्टा घसू,
इन्हा आपने दुखा हांऊ यारों कौसा बे दसू।
तैबे आई यारों मुभै भी झीक,
मैं भी मारी तेसा बे एक लौते री कीक।
सौ लाड़ी थी यारों मेरी बड़ी खराब,
सौ ता पिया थी यारों लुगड़ी–शराब।
सौ ता समझा ती आपुबे बड़ी चलाक,
तैबे धीना मैं यारों तेसा बे तलाक।

नैना शर्मा
कला स्नातक द्वितीय वर्ष

शनोरा रे डुआर

बड़ी पराणी गल आसा कि एकी ग्रांए एक बुडली आमा रहन्दा थी। तेसरा एक शोहरू भी थी। दुहे आमा–शोहरू बड़े प्यारा–लोभा संघा रहन्दा थी। शोहरू जेबा बड़ा होऊ ता आमा तेई रे विआहा री बड़ी चिंता लागी होंदी। एकी दिहाडी सी दूजे ग्रांऊआ बे नाठी ता आपणे शोहरू बे एक शोभली नूश भाली। बड़ा विआहा करू, बुडली आमा आपणी सारी धन–माया शोहरू रे बिआहा बे लाई। भगवाना री .पा संघा थोड़े समय बाद बुडली आमा रे घरे एकी पोचे रा जन्म होऊ। बुडली आमा एतरी खुश थी कि जेड़ा पूरा संसार तेसरे घरे थी, पर तेसरी सारी खुशी थोड़ी दिहाड़ी री थी। तेसरा शोहरू एबा पूरी तरह आपणी बेटड़ी रे हाथा रा खेलणू बनू। ऐबा बुडली आमा तैंहा बेरी बोझ बनी, गल एतरी आजू पूजी कि ऐबा तैंया बुडली आमा बे एकी घड़ी भी आपणे घरा नी डाहणा चांहदे थी। एकी दिहाड़ी बुडली आमा री नुशा आपने लाड़े बे बोलू कि आपणी आमा इच्छ शनोरा रे डुआरे छाडी नाई ता मा जाणा घरा छाडी। बेचारे बे होई बड़ी मुश्किल कि बेटड़ी री शुणू कि आमा बाख भालू, पर तेई आपणी बेटड़ी रा शुणू। येंआ सारी गला बुडली आमा रे पोचू भी सारी शुणी। दूजे दिहाड़े, दोथी बुडली आमा रे शोहरू आपणी आमा किरडू भीतर पाई ता बुडली आमा रे पोचुए आपणे बाबा बे बोलू कि मा भी जाणा दादी छाडदे। ऐबा दुहे बाब–बेटे बुडली आमा छाड़दे शनोरा रे डुआरे पूजे। बुडली आमा री ऊम्र मुकी थी बहु ज्यादा होई कि ऐबा तेसरा हांडणा–फिरणा भी बड़ा मुश्किल थी। दुही बाब–बेटे ऐबा बुडली आमा शनोरा रे डुआरे छाडी ता दुहे घरा बे हटदे लागे कि तेभरी बेटे री नजर तिऊ किरडू परेंदे पड़ी जिऊ मंजे तिऊ रे बाबे आपणी आमा शनोरा रे डुआरा बे आणी थी। तेबे बेटे आपणे बाबा बे बोलू, "बापुआ इहु किरडू भी चला घरा बे" ता तेबा बापुए पुछू किभे? इहु रा के काम? इह होऊ पराणों, इहु दे रहणे इन्धे। तेबा जो बेटे बोलू, बापू रे उड़ी होश। बेटे बोलू "बापुआ जेभरे तमे होणे बुडले, तेभरे तमे भी ता आये पूजऊणे शनोरा रे डुआरे, तेभरे इणों इह किरडू बड़े कामे।" बेटे री गला शूणी बापू बे आपणी गलती रा पता लागा कि येंआ शनोरा रे डुआर सभी बे। आज हामें आपणी बुडली आमा इन्धी पजई ता काला जेबा हामे भी बुडले होने ता म्हारे शोहरू भी हामे इन्धी पूजऊणे। ऐबा दुही बाब–बेटे बुडली आमा किरडू मंजे पाई ता आपणे घरा बे हटी आये।

कृष्ण लाल

सहायक आचार्य (इतिहास)

देऊ बरनागा री स्तुति

देऊ पराशरे रे कटवाला, आणी तौभे फुले री हारा,
जय देऊआ बरनागा, लागा नौचदा बड़ा प्यारा।
एक शोभला तेरा शानोड़, दूजा शोभला कोटाधार,
आसे शोभले वरनागी झुरिए, वणसारी सा म्हारा प्यार।
छुड़े भी ता सुने रा रथडू तेरा, देऊआ वरनागा तू सा लोभ मेरा,
होरी देऊआ बे फुले रा डोलरू, तौभे देऊआ पूरी फुले री हारा।
पांजो लागी कोटाधारा, बिरशु जाच लागी तेरी लोगी,
नौचदे लागे तेरे देउलु, लाईरी शैती उणे री झग्गी।
झुरिए लाऊ मेरी चित्रा पादू, संगे गुथी तौभे फुले री हारा,
नाटी पीड़ी शोभली देऊआ, लाऊ दिणा तैं नौचणे रा झलारा।
तू सा देऊआ म्हारे हिफडु री छेड़, आसे तेरे गौला रे मोती,
म्हारे दुखा–सुखा बहणु आला, तौ आगे दिणा आपणा सब किछ शटी।
कई बे लिखु तैं सुने री कलमे, कई बे लिखु तैं छिड़ी रे डाले,
तू देला खरा चाहे देला माड़ा, पर आसे ता तौहा मनणु आले।
तौ संगे चलदी जोगणिया, चलदे संगे देऊलू सारे,
तू सा देऊआ जुगा रा मालक, केरे दुःख दर्द दूर म्हारे।
राजी–बाजी डाहे सभी देऊलूआ, तौं आगे केरी अरजा,
शोभला म्हारा देऊ वरनाग, शोभली देऊआ वणसारी री प्रजा।

सुषमा, कला स्नातक प्रथम वर्ष

भमसोई न प्रकट होई रा शिवलिंग

हिमाचल प्रदेश जूणी बै देवी–देऊआ री धरती बोला सी औखले लोका देवी–देऊआ न अटूट विश्वास केरा सी। ऐंदे दिहाड़े एसा देऊ भूमि न कई चमत्कार हूंदे रौहा सी। ऐड़ा ही एक अदभुत चमत्कार जिला मंडी री उप तहसीला औटा रे तहत इलाका शनोरा री टकोली पंचायता रे भमसोई ग्रां न होई रा थी। घटना किछ ऐंडी तरह न होई कि औजा न लगभग 40 साल पाहिले ग्रांऊआ रे एक बुजुर्गे श्री गोला रामे एकी देऊआ री स्थापना केरी। देऊआ रे नांऊ बै लेइया बौहू रोज तक असंमजसे रा दौर चलदा रौहू, पर 1998 मंझो ऐई देऊआ रा रथ बणाऊ ता एक कमेटी भी बणाई। एसा कमेटी रे कमेटीदारे ऐई देऊआ रा नांऊ खोड़ू देऊ रखू। देऊ परम्परा रे सावै नौंऊए रथा बै जेबै पराशरा ऋषि रे मूल स्थान न नेऊ ता पराशरा ऋषिप री कमेटीए नंऊए देऊ रे नांऊआ मनणे भै इन्कार केरू। तैबै नौरी ऐई देऊआ रा नांऊ जगन्नाथ रखू। ऐसा कमेटीए बादा न देऊ पराशरा रे नांऊआ न एक होर रथ बणाऊ। तैबै देऊ पराशरे आदेश दिनू की पहिले बनाई रे देऊआ रे स्थाना हैठे एक शिवलिंग सा। तैबै देऊआ रे गुरे तेई चिन्हित जगह री खुदाई शुरू केरी, पर बादा न बंद केरी। ऐसा कड़ी न अगली घटना 1 नम्बर 2007 न घटी जेबै देऊआ रे गुरा जीबानन्दा होर टिक्कम रामा बै देऊ खेल आई। देऊआ रे गुरे देऊ खेला मंझे आपणी गुर्जा संघे पहिले खुदाई केरी री जगह न एक पाथर खोलू ता तेई पाथरा हेठे एक कीड़ा निखलू। जेंढे देऊआ रे गुरे तेई कीड़े पांधे कापड़ा पाऊ ता बादा न तेसा जगहा न एक प्राचीन शिबलिंगे री प्राप्ति होई। जैबे सौभी जगह एई शिबलिंगा रे बारें न पता चलू ता लोग दूरा–दुरा न एई रे दर्शणा केरदे आए। तौखे रे स्थानीय लोके एई शिवलिंगा बै नीलकंठ महादेवा रा नांऊ दीना ता पुरे विधि–विधाने संगे शिवलिंगा री पूजा–अर्चना ता स्थापना भी केरी। स्थानीय लोके मंजे तारा चंद, रामसिंह, सूरज ठाकुर, सुंदर ठाकुर होर भागी रामे ऐस शिबलिंगा री पुष्टि केरी सा। ऐस तरह भमसोई न शिवलिंग प्रकट हूईरा।

हिना ठाकुर
कला स्नातक तृतीय बर्ष

देऊ त्रिभान्ता

देऊ त्रिभान्ता, कंजरु बीरनाथ म्हारा,
बसेया तु टिक्कर पनिहारा।
देहरु–मोहरू हा थारे धारा,
दिंखा इथिते बालू रा नजारा।
अठारह चिराग चाहडू मुकाए,
तां जाई कने टिक्करु अपनाए।
त्राई शक्तियां कने बनैया त्रिभान्ता,
जाणदे मतां इन्हारी शक्ति रा अंता।
शोभला फुला साही हा रथडू प्यारा,
पूजा तीजौ इलाका बालू सारा।
देऊ हा आसा रे इलाके री शान,
बणाई गई रा दुरा–दुरा तक पहचाण।
भूता–प्रेता जो भगाणे आला,
रूठेया जोड़ेया मनाणे आला।
ए सा आसे रे देऊआ रा कमाला,
आपु आइए कने देखिया धमाला।

प्रिया ठाकुर, कला स्नातक तृतीय बर्ष

नाऊ होमे रा नजारा

नाऊ होमे रा नोखा नजारा,
भालदा ऐजा सा देश सारा।
नाऊ होमे री नोखी शान,
सभी रे घौरा बणदे बांके–बांके पकवान।
जैबे आणदा रार्घडान देवी रा खारा,
भालदा लागा देश सारा।
माता अम्बिका सा बडी महान,
सभी रे घौरा ऐजा सी मेहमान।
नाऊ होमे रा नोखा नजारा,
तैबे लागा सा इह सभी बे प्यारा।
नाऊ होमा भालदी ऐजा सा दुनिया सारी,
अम्बिका माता सा सभी न प्यारी।

स्नेहा शर्मा
कला स्नातक प्रथम बर्ष

पहाड़ी मुहावरे / लोकोक्तियाँ / कहावतें

1. दुधा दिन्दी गाई री लागदा केभरे लाता भी सेहणी
हिंदी अर्थ : काम करने वाले व्यक्ति की कभी गालियाँ भी सहन करनी पड़ती है।

2. आंऊला रा सुआद होर बुजुर्गा री गला इग्धा बादा का याद
हिंदी अर्थ : आंवले का स्वाद एवं बड़ों की कही बातें हमेशा बाद में समझ आती है।

3. उखला न मुंडी पाई ता मुसला न की डरना
हिंदी अर्थ : कठिन काम को हाथ में ले लेने पर आने वाली बाधाओं से विचलित न होना।

4. बेठे गाधे गुलआड़ा
हिंदी अर्थ : बेकार पड़ा आदमी हमेशा फालतू की बातें करता है।

5. उंगधी मरदा, चूंगधी नी मरदी
हिंदी अर्थ : कर्म न करने वाला व्यक्ति हमेशा असफल एवं कर्म करने वाला हमेशा सफल होता है।

6. उम्बलो हाली
हिंदी अर्थ : हमेशा उलटे कार्य करने वाला

7. मिरग अजी ढेके बांडी मुकी लाई थाचे
हिंदी अर्थ : बिना परिणाम के सफलता का जश्न मनाना

8. मूंडे पड़ी बीज गाधो बोदा मशेण कन्धा का आई
हिंदी अर्थ : मुसीबत आने पर भी अनजाने बना रहना

9. कामा बे नी बोलणा काला, झगड़े बे नी बोलणा चाला
हिंदी अर्थ : काम के लिए कभी इनकार एवं लड़ाई–झगड़े के लिए हमेशा तैयार नहीं रहना चाहिए।

10. रुहाटा–बीड़ा रे द्वार सौभी बे
हिंदी अर्थ : कर्मों का फल सभी को भोगना पड़ेगा।

11. काण्डे–भेखले लागणा
हिंदी अर्थ : अत्यंत दुर्गति होना।

12. धाना री ओईरी शुझदा गोदे
हिंदी अर्थ : होनहार लोगों के गुण बचपन से ही दिखने लगते हैं।

कृष्ण लाल, सहायक आचार्य (इतिहास)

कुल्लुवी लोककथा

एक बारी री गैल सा बहु पराणी बह साला हुई। एकी बुढ्ढे री दुई न्हूश ती। बड्डी न्हूश ता सुस्त जेहई ती ता होछी न्हूश बड़ी सैम्झकार ती। सो सारे कोमा कैरी तो। बहु मैहनतण ती । तिन्हा रे खोहला न एकी बूटी रे बुन्हें तिन्हा रे कूलज देऊए रा ढेहरू ती । तोखे बेशिए तेई घोरा रे टैब्बर पूजा पाठ केरा ती। बड्डी न्हूशा रा रोज ध्याड़े रा कोम ती जे सो देऊआ आहगे जाईए बोर मोंगा ती ता किछ बी कोम काज नैई केरदी ती। सो लोमी पोईए रोहआ ती तेहसा रे दुई आले भाऊ ती। तिन्हां वे बी सो खैरी केरिए नैई हेरदी ती । तेहसा रे इन्हां कोमां बे हैरियै शोहरा बड़ा परेशान रोहया ती । तेईए एक गैल आपणे मना न सोची ता दुहयै न्हूशा शाहदी।

तेईए दुही वै एक एक किलो ऊन धीनी ता एक एक बोका जेहया पीट्टू बणाणे बे बोलू। सैहगे बोलू जे जैदी गैरमी रे ध्याड़े निभले, हयूंदा रा मौसम ऐला, तैबे तुस्सा दुही रे पीट्टू त्यार लौडी।

तैदी काल गैरमी रे ध्याड़े ती। बड्डी न्हूशे ता सारे सारे ध्याड़े सोई सौईऐ काटणे लाए ता होछी न्हूशे आपणा कोम शुरू केरु। तेहसे आपणी ऊन साफ केरिए कातणी शुरू केरी। बड्डी न्हूशे आपणी ऊना सैहगें आले भाऊ री टट्टी साफ केरी केरियै छेता न शैटणी लाई। ऐंढा केरी केरियै तेहसे औधी ऊन शैटी धीनी । हाछी न्हूशे सो ऊन हेरी ता तेहसा बे बड़ा बुरा लागा। तबे तेहसे तेसा ऊना बे धोईए शकाइए खेऊ केरियै सो भी कातणी शुरू केरी। अबे तेहसा आहगे डेढ किलो ऊन कट्टी हुई ता बड्डी न्हूसा आहगें आधा किलो ऊन रौहई। शौहरा दुही न्हूशा री जासूरी केरदा लागा। सो एकी टीरे नदुही बे हैरा ती। तेईए होछी बड्डी दुहे न्हूशा रा पता लाऊ । तेईए पता लाऊ जे बड्डी न्हूश कोमा नी केरदी ता देऊआ आहगे जाईए बोर मोंगा सा। एकी ध्याड़े जैबे सो बारे मोंगदी देऊआ आहगे जांदी लागी तबै शोहरा तेहसा न पहिले तोखे पूजू ता बूटी पीछे गौहजिया रौहऊ। जैबे न्हूश बोर मौंगदी लागी सो शूणदा रौहऊ । न्हूश बोलदी लागी " देऊआ, देऊआ बोरदे बोर दे। मूं ता किछहे कोम नी केहरूदा, हयूंदा रे ध्याड़े ऐणू आले सी। अबे हाऊ की केरणू। हाऊ तो आहगे होथ जोड़ा सा, पैर पीड़ा सा मेरा पीट्टू बणाइरै दे देऊआ। ऐंढा बोलिए सो रौंदी लागी। तबे बूटी रै पीछे न शौहरा बोलू रौईए रोईए किछ नी बोणना कोम करना पौड़ा सा, तबै बोर मिला सा। तेईए देऊ रै मौहरे पीछे मुंह केरिए जोरा सैहगे बोलू काली मिजली केरली खेऊ। बोर देला तेरा खोखणी देऊ।

न्हूश बड़ी हैरान हुई जै ओज ता देऊ भी बोलू। सो खूशी सैहगे ठौर मारिए घोरा रे भीतरै न्हौठी। होर आपणी ऊन कातणी शुरू केरी। रात ध्याड़े खेऊ केरिऐ तेहसे एक शाल बणाई। अबे मना न सोचदी लागी जै औहउ औधी ऊन शैटी। 1 किलो ऊना रा एक पीट्टू बौणना ती। अबे ता किछ नी होई सका सा। होछी हूशे आपणी 1 किलो ऊना रा एक बड़ा शोभला तारा गुडी आला पीट्टू बणाऊ ता आधा किलो ऊना री एक ब्राई फूला आली शाल बणाई। शौहरे बे सब पता ती। जबे हयूंदा रे ध्याड़े शुरू हुए तबे शोहरे दुई न्हूशा शाहदी। होछी न्हूशे आपणा पीट्टू ता शाल रिहाई। शोहरा बड़ा खुश हुआ। तेईए तेहसा बे शाबाशी धीनी। तेईए बोलू मुंहवे पता सा जै तो खेऊ केरिया पीट्टू बणाऊंदा सा। ऐह भी पता सा जे टट्टी आली ऊन साफ केरिए शाल बणाइंदी सा। तेईए तेहसा बे एक चन्द्रहार इनामा न धीना। अबे बड्डी न्हूशा री बारी आई। सो डोरदी डोरदी शौहरी आहगे पूंजी। सो डोरा सैहगे कोमदी लाईदी ती। तेहसे शोहरे बे एके शाल रिहाई। तेईए बोलू पीट्टू की सा। शाल बणाईदी ता बाकी री ऊन की पाई। तेहसे

बोलू जे मै भाऊ री टटटी पूंहजिए छैता न शैटीदी सा। मुहवे देऊए बोर धीना तबे मैं खेऊ केरिए ऐह शाल बणाईदी साशोहरा हीसदा लागा होर तेईए बोलू हाऊए ती सो देऊ। हाऊंए बूटी पीछे गीहजूंदा ती। तबे न्हूशा बडी शर्मूई होर शौहरे न माफी मॉंगी। तेईए बालू तौहदें देश न सही पर अक्ल ता आई। अबे न फेरे आलस नैईं केरली खेऊ केरली तबे तोहबे जिंदगी न सुख होणा।

तबे फेटे सो खेऊ केरदी लागी ता तेहसा बे सुख हुआ ता शौहरा भी खुशी हुआ। तुई न फेटे ते सबहै सुखा सैहने रौहदे लागे। ऐहसा कहाणी न आसा सैभी बे ऐह सैबक मिला सा। जे देऊ भी खंऊ केरिएँ बोर देआ सा औहदे नैईं दैंदा।

गीता न भी भगवान .श्णे ऐढा बोलूदा सा।

रवि शर्मा, कला स्नातक

लोककथा अनुवाद

अनुदित कथा एक पुरानी लोककथा है जो की मूल रूप मे कुल्लवी में रचीत है और यह कथा कुल्लू के खोखण गॉव से संबंधित है!
तथा यह गॉव तहसील भुन्तर में आता है।
अनुदित कथा का अनुवाद –::

इस लोककथा का शीर्षक है वीर देऊआ

वरदान दो भगवान वर दो एक बार की बात है। एक बुजुर्ग की दो बहुएँ थी। बड़ी बहु सुस्त आलसी थी और छोटी बहु बहुत समझदार थी। वह सारा काम करती थी। और बहुत मेहनती थी। उनके घर के आंगन में एक पेड़ के नीचे उनके कुल देवता का मंदिर था। वहीं बैठ कर उनके परिवार के सभी लोग पूजा पाठ करते थे।

बड़ी बहु का रोज का काम यह था की वह रोज पेड़ के नीचे बैठकर देवता से वरदान मांगती थी और कोई काम नहीं करती थी। हमेशा सो कर रहती थी। उसके दो बच्चे थे यह इनको भी अच्छे से नही देखती थी। उनका ससुर उसके इन कामों को देखकर बहुत परेशान था! उसने अपने मन में एक बात सोची और दोनों बहुओं को अपने पास बुलाया। उसने अपनी दोनों बहुओं को एक एक किलो ऊन दी और उनसे कहा कि इसका कामों को एक एक पट्ट्द बनाना है। आजकल के दिन है जब तुम अपने के दिन आएगें तो मैं तुमसे पट्टुड मठिगों वही बहु ने सभन पारा द्वारा दिन सो के काट रही थी नही छोवी बहु ने तो अपना काम करके कातणी शुरु भी कर दिया था। उसने अपनी ऊन साफ करने कातणी शुरु कर दी सब साथ ही बड़ी बहु की ऊँ से अपने पोती साथ करके खेत में साफ कर फेकती गई। जब वह बड़ा सब छोटी बहु ने देखा तो उसे बड़ा दुखा कर दुखा कर फिर छोटी बहु ने कातना शुरु कर दिया। ये मेहनत करके और वो जो वही बहु ने बैंक दी थी उसे भी उसने साफ करके उपने इस माल मे लाया साफ अब इसके पास हुई किलों अन हो गई। साथ ही उसने अपना काम शुरु कर दिया। सुर दोनो बबुओ की जासूसी करता था और और उसने छोटी बड़ी दोनों बहुओं का पता लगाया की वो रहे है। उसे पता चला कि बड़ी बहू पट्टू कर रही और पास जाकर दिन एक वस पुरा वरदान मॉंगती रहती है। जब वह प्रार्थना मांगने जा रहा थी तो ससुर पहले ही वहीं जाकर वरदान मांगने और जब रही थी तो ससुर सुन रहा था।

बड़ी बहु कहती है कि "हे भगवान सर्दियॉं आने वाली है परंतु मैने अभी तक कुछ नहीं किया में पट्टछ कैसे नाऊ मुझे पट्टढ बनाकर दो। ऐसा बोलकर वह रोने लगी। ससुर देवते के रूप में पेड के पिछे छुपकर कहते हैं कि रो रो कर कुछ नही होता मेहनत करनी पड़ती है। फिर वह जोर से कहता है कि "कातली मिजली केरली खेऊ बीर देला तेरा खोखणी देऊ मतलब कि कातेगी, पिजेंगी करगी मेहनत तब भगवान ब्रह्मा (खोखण के आराध्य देवता) देऊ ।

वह बहुत खुश हुई की भाई तो भगवान ने भी बोल दिया और घर मे जाकर अपनी ऊन कातणी शुरु कर दी। और मेहनत करके एक शील बनाई और घर में सोचने की लगि की ऊन बन जाता। होती पट्टु ने अपमा। किलो का सुंदर नाबाला पट्टूढ बनाया और आधा किलो ऊन की एक शोल नाई। सर्दियों के दिन आए तो ससुर ने दोनों बहुओं का आपने पास बुलया और पत्तु दिखाने को कहा और छोटी बहु ने अपना पट्टूढ और शॉल दिखाया सुखुर बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि बहुत मेहनत करके यह मुझे पता है छैन काम किया है और खराब ऊन को भी साफ. करके शाल बनाई और खुश होकर उसे चंद्रहार दिया।

होम और जब बड़ी बहू को पुछा तो उसने बोल दिखाई ससुर ने कहा तो उसने बताया भाने मेहनत नाहीं ऊन से मेटे की पोटो साथ बैंक दी तब देवता प्रकट हुए और मेरी ऑंखे खोल ससुर हँस कर बोला की वो देवता जो पेड के दपा थी मैं शर्मिंद हुई और उसने फिर माफी मॉंगो तब सुर ने कहा तुझे देर से ही झुही अनल तो भाई मेहनत करके वी सुख बोता ! तब वाद तो अपनी जीदगी मे मेहनत करने लगी और सुख से रहने लगी और उसका ससुर भी उनसे खुश हुआ।

इस कहानी से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि भगवान भी मेहनत का ही फल देते हैं।

रवि शर्मा

खबलाशी नारायणै री कथा

सै कहाणी शुरू हुआँ एक बाँके ग्राऊँ जोई रा नंऊ ती चुभलू । औखे ढारा बिहा ढेह मतलब कि तराई सक साठ घौर ती। तौखे छौ हजार लोका रौहा ती । औखे लोकै लक्ष्मी नारायणै रा मन्दिर बी बनाईरा ती। औखले लोका बोह सेठ ती । तिना एतरै सेठ ती कि तिना पाणी री बजाय घीऊ संधै घरट चलाहीं ती। तीनै छतै सुनै रै बाड़ बी लाइरै ती। बोह ढऊरै हुनै री वजह न तिना लोका घमंडी बणी रै ती । एई धमण्डै री बझी न तौखे पाप एमी बद्दा लागा ती । तियाँ लोकै गौ हत्या केरणी लाई। एक ध्याड़े तेई ग्राऊं री एक बेटड़ी गाई दुहंदी चली री ती । तेबरै शुणुई तेसाबै एक हाक । सौ हाक ती एक धारै री। सो बोला पौऊँ की नी पौऊँ । एड़ा हुआ केतरै ध्याडे तका बै। एक ध्याड़े तेसै तंग हुई केरी बोलू पौड़, सौ धार पौई धोरी । तेतैरी बजह न पूरा ग्राऊं हुआ खत्म, लक्ष्मी नारायणै बोली रा बी ती कि बापी बै मारने संगै मुंह बै कोई पाप नी लागणा जैबै–जैबै धरती पंदै पाप बढ़ना तैबै – तैबै मुँह पापी रा नाश केरणा । थोड़े ध्याड़ै बाद बढ़ीहणी री एक बेटड़ी शाग चुंघदी पनारसै बै आईरी ती गोतधीकाल हुआँ ती पनारसे शाग बहु सारा। शागा चुंघदी घेरे मिला तेसाबै एक पाथर । तेसै सोचू है नेणा घौरा बै मुंह चटणी ग पीशणे बै। तैकी पाए तेसै सो शाग ता पाथर किरडे मांझे। जेढ़ी दे तेसै चढ़ाई चढ़नी शुरू केरी तेसा लागा किरडा गरका–गरका बुझदा, तेसै जो किरडे मांझे शाग पाइरा ती तेसै लाऊ सौ थोड़ा–थोड़ा केरी शटणा, जेड़े सौ बेटड़ी शरण ग्राऊएं पुज्जी तेसाबै आई री ति शोख। तेसाबै हुई रा ती अंदाजा कि सै नाथी कोई ऐडान्छे तेड़ा पाथर । तेसो बोलू अगर तू कोई देऊ री शक्ति सा ता तैबै काढ़ औखे पाणी। एतरा बोलदे ही तौखे पाणी निकलू। तेसै पाणी पीऊ तेर्दै सौ धोरा बै हौंढी। रैबै पौड़ी रा तेसा जग्धै रानऊँ नगऊणी बाई। जेढ़े सौ बढ़ीहणी ग्राऊएं पुज्जी तेड़े हुआ सौ किरडा होर गरका । तेसै डाहऊ सौ किरडा एक पाथरे रै देहुएं (सहारे) से चंम तेसै लोका कट्ठा केरै। सभी लोके आपणी खारखे रै बालै देऊ री शक्ति आला पाथर सबलाश ग्राऊंए पञ्चौ ऊं। जेड़े सौ देऊरी शक्ति आला पायर सबलाश पुंजू तेडै तेसै एक मूर्ति रा आकार लेऊ तबलाशा माहें रोहणे री बझा न पौऊ देऊ रा नऊँ सबलाशी नारायण। तेता न बाद बणांऊ तौरते खललाशी नारायणे रा मन्दिर बी। सैबै खबलाशी नारायणै रा सुनै तथा चाँदी रा बांका रथ भी बगाइरा । ज्यादा ग्रांऊ होणे रै

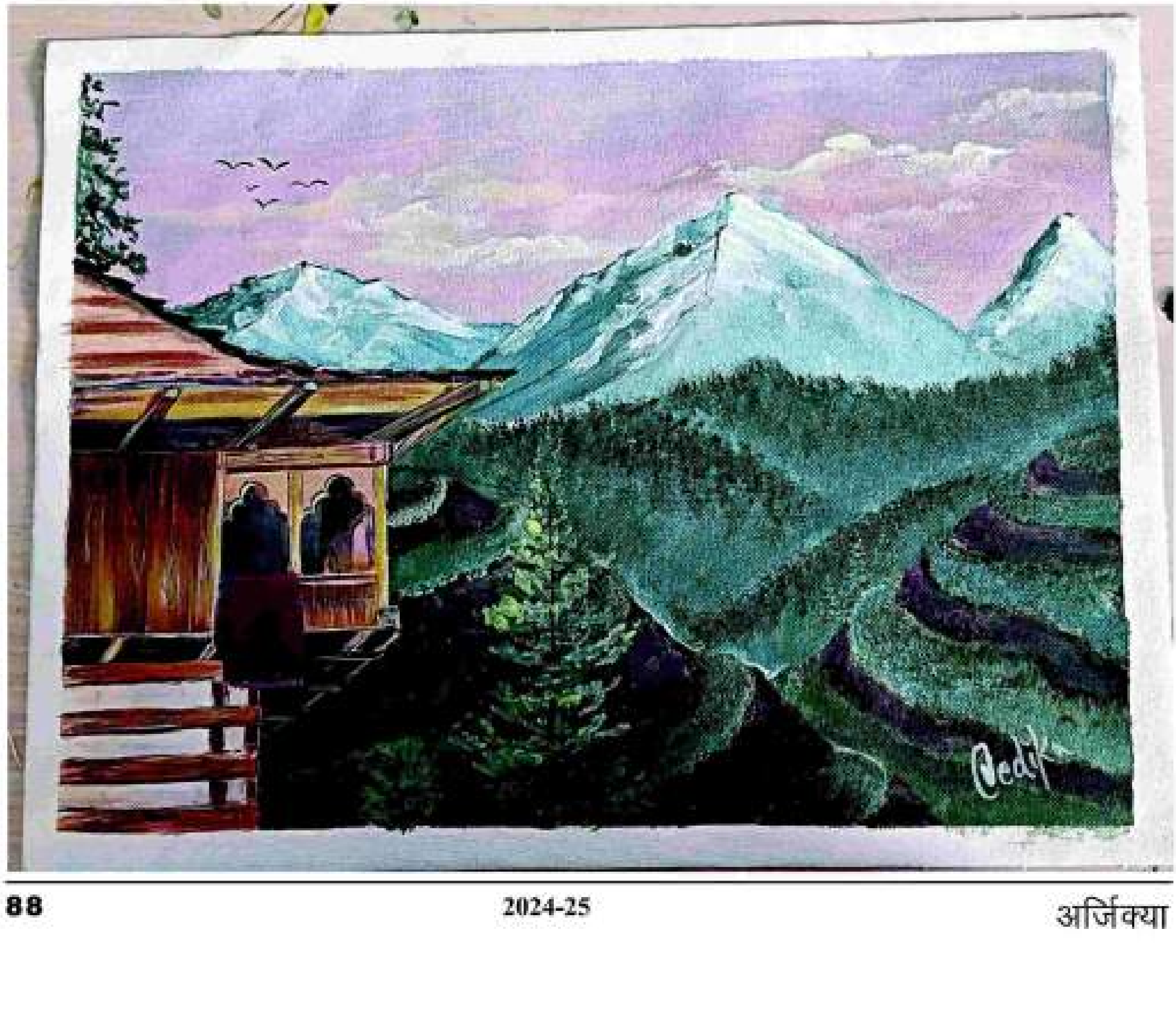

NSS ACTIVITIES

NSS ACTIVITIES

Pinky Thakur BA 3rd year
Best NSS Volunteer (Female).

Aditi Thakur BA 3rd Year
Best NSS Volunteer (Female)

Dev Krishan BA 3rd Year
Best NSS Volunteer (Male)

Nikhil Kumar BA 3rd Year
Best NSS Volunteer (Male)

NSS ACTIVITIES

HONOUR
TEACHERS DAY
SEMINAR
CAMPUS
LIFE
CAREER
INSPECTION
AWARDS
HOBBY
SPORTS

Teaching Staff

Non- Teaching Staff

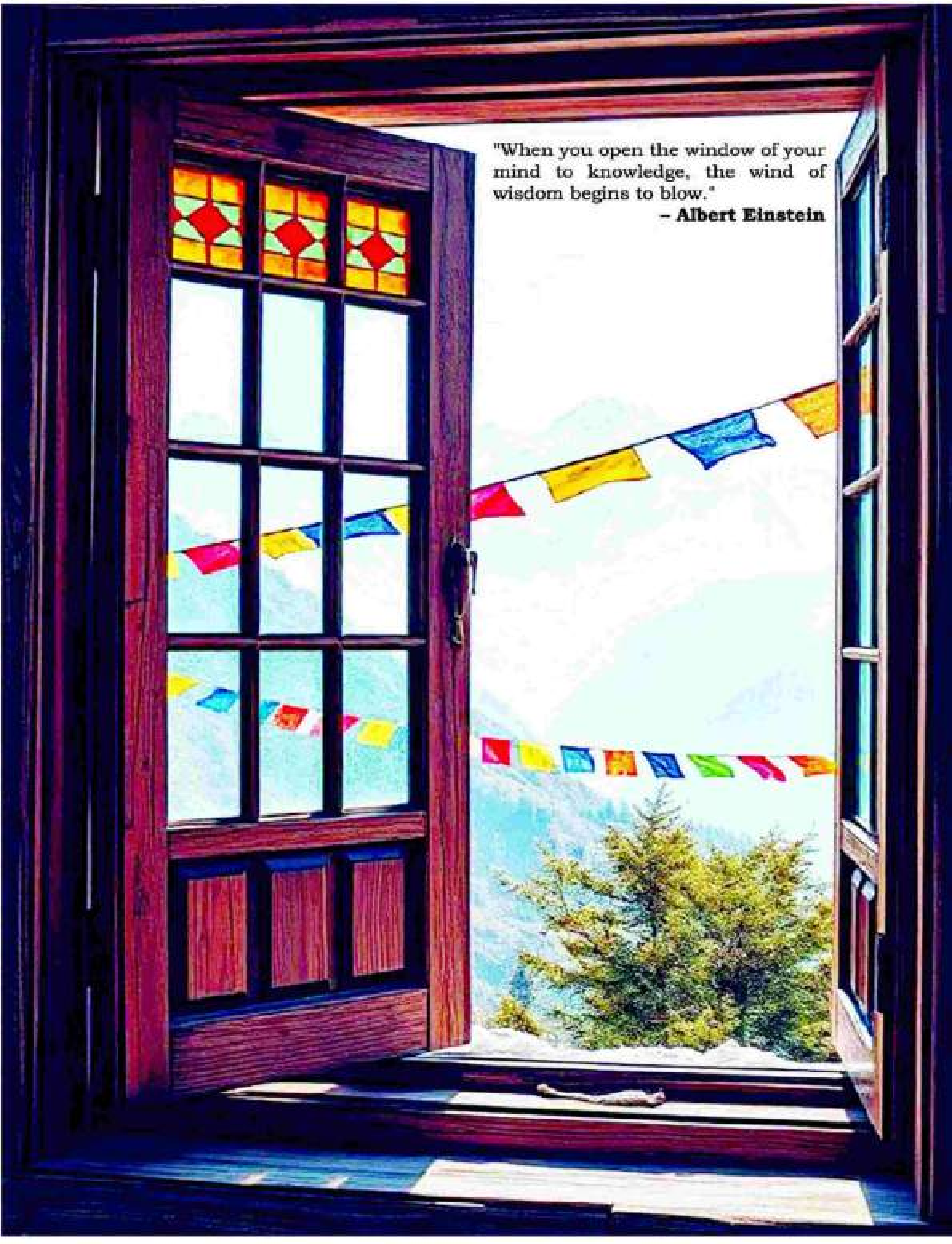
"When you open the window of your mind to knowledge, the wind of wisdom begins to blow."
– Albert Einstein